आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जुलाई, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 07 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2013 ★ आषाढ़, 2070

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्यप्रवर हीराचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

जय गुरु हीरा जय गुरु हस्ती जय गुरु मान

नीति और ईमानदारी से प्राप्त धन समाज में प्रतिष्ठा दिलाता है।
- आचार्य श्री हीरा

U TURN
अहिंसा तीर्थ अभियान
मानवीय आहार शाकाहार

बीमारियों को निमंत्रण मांसाहार से

हृदय रोग, किडनी, माइग्रेन तथा अनेकों दोष मानसिक बीमारियों के मुख्य कारणों में से एक है मनुष्य का मांसाहारी होना

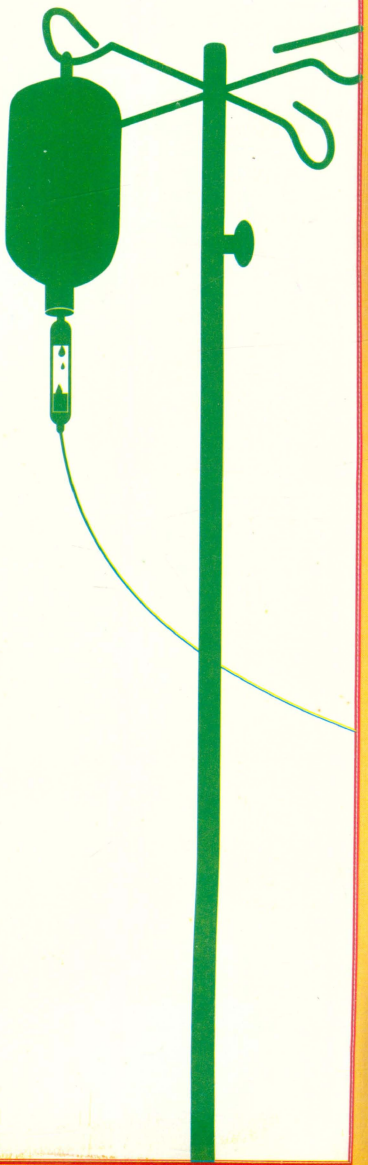

शाकाहार अपनाओ,
संसार में सुख-शांति बरसाओ
रतनलाल सी. बाफना
शाकाहार प्रचारक

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
जलगाव • औरंगाबाद • नासिक

अहिंसार्थ प्रकाशित

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। महावीराया नमः ।।
जय गुरु हस्ती
जय गुरु हीरा जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

202, Ratna Deep, Behind Panchratna, 78- J.S.S. Road, Mumbai- 400 004
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय
भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

विविच्च कम्मुणो हेउं,
कालकंखी परिव्वए।
मायं पिंडस्स पाणस्स,
कडं लद्धूण भक्खए।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.15

कर्महेतु को दूर हटा,
कर्त्तव्य-काल का ध्यान करे।
अशन-पान मात्रा में ग्रहण कर,
निर्दोष पिण्ड पा देह धरे।।

जुलाई, 2013
वीर निर्वाण संवत्, 2539
आषाढ़, 2070

वर्ष 71 अंक 7

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु. स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 1000 रु. संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु. साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-
एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	तीर्थों पर आपदा : उद्घाटित सत्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	वाग्वैभव(17)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	12
प्रवचन-	आर्त्तध्यान की परिणति कैसे रोकें? (1)	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	13
	एकता से संघ-समाज को समृद्ध बनाएँ	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	18
	आत्मदर्शन के लिए करें पुरुषार्थ	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	24
	पुद्गल से आसक्ति तोड़ें, जीवरक्षा का भाव साधें	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	26
दीक्षा-अर्द्धशती-	आगमादर्श मेरे आराध्य देव!	-महासती यशप्रभा जी म.सा.	33
	आगमचक्षु संघनायक	-महासती पद्मप्रभा जी म.सा.	38
अंग्रेजी स्तम्भ-	Concept of Śrutajñāna	-Dr Dharmchand Jain	42
शोधालेख -	पंच समवाय सिद्धान्त : एक समीक्षा	-डॉ. श्वेता जैन	52
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (81)	-श्री धर्मचन्द जैन	59
युवा-स्तम्भ -	आन्तरिक व्यक्तित्व हो संस्कारित	-श्री पदमचन्द गाँधी	63
प्रासङ्गिक -	चातुर्मास के बजट बढ़ते न चले जाएँ	-श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरड़िया	73
	चातुर्मास में पालनीय नियम	-श्री कृष्णमोहन जैन	74
	प्राकृत का अध्ययन विद्यालयों से हो प्रारम्भ	-श्री जितेन्द्र डागा	124
	प्राकृत भाषा के शिक्षकों की हो नियुक्ति	-डॉ. सुषमा सिंघवी	125
	मांस-निर्यात नीति का करें विरोध	-श्री पी.शिखरमल सुराणा	126
नारी-स्तम्भ -	कैसे हो नारी सुरक्षित?	-श्री पारसमल चण्डालिया	76
स्वास्थ्य-विज्ञान -	बिना दवा मधुमेह का प्रभावशाली उपचार	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	80
बाल-स्तम्भ -	धन, प्रेम और सफलता	-श्री अनन्त जैन	88
कविता/गीत-	अनेकान्त	-डॉ. दिलीप धींग	17
	परिवर्तन	-श्री निर्मलकुमार जामड़	25
	अज्ञानहारी ये अनमोल वाणी	-श्री अशोक कवाड़	62
	राग तजो, संताप मिटेगा	-श्री मनोज कुमार जैन	68
	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा	87
	आओ सब मिल करें वन्दन	-श्रीमती चेतना बोथरा	92
	सीखें गुरु हीरा से	-सुश्री खुशबू पटवा	93
	यह कैसा दीवानापन है, मोबाइल के साथ में	-श्री मोहन कोठारी	94
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता परिणाम (32)	-संकलित	95
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (39)	-संकलित	97
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	90
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	99
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	127

सम्पादकीय

तीर्थों पर आपदा : उद्घाटित सत्य

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

उत्तराखण्ड की देवभूमि में 16 जून, 2013 को बादलों के फटने से जो कहर बरपा उससे सम्पूर्ण देश कांप गया। केदारनाथ, बदरीनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री, जोशीमठ, गौरीकुण्ड आदि तीर्थस्थलों में पानी के अचानक तेज बहाव एवं पर्वतीय चट्टानों के स्खलन के कारण 10 हजार से अधिक लोग काल कवलित हो गए। सैकड़ों छोटे-छोटे गाँव , धर्मशालाएँ एवं होटल बह गए। सड़क सम्पर्क टूट गए। जो जहाँ था, वह वहाँ अटक गया। हजारों की संख्या में फंसे यात्रियों को सेना की मदद से निकाला जा रहा है। हेलिकाप्टरों की निरन्तर उड़ान जारी है।

उत्तराखण्ड में आयी इस आपदा से जीवन के अनेक सत्य उद्घाटित होते हैं। एक तो यह कि जीवन का कोई भरोसा नहीं है। कोई कभी भी जीवन से हाथ धो बैठ सकता है। किसने सोचा था कि देवभूमि के पवित्र तीर्थस्थानों पर जाकर वे अपने गाँव-नगर नहीं लौटेंगे। परिवारजनों की आशाओं, आकांक्षाओं को पूरी नहीं कर सकेंगे। कोई कहते हैं कि जिसकी जहाँ मौत आनी होती है वहाँ व्यक्ति अपने आप पहुँच जाता है, मौत उसे वहाँ खींच ले जाती है। किन्तु ऐसा मानना उचित नहीं है, क्योंकि उनकी मौत आनी थी, इसलिए बादल फटे हों एवं भूस्खलन हुआ हो, यह समझना हमारे मन को सन्तोष तो दे सकता है, किन्तु यह सच्चाई नहीं है। बादल अपने कारणों से फटे हैं, चट्टानें अपने कारणों से गिरी हैं एवं प्राकृतिक परिस्थितियाँ इस प्रकार की थीं, कि बचना मुश्किल हो गया। जो सम्भल गए, वे बच गए, नहीं सम्भल पाए वे चले गए। इसलिए यह सच है कि जीवन अनित्य है। कब तक हम इस शरीर के साथ रहेंगे, कहा नहीं जा सकता। आगमवाणी भी हमें बार-बार यही समझाती है- **अणिच्चं इमं सरीरं।** जब शरीर ही अनित्य है तो उसके साथ ममत्व क्यों? उसका अभिमान क्यों? उसके कारण जुड़ी धन-सम्पदा के प्रति आसक्ति क्यों? भाई-बन्धुओं में लड़ाई क्यों? समाज में मनमुटाव क्यों? अनित्य जीवन में इतना हठाग्रह क्यों? जीवन को आनन्द से एवं बिना किसी तनाव के क्यों न जीएं? यह भी सच है कि मौत अपने निर्धारित आयुष्य से पूर्व भी आ सकती है, यह जैनदर्शन का सोपक्रम-आयु का सिद्धान्त है, जिसे अपवर्त्य आयु भी कहते हैं, दूसरे शब्दों में इसे अकालमरण भी कहा जाता है। ज़हर खाने, फांसी का फंदा डालने, नस काटने आदि कारणों की तरह प्राकृतिक

आपदाओं से भी ऐसी मृत्यु हो जाती है। व्यक्ति की मौत स्वाभाविक आयुष्य पूर्ण करने से हो अथवा अन्य कारणों से, किन्तु यह सच है कि जीवन का कोई भरोसा नहीं है। दूसरे दिन या दूसरे क्षण की भी भविष्यवाणी करना कठिन है। जीवन की इस अनित्यता को स्वीकार करके चलें तो बहुत सी बुराइयों से बच सकते हैं।

एक सत्य इस घटना से यह उद्घाटित होता है कि कोई किसी का शरणदाता या त्राता नहीं है। सब तीर्थयात्री श्रद्धा के वशीभूत होकर भगवान् के दर्शनों के लिए गये थे। वे तो इस परिस्थिति में भक्तों की रक्षा कर सकते थे, किन्तु नहीं कर सके। यही नहीं, स्वयं शिव की प्रतिमा पानी में बहकर चली गई। इसलिए किसी देवी-देवता को हमारा त्राता मानना खण्डित होता है। फिर भी भारत में श्रद्धा का रूप अमिट है और रहेगा।

तीर्थस्थलों पर जो कुछ यात्री बच गए, उसमें उनके पूर्व पुण्य एवं वर्तमान प्रयत्न कारगर सिद्ध हुए। मृत्यु से बचे हुए लोगों में से कुछ भूख से मर गए होंगें, किन्तु जिन्हें सेना के हेलिकाप्टरों द्वारा भोजन उपलब्ध करा दिया गया, वे बच गए। कहते हैं कि ऐसी परिस्थिति में पूर्वकृत पुण्य ही काम आते हैं। जो पुण्य भावों में मृत्यु को प्राप्त हो गए, वे सद्गति को पायेंगे तथा जो मृत्यु से बच गए, उन्हें इस जीवन को नया जीवन समझकर बुराई से बचते हुए इसका सदुपयोग करना चाहिए। जीवन से बचें या न बचें, किन्तु बुराई से बचना अपने हाथ में है। यह सोचकर जो सदैव बुराई से बचता रहेगा वह पुण्य का संचय भी कर सकता है, एवं जीवन को भी सार्थक बना सकता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति के संचित पुण्य ही उसके रक्षक या त्राता हैं, दूसरा तो उसमें सहायक निमित्त बनता है।

इस घटना से एक सत्य यह ज्ञात होता है कि हम भले ही सब साथ रह रहे हों, किन्तु जन्म-मरण सबका अपना है। स्वयं के कर्मों का फल स्वयं को भोगना होता है। जैनदर्शन में जो एकत्व-भावना का प्रतिपादन किया गया है, उसकी इस घटना से पुष्टि होती है। संसार के मेले में हम सब मिलते हैं, एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं, किसी के प्रति राग उत्पन्न होता है तो किसी के प्रति द्वेष। उसका कारण हमारा स्वार्थ है। जिससे स्वार्थ पूरा होता है, उसके प्रति राग उत्पन्न होता है तथा जिससे स्वार्थ बाधित होता है, उससे द्वेष उत्पन्न होता है।

यह घटना लोगों के मनोविज्ञान को भी प्रतिबिम्बित करती है। सम्प्रति तीर्थस्थलों पर जाने का क्रम बढ़ रहा है। कोई आस्था या श्रद्धा से जाता है तो कोई पर्यटन के बहाने पहुँचता है। अब पर्यटन की प्रवृत्ति बढ़ रही है। आदमी एक स्थान पर रहता हुआ थक जाता है, अतः वह प्राकृतिक स्थलों पर भ्रमण का मन बनाता है। कभी उसे अनेक समस्याएँ आ घेरती हैं, अतः वह उनका समाधान तीर्थयात्राओं में खोजता है। मनौती मनाता है एवं आशा

रखता है कि उसकी समस्या का समाधान हो जाएगा। श्रद्धा का मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है, उससे व्यक्ति कुछ काल तक धैर्य धारण कर लेता है। कदाचित् किसी भी कारण से समस्या का समाधान हो भी जाता है तो श्रेय उस तीर्थ के देवता को दिया जाता है। पर्यटन का एक कारण यह भी है कि व्यक्ति अब धन की दृष्टि से स्वयं को समर्थ पाता है, अतः तीर्थों पर घूमने की योजनाएँ बनाता है। उत्तराखण्ड की सरकार देवभूमि के तीर्थ स्थलों पर आने वाले यात्रियों को पर्यटन-उद्योग का स्रोत मानती है। इससे करोड़ों रुपयों की आय होती है। सरकार को इन क्षेत्रों की देखभाल का दायित्व जिस ढंग से निभाना चाहिए, वह नहीं निभाया जा रहा है। विशेषज्ञों का कथन है उत्तराखण्ड में अधिकाधिक बाँधों का निर्माण किया जाने से एवं उससे पहाड़ों की नींव के हिलने से इस प्रकार के हादसे होते हैं। पर्यावरण रक्षक सुन्दरलाल बहुगुणा आदि इस विचारधारा वाले हैं। वहीं उत्तराखण्ड सरकार बांधों के निर्माण की पैरवी कर रही है। विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि उत्तराखण्ड के इन तीर्थ स्थानों का दो वर्षों में पुनः कायाकल्प हो सकता है। नई तकनीकी के साथ ऐसा निर्माण सम्भव है कि वह इस प्रकार की आपदाओं में भी नष्ट न हो।

विनाश कुछ पलों में हो जाता है, किन्तु निर्माण में वर्षों का श्रम लगता है, यह भी जीवन का सत्य है। उत्तराखण्ड की यह त्रासदी इसका निदर्शन है। हमारे जीवन में ऐसी घटनाएँ घटित होती रहती हैं। इसलिए निर्माण के साथ यह भी सजगता आवश्यक है कि विनाश का कोई कारण हम तो उत्पन्न नहीं कर रहे। हमारी लापरवाही कहीं विनाश का कारण न बने, इसका ध्यान रखना अपेक्षित है।

जो वस्तुएँ हमारे जीवन का आधार होती हैं, वे ही अनियन्त्रित होने पर विनाश का कारण बन जाती हैं। जल हमारे जीवन का आधार है, वायु हमारे जीवन की आधार है, किन्तु ये जब अनियन्त्रित प्रवाह में हों तो तबाही के कारण बन जाते हैं। पर्वतीय स्थलों पर तीव्र वर्षा के कारण भूस्खलन प्रायः होता रहता है, किन्तु जहाँ यह सम्भावना हो वहाँ पर्वतीय चट्टानों को आधुनिक तकनीकी उपायों से कुछ अंशों में सुरक्षित किया जा सकता है।

संसार में ऐसे भी मानव हैं जो करुणा, दया एवं मानवीय संवेदनाओं से शून्य हैं। उत्तराखण्ड की इस त्रासदी के पश्चात् जब लोगों के पास खाने-पीने की सामग्री नहीं थी, तो उस क्षेत्र के निवासियों ने दस रुपये के बिस्किट के सौ एवं दो सौ रुपये लेना प्रारम्भ कर दिया। यह हृदय शून्यता उन लोगों में पायी जाती है जो दूसरों की विवशता का अनुचित लाभ उठाना चाहते हैं। चिकित्सा, यात्रा आदि उद्योगों में भी इस प्रकार की प्रवृत्ति देखी जाती है। मानव को जब दूसरों का दुःखदर्द अपने स्वार्थ-पोषण का ज़रिया नज़र आता है

तो यह हृदय शून्यता नहीं तो और क्या है! यही नहीं लोगों ने शवों के वस्त्रों से रुपये-पैसे तथा अंगों से आभूषण निकाल लिए। उनकी दृष्टि इसी पर रही कि इन्हें एकत्रित कर वे धन-संग्रह कर लेंगे। एक संन्यासी भी ऐसा देखा गया, जिसने आपदाग्रस्त लोगों की जेबों से रुपये एकत्रित कर बोरे में भर लिए। कुछ बंधुओं ने अंगूठी सहित शवों की अंगुलियाँ काट ली एवं कूकर में भर लीं। गिद्ध की दृष्टि जिस प्रकार अपने शिकार/भोजन पर रहती है, कई मानवों में भी उसी प्रकार की प्रवृत्ति देखी जाती है।

इस त्रासदी के जो साक्षी रहे हैं, उनके अनुभव जगत् की सच्चाई बयां करते हैं। बचाव के समय लोग परिवारजनों को भूल गए। उनका शव देखा तो शोक विह्वल हुए, किन्तु विवशता के कारण शवों को वहाँ ही छोड़कर चल दिए। कितना कठोर होना पड़ा उन्हें। साधारणतः शवों का निस्तारण करना परिवारजन अपना कर्त्तव्य मानते हैं, विमानों के माध्यम से शव एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाए जाते हैं, किन्तु यहाँ ऐसा न हो सका। भारतीय परम्परा टूटती नज़र आई। अब सेना के जवान दुर्गन्ध मार रहे शवों को ढोकर सामूहिक दाह-संस्कार कर रहे हैं। यदि उनका दाह संस्कार न किया जाए तो उत्तराखण्ड के क्षेत्र में महामारी फैल सकती है।

कहते हैं कि 'मन चंगा तो कठौती में गंगा''। यदि हमारा हृदय पवित्र है तो तीर्थस्थानों पर जाने की आवश्यकता नहीं। तब वहाँ गए बिना भी अपने स्थान पर रहकर अपना आध्यात्मिक विकास किया जा सकता है। जैन समाज के लोग भी तीर्थ स्थानों की यात्रा करते रहते हैं। सब जगह एक ही बात है। कोई तीर्थ स्थान पूर्णतः सुरक्षित नहीं है। तीर्थस्थानों पर भी ठगने एवं लूटने वाले खूब मिलते हैं जो लोगों की श्रद्धा एवं आस्था का बेजा लाभ उठाते हैं। स्वयं के भावों की जब तक शुद्धि न हो तब तक बाह्य कोई तीर्थ तिरा नहीं सकता। कई तीर्थों पर तो मदिरा, जुआ, व्यभिचार आदि के दोष व्याप्त हैं। इसलिए जैनधर्म में तीर्थंकरों ने चार तीर्थ कहे हैं- साधु, साध्वी, श्रावक एवं श्राविका। ये ही चारों धाम हैं। इनमें से किसी भी एक धाम अथवा दो धामों की जो शुद्ध मन से यात्रा कर लेता है, वह तिरने योग्य हो जाता है। उसका मन भी चंगा होता है एवं प्रज्ञा भी जागृत रहती है। बाहर के तीर्थ सुरक्षित नहीं हैं। वहाँ धोखा है, ठगी है एवं जीवन की असुरक्षा है, इसलिए अपने भीतर के श्रावकत्व एवं साधुत्व को जगाने की आवश्यकता है। बाहर के तीर्थ आज आय के स्रोत समझे जा रहे हैं और पण्डे-पुजारी हों या साधु-संत, लोगों की आस्था को भुनाने में लगे रहते हैं। कहीं सम्पत्ति के स्वामित्व को लेकर झगड़े होते रहते हैं। भीतर से जिसको निर्मल होना है वह इन बाह्य तीर्थों के चक्कर में न पड़कर स्वयं तीर्थ बन जाता है। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे।- आचारांग सूत्र, 1.3.2, सूत्र 118

अर्थ-यह पुरुष अनेक चित्त वाला है।

विवेचनः- यहाँ पुरुष से तात्पर्य जीव से है। जीवों में भी संसारी जीव से अभिप्राय है। मनुष्यादि संसारी जीवों के अनेक चित्त होते हैं। अनेक चित्त होने का तात्पर्य चित्त की विभिन्न अवस्थाओं से है। मनुष्य की चित्त की दशा सदा एक जैसी नहीं रहती। उसमें सदैव परिवर्तन होता रहता है। आज की भाषा में कहें तो उसका मूड बदलता रहता है। कभी वह रागग्रस्त होता है तो कभी द्वेषग्रस्त। कभी अहंकार युक्त होता है तो कभी लोभग्रस्त। कभी किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के बारे में चिन्तन करने लगता है तो कभी किसी अन्य के विषय में। कभी एक की कामना करता है तो कभी दूसरे की। वह संकल्प-विकल्पों में जीता है। उसके जीवन का कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं होता। वह अनेक बार संदेह में जीता है। वह कभी भोगों में सुख समझता है तो कभी उनके त्याग में। कभी वैराग्य अच्छा लगता है तो कभी रागमय जीवन। कभी ईमानदारी उचित लगती है तो कभी लोभ के कारण बेईमानी। कभी पत्नी प्रिय लगती है तो कभी उस पर भयंकर क्रोध आता है। जब व्यक्ति प्रेम विवाह करता है तब पत्नी अत्यन्त प्रिय होती है तथा जब किसी कारण से कलह उत्पन्न होता है तो अप्रिय लगने लगती है। यही नहीं उससे तलाक लेने को उतारू हो जाता है। चित्त की दशा एक-सी नहीं रहती। जब संतों के प्रवचन सुनता है तो भावों की विशुद्धि का अनुभव करता है तथा प्राप्त ज्ञान को आचरण में लाने का मन बनाता है, किन्तु घर-दुकान पर पहुँचते ही भाव बदल जाते हैं। झूठ-साँच, नीति-अनीति में भेद करना भूल जाता है। कभी संसार खारा लगता है तो कभी बड़ा प्यारा लगने लगता है। इसीलिए आचारांग कहता है- यह जीव अनेक चित्त वाला है। जब तक व्यक्ति सत्य को जानकर उस पर दृढ़ विश्वास नहीं रखता तथा उस पर चलने के लिए तत्पर नहीं होता, तब तक वह डांवाडोल ही रहता है। सत्य का ज्ञान न होना मिथ्यात्व की दशा है। उसमें तो व्यक्ति नाना चित्त वाला होता ही है, क्योंकि वह कभी किसमें सुख मानता है तो कभी किसमें। वह स्थिर चित्त वाला नहीं होता। यदि कोई सत्य को जान ले, किन्तु उसका आचरण नहीं करे तो इसका भी तात्पर्य है कि वह डांवाडोल चित्त वाला है। वह अभी सत्य के आचरण को अपने हित-सुख में साधक नहीं बाधक समझता है। वह पूर्णतः आश्वस्त नहीं है कि उसे पापकारी प्रवृत्तियों का त्याग करना चाहिए। जब तक जीव पूर्ण वीतरागता को प्राप्त नहीं होता तब तक अनेक चित्त वाला ही बना रहता है। चित्त की इन बदलती अवस्थाओं को समता में रहकर ही जीवन जीता जा सकता है एवं परस्पर विरोधी विचारों एवं जीवन की विसंगतियों से दूर रहा जा सकता है।-**सम्पादक**

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (17)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

- अपने उपकारियों को पीड़ा देने वालों के तप-त्याग, शिक्षा-दीक्षा व्यर्थ है।
- अपने आपको विकारों से अलग करना स्वानुशासन है, आत्मा का विनय है।
- दुःखों का एकमात्र कारण अपने आप पर नियंत्रण नहीं रखना है।
- प्रदर्शन और बाह्याडम्बर समाप्त होने चाहिए।
- पुण्यार्जित ऋद्धि-सिद्धि का उपयोग समाजोत्थान में किया जाना चाहिये।
- मेरा जीवन ऐसा हो कि जिससे समाज के लिए समस्या पैदा न हो।
- अर्जन नीतिपूर्ण हो और विसर्जन परहित में हो।
- अपनी झूठी प्रतिष्ठा और नामवरी के लिए व्यक्ति समाज को रसातल की ओर धकेल देता है।
- राजनीति में ऐसे व्यक्तियों को मत चुनिये, जो कत्लखानों और मदिरालयों का समर्थन करें।
- अहंकार व्यक्ति और समाज के लिए विष है, शत्रु है।
- अपने अहं के पोषण की जगह समाज के पोषण में लग जाइये।
- बच्चों को सत्य, अहिंसा, करुणा, शील और सदाचार के संस्कारों से जोड़ा जाना चाहिये।
- संस्कृति की रक्षा त्याग, करुणा एवं प्रेम से होगी।
- अपने आपको बीज की तरह मिट्टी में मिल जाने दीजिये, फिर देखिये परिणाम- एक सुखद भविष्य, एक समृद्ध समाज।
- प्रतिकूलता में भी आज्ञा की आराधना की जाए तभी विनय में निखार आता है, पात्रता आती है, व्यक्तित्व प्रशंसनीय बनता है।
- आत्मचिन्तन कर आत्मधर्म का लक्ष्य बना लीजिये।
- अपने में खेद नहीं करते हुए, दूसरों में दोष नहीं निकालते हुए समभावपूर्वक की गई साधना से आत्मकल्याण होता है।

-हीरा प्रवचन-पीयूष से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

आर्त्तध्यान की परिणति कैसे रोकें? (1)

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

वीतरागवाणी में हमारी समस्त क्रियाओं के तीन रूप बताये गये हैं- अशुभ परिणति, शुभ परिणति और शुद्ध परिणति। इन्हें व्यावहारिक भाषा में क्रमशः कुकर्म, सुकर्म एवं अकर्म कह सकते हैं। पाप-आत्मा की अशुभ परिणति है, उससे अशुभ कर्मों का बंध होता है, तथा उसका फल दुःख है, अतः पाप को 'कुकर्म' कहा जाता है। वह सर्वथा हेय है। पुण्य-सुकर्म है, वह आत्मा का शुभ परिणाम है। (सुह परिणामो पुण्णं, असुहो पावंत्ति हवदि जस्स।-पंचास्तिकाय, 132) इससे जीव शुभ कर्मों का बंध करता है और सांसारिक सुखों की भी प्राप्ति होती है तथा आत्म-कल्याण के योग्य साधन-सामग्री की भी, अतः वह एक स्थिति तक उपादेय है, उसके आगे हेय है।

साधन साध्य नहीं है

यहाँ मैं आपको जैन दर्शन की कुछ गहराई में ले जाऊँगा, क्योंकि तत्त्व की बात ऊपरी तौर पर नहीं समझाई जा सकती। गहरे पैठे बिना तत्त्व हाथ नहीं लगता, इसलिए कुछ गंभीरता से आप सुनेंगे, तो बात आपको समझ में आ जायेगी।

पाप को हेय मानने में कोई दो मत नहीं हैं। सभी कहते हैं- पाप हेय है, त्याज्य है। किन्तु पुण्य को 'हेय' कहना या उपादेय, इसमें चिन्तन की गहराई है। जैन दर्शन कहता है, पुण्य सर्वथा हेय या एकान्त उपादेय नहीं है, वह एक निश्चित सीमा तक ही उपादेय है, उसके बाद वह 'हेय' भी हो जाता है। क्योंकि पुण्य भी पाप की तरह आस्रव है, कर्म आने का द्वार है और मोक्ष में जाने के लिए इस द्वार का भी निरोध करना होता है। इस बात को एक दो उदाहरण से और भी स्पष्ट कर देता हूँ।

समुद्र से यात्रा करने वाला यात्री घर से समुद्र तट तक, बंदरगाह तक गाड़ी में बैठकर जाता है, वह गाड़ी यात्री को तट तक पहुँचाने में सहायक होती है, पर समुद्र में जिस जहाज से यात्रा करनी है, उसमें कब बैठा जायेगा? जब गाड़ी को छोड़कर आगे बढ़ेंगे। जहाज में बैठने के लिए गाड़ी को छोड़ना पड़ता है, अतः तट तक पहुँचने के लिए गाड़ी उपादेय हुई और उसके आगे हेय हो गई।

समुद्र में बैठकर यात्रा करने पर जब अगली मंजिल आ जाती है, तब जहाज को भी छोड़ना पड़ता है। जहाज के त्याग के बिना दूसरे तट पर उतर नहीं सकते और अपने गन्तव्य

पहुँच नहीं सकते। एक किनारे से दूसरे किनारे तक पहुँचने में जो जहाज उपादेय बना था, किनारा आने के बाद वही 'हेय' बन गया।

यदि कोई यह माने कि आखिर तो गाड़ी को भी छोड़ना पड़ेगा और जहाज को भी छोड़ना पड़ेगा, तो हम इसका उपयोग ही क्यों करें? अथवा पहले ही क्यों न छोड़ दें? बीच ही में उतर जायें तो? तो परिणाम क्या होगा? बीच भंवर में लटक जायेंगे। आप अपनी यात्रा तय नहीं कर सकेंगे। अथवा कोई यह सोचे कि जहाज मैं बैठ गये सो बैठ गये, अब इसे नहीं छोड़ेंगे, तब? समुद्र में ही भटकते रहोगे, गन्तव्य तो नहीं पहुँच सकेंगे। इसका अर्थ यह है कि यात्रा करके सकुशल अपने गन्तव्य तक पहुँचने के लिए गाड़ी का और जहाज का उपयोग भी जरूरी है, और त्याग भी जरूरी है।

दूसरा उदाहरण है- महल में पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनाई जाती हैं। सीढ़ी पर चढ़ते-चढ़ते आप महल के द्वार तक पहुँच गये। अब महल के भीतर प्रवेश कब होगा? जब सीढ़ी को छोड़कर महल के भीतर कदम रखेंगे। सीढ़ी की उपादेयता इतनी ही है कि वह महल तक पहुँचाने में सहायक बनती है, उसके बाद वह 'हेय' है। पुण्य के सम्बन्ध में भी यही बात है।

मोक्ष प्राप्त करना प्रत्येक जीव का लक्ष्य है। वह आत्मा का स्वरूपाधिष्ठान है, अर्थात् आत्मा का अपना घर है मोक्ष। मोक्ष तक पहुँचने के लिए पुण्य रूप गाड़ी, जहाज और सीढ़ी का सहारा लेना पड़ता है, और आखिर में पुण्य भी छूट जाता है। जैन दर्शन की यह धारणा आपको आश्चर्यकारी लग सकती है कि पुण्य के बिना भी मोक्ष नहीं मिल सकता और पुण्य-कर्म का क्षय हुए बिना भी नहीं मिल सकता। मैं आपसे पूछूँ- ''मोक्ष पापी को मिलता है या पुण्यवान को?'' आप कहते हैं- 'पुण्यवान को'। मोक्ष कब मिलता है? कहा जाता है- पुण्य-पाप का क्षय होने पर, 'पुण्यपापक्षयो मोक्षः।' तो यह क्या पहेली हुई? इसे सुलझाने के लिए कर्म-सिद्धान्त को समझना होगा।

मोक्ष प्राप्त करने के लिए कैसी भूमिका चाहिए, कौन मोक्ष प्राप्त कर सकता है? इस सम्बन्ध में बताया गया है- त्रस पर्याय, पंचेन्द्रिय जाति, मनुष्य गति और वज्र-ऋषभ नाराच संहनन आदि सामग्री से युक्त आत्मा मोक्ष प्राप्त कर सकती है, मोक्ष प्राप्त करने में ये सब बातें अपेक्षित हैं। इस प्रकार की पूर्व भूमिका बने बिना आत्मा मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकती। और यह सब सामग्री पुण्य के उदय से प्राप्त होती है। हाँ, यह तथ्य भी नहीं भूलना चाहिए कि जब तक पंचेन्द्रिय जाति, मनुष्य गति आदि कर्मों का उदय रहता है तब तक भी मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। आखिर में इन सब के छूटने पर ही मोक्ष गति प्राप्त होती है।

हमारी मोक्ष-यात्रा में पुण्य एक साधन है, साध्य नहीं है। कोई भी विवेकशील मुमुक्षु

केवल पुण्योपार्जन के लिए साधना नहीं करता। चक्रवर्ती की ऋद्धि या इन्द्र की विभूति प्राप्त करना उसकी साधना का लक्ष्य नहीं होता। क्योंकि यह तो सब बंधन है। आप सामायिक करते हैं, किसलिए? कोई आपसे कहे- "तुम अपनी एक सामायिक मुझे दे दो, और बदले में हजार-पाँच सौ रुपये ले लो।" तो क्या आपके मन में यह भावना नहीं आयेगी कि चलो, क्या है एक सामायिक का हजार रुपया मिल रहा है, ले लो। सामायिक और कर लेंगे। शायद ऐसे भी लोग मिल जायेंगे जो हजार में तो क्या, पाँच-दस रुपये में भी सामायिक बेचने को तैयार हो जायें। इतिहास में ऐसे भी लोग हो गए हैं, जिन्होंने पूरे मगध साम्राज्य के मोल में भी एक सामायिक नहीं बेची। क्योंकि सामायिक का मूल्य भौतिक वस्तु से आंका ही नहीं जा सकता। उसका तो अनन्त मूल्य है। एक घड़ी की शुद्ध सामायिक के मूल्य में चक्रवर्ती की समस्त ऋद्धि भी तुच्छ होती है। तो फिर बताइए ऐसा मूर्ख साधक कौन होगा जो अपनी दीर्घकाल की साधना को काम-भोग की प्राप्ति के लिए दाँव पर लगा दे। शास्त्र में बताया है- धर्म-साधना का एक मात्र लक्ष्य है- "आत्मस्वरूप की उपलब्धि।" भगवती सूत्र का वचन है- **"आया णे अज्जो! सामाइयस्स अट्ठे।"** "हे आर्यों! आत्मा ही, अर्थात् आत्मस्वरूप की उपलब्धि करना ही हमारी सामायिक का अर्थ है।"

ऊर्ध्वगमन या अधोगमन

साधक की दृष्टि हमेशा आत्मा की ओर रहनी चाहिए। यद्यपि शुद्ध उपयोग में चलते-चलते उससे च्युत होकर शुभ उपयोग में भी आत्मा आ जाता है। संवर-निर्जरा रूप क्रिया वीतराग भाव है, किंतु कभी-कभी जब देव, गुरु, शिष्य, शासन, संघ आदि के प्रति भक्ति, प्रेम, वात्सल्य आदि के रूप में जो अनुराग उमड़ता है, उससे पुण्य का बंध होता है और उससे स्वर्ग, सुख, समृद्धि, इन्द्रिय-परिपूर्णता आदि की प्राप्ति होती है।

एक बार तुंगिया नगरी के श्रावकों ने भगवान पार्श्वनाथ के स्थविरों से पूछा- "संजमेणं भंते! किं फले? तवेणं भंते! किं फले"- भगवन्! संयम और तप का फल क्या है?

स्थविरों ने कहा- "आयुष्मन्! संयम का फल है- आस्रव रहित होना और तप का फल है- कर्म का नाश।"

इस उत्तर के बाद श्रावकों ने फिर पूछा- "जब संयम का फल अनास्रव है, तो संयम से देवलोक की प्राप्ति होती है, इसका क्या अभिप्राय है?"

स्थविरों ने जो उत्तर दिया, उसका सारांश यह है कि सराग अवस्था में जो संयम का आचरण किया जाता है, उस राग भाव के कारण जीव मोक्ष के बदले देवत्व को प्राप्त होता है। संयम-तप रूप धर्म का फल कर्मक्षय एवं मोक्ष है, किन्तु उस धर्म की साधना में जब

शुभ राग की परिणति आ जाती है, तो उससे पुण्य बंध होता है और उसके कारण ऋद्धि, विभूति आदि की उपलब्धि होती है। यद्यपि साधक का लक्ष्य ऊर्ध्वगमन का रहता है, ऊपर चढ़ने का ही रहता है, किंतु बीच-बीच में अवरोध आ जाने से वह मार्ग में ही अटक जाता है। इस मोक्ष यात्रा के बीच में स्वर्ग एवं मनुष्य गति का पड़ाव करने लगता है। कुछ साधक ऐसे भी होते हैं जो ऊर्ध्वगमन करते-करते रुक जाते हैं और अधोगमन करने लग जाते हैं। वे साधना मार्ग से च्युत हो जाते हैं, कभी-कभी बाह्यरूप में कोई परिवर्तन नहीं आने पर आन्तरिक रूप में आमूलचूल परिवर्तन आ जाता है। ऊपर की ओर जाने वाला नीचे गिरने लग जाता है, और देखने वालों को कुछ पता ही नहीं चलता।

कल्पना करिए, अभी आप सामायिक में बैठे हैं, एकाग्र भाव से शास्त्र-श्रवण कर रहे हैं। शुभ भावना भा रहे हैं। धर्म ध्यान में लीन हो रहे हैं। अचानक आपके मन में क्रोध या मोह का उदय हो गया । आपकी चिन्तन धारा बदल गई। धर्मध्यान से गिर कर आर्तध्यान में आ गए। मन में तरह-तरह के संकल्प-विकल्प उठने लगे, विषयों का चिन्तन करते-करते भावना से उनका सेवन भी करने लग गये, तो आपके बाह्यरूप में तो कोई अंतर नहीं आया। वहीं आसन पर बैठे हैं, हाथ जोड़ रखे हैं, मुँह पर मुखवस्त्रिका लगी है, किंतु आन्तरिक जगत् बदल गया। आपका शरीर स्थानक में बैठा है और मन? बाजार में, दुकान में या कहीं गलियों में भटक रहा है। तो यह मन की दुनियाँ को बदलने वाली क्या चीज़ है? वह है 'ध्यान'। सुकर्म को अकर्म की दिशा में अर्थात् शुभ परिणति को शुद्ध परिणति की ओर बढ़ाने वाला भी ध्यान है, शुभ राग को वीतराग भाव की ओर भी वही मोड़ता है तथा सुकर्म को कुकर्म का रूप भी ध्यान ही देता है। आत्मा को शुभ से अशुभ की ओर धकेलने वाला भी 'ध्यान' है।

संयोग-वियोग का चक्र

ध्यान के सम्बन्ध में पहले हमने विचार किया था। चार ध्यानों में प्रथम दो अशुभ ध्यान पर चर्चा चल रही थी। पहला आर्त्तध्यान- जिसके चार कारण अथवा आलंबन बताये गये थे, जिन्हें ध्यान के 'पाये' भी कहते हैं। उसके कारणों पर विचार चर्चा की जा रही थी कि मनोज्ञ वस्तु का संयोग और अमनोज्ञ वस्तु का वियोग चाहना- रागी आत्मा का स्वभाव है। राग के कारण आत्मा प्रिय वस्तु पाकर आनन्दित होता है, हर्ष विह्वल होकर नाचने लगता है और चाहता है कि बस- यह वस्तु संयोग कभी मुझ से दूर नहीं हटे। ये प्रिय लोग सदा मेरे पास बने रहें। वह अप्रिय वस्तु का संयोग पाकर दुःखी होता है, शोक एवं चिंता करता है, जल्दी से जल्दी उसे दूर हटाने का प्रयत्न करता है। राग-मूढ आत्मा यह नहीं सोचता कि ये संयोग और वियोग दोनों ही क्षणस्थायी हैं, बादल की छाया है, धूप-

छाँव का खेल है। ज्ञानीजनों ने कहा है-"समागमाः सापगमाः सर्वमुत्पदादि भंगुरम्।"

संयोग के साथ वियोग जुड़ा हुआ है, उत्पाद के साथ विनाश भी आयेगा। जहाँ पर धूप आयेगी, वहाँ पर छाया भी आयेगी। कोई सोचे कि दिन तो निकले, किंतु कभी रात नहीं हो, सदा दिन ही दिन बना रहे, तो क्या यह संभव है? ज्ञानीजनों की भाषा में जो संयोग के साथ वियोग नहीं चाहता, या वियोग आने पर दुःख करता है वह मूर्ख है। संयोग के समय हर्ष करना और वियोग के समय विषाद करना- यह अन्तर के अज्ञान के कारण है। इससे वर्तमान भी दुःखमय होता है और भविष्य भी। शास्त्र में बताया है- "पूर्व कर्म के कारण प्राणी दुःखी होता है। जब दुःख आता है, संयोग-वियोग की उछालें आती हैं तो फिर प्राणी उनमें राग-द्वेष करके नये कर्मों का संचय करता है, नये कर्मों के कारण पुनः उसे सुख-दुःख की चक्की में पिसना पड़ता है-

पदुट्ठचित्तो य चिणाई कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे।।

आत्मा राग-द्वेष से कलुषित होकर कर्मो का संचय करता है। वे कर्म विपाक-परिणाम में बहुत दुःखदायी होते हैं। इस प्रकार आर्त्त-रौद्रध्यान करने वाले प्राणी के दुःखों का कभी अंत नहीं आता। जन्म-मरण का चक्र कभी समाप्त नहीं होता, सुख-दुःख, दुःख-सुख, संयोग-वियोग, फिर वियोग-संयोग बस इसी चक्र में आत्मा अनन्त-अनन्त काल तक भटकता रहता है। **(क्रमशः)**

मुक्तक

अनेकान्त

डॉ. दिलीप धींग

(1)

खुली हुई खिड़कियों से आ रहा प्रकाश है।
छोड़ दो संकीर्णता, कह रहा आकाश है।
अनगिनत आयाम और अंग हैं सत्य के।
स्याद्वाद से ही सत्य का सम्पूर्ण विकास है।

(2)

अनेकान्त की धरा पर सत्य खड़ा है।
कभी व्यवहार कभी निश्चय बड़ा है।
अत्यन्त जरूरी है सन्तुलन-समन्वय,
एकान्तवाद से ही सब काम बिगड़ा है।

-बम्बोरा-313706, उदयपुर (राज.)

प्रवचन

एकता से संघ-समाज को समृद्ध बनाएँ

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा बजरिया-सवाईमाधोपुर में 5 मई, 2013 को संघ-शक्ति के परिप्रेक्ष्य में प्रदत्त प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतनमल मेहता, सह-सम्पादक-जिनवाणी, जोधपुर ने किया है।-सम्पादक

तीर्थंकर प्रभु महावीर की आदेय-अनमोल वाणी का आप स्वाध्याय कर रहे हैं। आचारांग सूत्र का वचन है- **''सव्वओ पमत्तस्स भयं।''** जो प्रमादी है, अज्ञानी है, असंगठित है उन्हें सब तरफ से भय है। ''सव्वओ अपमत्तस्स नत्थि भयं'' अर्थात् जो अप्रमादी है, हर क्षण-हर पल जागरूक होकर विवेक की लाइट में चलते हैं और जो ज्ञान का दीपक जलाकर जीवन जीते हैं, उन्हें कहीं पर भय नहीं है।

भय हमेशा ''मैं'' और ''मेरेपन'' में है। जब भी किसी व्यक्ति में मैं या मेरापन आता है, वहाँ भय है। वह चाहे बात के लिए हो, वह चाहे सम्पदा के लिए हो, वह चाहे संगठन के लिए हो, चाहे नामवरी के लिए हो। जहाँ भी 'मैं' है या 'मेरापन' है, वहाँ भय है। एक शब्द में कहूँ- अहंकार है वह पतन का कारण है।

मनुष्य जीवन उज्ज्वल है, श्रेष्ठ है, निर्मल है। अच्छे-भले मनुष्य जीवन में यदि अहंकार है तो मनुष्य अपना जीवन हार जाता है, गर्त में पहुँच जाता है। मरीचि को पच्चीस जन्म तक नीच गोत्र में कौन ले गया? मोक्ष के दरवाजे खोलने वाली मेरी परदादी, मेरे दादाजी तीर्थंकर, मेरे पिताजी चक्रवर्ती सम्राट, मेरे सभी भाई मोक्षगामी, मेरी दोनों भुआएँ मोक्ष जाने वाली। इस प्रकार का अहंकार ही तो मरीचि के पतन में सहायक बना।

अहंकार किसी भी बात का हो सकता है। कोई कह भले ही दे कि मुझे अहंकार नहीं आता। पर, अहंकार आए ही नहीं, संभव नहीं है। अहंकार परिवार का हो सकता है। अहंकार पैसे का हो सकता है। अहंकार प्रभुत्व का हो सकता है। अहंकार रूप का हो सकता है। अहंकार नाम का हो सकता है। मेरे पिताजी ने दीक्षा ली, वे साधु बन गए, अच्छी बात है। साधुत्व श्रेष्ठ है तो तुमको किसने रोका? स्वयं को उस मार्ग पर चलना नहीं और जो भी मिलता है उसके सामने कहता है- ''मेरे पिताजी दीक्षित हुए हैं, वे साधु हैं, उनका नाम है।'' भाई, आपके पिताजी संयम पथ पर अग्रसर हैं तो वे सिद्धि प्राप्त करेंगे, तुम

क्यों उनके नाम को लेकर अहंकार करते हो? साधु बनने की बात छोड़िये, कोई संघ का अध्यक्ष बन गया, मंत्री बन गया, प्रधान बन गया। पद को मेरेपन के साथ जोड़ना भी अहंकार में शुमार माना जाता है।

अहंकार नीच गोत्र का बन्ध कराने वाला है। 'मैं' और 'मेरापन' पतन की ओर ले जाता है। थें जाणो कोनी- मैं कुण? मैं साधु, मैं अध्यक्ष, मैं मंत्री, मैं प्रधान, मैं सेठ, मैं मुखिया। मेरे पीछे पूरा गाँव, मेरे पीछे पूरी जाति। यह सब क्या है? अरे भाई, यह अहंकार बोल रहा है। अहंकार पद, पैसा, प्रतिष्ठा का ही नहीं, शारीरिक ताकत का भी होता है तो मानसिक सोच का भी। एक विद्वान् को भी विद्या का अहंकार हो सकता है, तपस्वी को तप-साधना का और नेता को नेतागिरी का अहंकार हो सकता है। विरला ही कोई होगा, जो अहं के नशे से मुक्त हो।

अहंकार त्याज्य है, छोड़ने लायक है, कहने में यह जितना सरल है, व्यवहार में लाना उतना ही कठिन है। आपने सुना होगा-

बड़ौ बड़ाई ना करे, बड़ौ न बोले बोल।
रहिमन हीरा कब कहे, लाख हमारो मोल।।

बड़ा अपने लिए बड़ा बोल नहीं बोलता। श्रेष्ठ संयमी आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) ने अपने लिए 'संघ-सेवक' शब्द का प्रयोग किया। वे आचार्य थे, स्वयं को आचार्य कह सकते थे, लिख सकते थे, लेकिन उन्होंने अपने-आपके लिए 'संघ-सेवक' शब्द लिखना उचित समझा। आप अपने लिए क्या कहते हैं, क्या लिखते हैं? स्वयं सोचना। आज व्यक्ति-व्यक्ति के मन में अहं सिर पर चढ़कर बोल रहा है। मैं मंत्री, मैं अध्यक्ष, मेरे साथ दो मंत्री, मेरे साथ पूरी जात-न्यात। तुमने क्या समझकर मुझे ऐसा कहा? क्या मुझे कमाना नहीं आता?

मैं और मेरापन आदमी को कहाँ ले जायेगा? आप कब तक इस अहं से ग्रसित रहेंगे? आपने काले में काले बहुत कर लिए। अब सफेद में तो काले मत करो। पहले के लोग कलम और स्याही से लिखते थे। लिखते-लिखते कभी स्याही का धब्बा कागज पर गिर जाता तो उसे बालों में पौंछकर कलम व हाथ साफ कर लेते। बाल काले हों तो स्याही पौंछी दिखती नहीं, पर बाल सफेद हों, और स्याही पौंछ लो तो.....?

आज स्याही पौंछने वाले तो शायद नहीं हैं। स्याही पौंछे क्या, स्याही से लिखने वाले भी कम ही मिलेंगे। सफेद बाल काले करने वाले बहुत हैं। सफेद बाल खराब नहीं हैं, परन्तु अवस्था हो जाने पर भी जिनको जवान दिखने का शौक है वे डाई करवाते हैं, घर पर बाल काले करते हैं। सफेद बाल खराब नहीं हैं। वे श्वेत-स्वच्छ-शुक्ल ध्यान का संकेत

करने वाले हैं। बाल ही नहीं, वस्त्र भी सफेद-निर्मल हों तो मन को शांति देने वाले हो, सकते हैं। पर कब? जब आदमी की सोच सही हो, वह संघ का अंग बनकर संघ-दीप्ति में सहभागी बने।

संघ की सदा से बहुत बड़ी इज्जत रही है। स्वयं तीर्थंकर भगवन्तों ने संघ की महिमा गाई है, गुणगान किए हैं। नन्दी सूत्र में जहाँ तीर्थंकर भगवन्तों के गुणानुवाद में दो गाथाएँ हैं वहीं संघ के लिए सत्रह गाथाएँ मिलती हैं। क्यों? इसलिए कि संघ का बड़ा महत्त्व है। संघ में बहुत बड़ी ताकत रही हुई है। ''संघे शक्तिःकलौ युगे'' यह वाक्य आपने पढ़ा होगा, नहीं तो सुना जरूर होगा। संघ शक्ति का पहले महत्त्व था, आज है, आगे रहेगा।

जिस जाति, कौम, वर्ग, समुदाय ने अपने आपको संगठित कर लिया, वे चाहे कोई भी क्यों न हों, अपनी शक्ति के बल पर पंच, सरपंच, प्रधान, जिला प्रमुख, प्रदेश सरकार के मंत्री- मुख्यमंत्री ही नहीं प्रधानमंत्री तक बन सकते हैं। कब? जब उनमें शक्ति हो और वह शक्ति है संगठन की, एकता की। जो जाति या कौम संगठित है वह उन्नति करती है, आगे बढ़ती है। आप व्यवहार में देखते हैं कि एक जिलाधीश है, वह भले ही एस.सी., एस.टी. का ही क्यों न है, फिर भी पढ़-लिखकर योग्यता अर्जित करके पद प्राप्त करता है तो सब लोग उसका आदर करते हैं, सम्मान देते हैं। इसके पीछे पढ़ाई ही नहीं, जात-न्यात, कुल-खानदान की संगठन शक्ति भी अन्यान्य कारणों में एक कारण हो सकती है।

संघ में शक्ति है, ताकत है इसे हम अपने शरीर से भी समझ सकते हैं। कान में सुनने की ताकत है, आँख देखने का काम करती है, नाक सूंघने का। जब तक हर इन्द्रिय अपना-अपना काम करती है तब तक कोई भी शरीर की ताकत को नकार नहीं सकता। लेकिन इन्द्रियाँ अलग-अलग हो जायें, एक दूसरे का एक दूसरा सहयोग नहीं करे तो क्या वह शरीर ताकतवर रहेगा? आप जानते हैं इन्द्रियों का संगठित रूप शरीर है। एक इन्द्रिय की शक्ति क्षीण हो जाय या वह काम करना बंद कर दे तो शरीर की वैसी ताकत नहीं रहेगी।

इन्द्रियों की तरह मस्तिष्क की भी ताकत है। आदमी सोचता है, विचार-चिन्तन करता है तो मानसिक शक्ति के बल पर। मानसिक शक्ति क्षीण हो जाने पर लोग उसे मन्द बुद्धि, बावला या पागल कहते हैं। उसकी सारी इन्द्रियाँ ठीक हैं, लेकिन मस्तिष्क कमजोर है या मस्तिष्क ने काम करना बंद कर दिया तो लोग उसे पागल कहते हैं।

शरीर की तरह हमारा संघ है। संघ का एक-एक सदस्य यदि संगठित है तो वह संघ शक्तिशाली है, ताकतवर है, प्रभावशाली है। यदि संघ सदस्यों में एकता- एकरूपता नहीं तो जितने माथे उतने विचार। हर व्यक्ति तर्क करेगा, कुतर्क करने में भी संकोच नहीं करेगा। आप मानकर चलिये जहाँ भी विचार भिन्नता है वहाँ न व्यवहार एक होगा, न आचार एक

होगा। विचार भिन्नता आचार भिन्नता में परिणत हो गई तो फिर संघ, संघ नहीं रहेगा। संघ टूट जाएगा। संघ की ताकत छिन्न-भिन्न हो जाएगी।

आप घड़ी रोज देखते हैं। घड़ी में एक काँटा मिनट का है, तो एक घंटे का। घड़ी समय बताती है। घड़ी में घंटे का काँटा चाहिए तो मिनट का भी जरूरी है तभी घड़ी समय बताती है। जब तक घड़ी चलती है, समय बताती है तब तक उसका महत्त्व है अन्यथा बन्द पड़ी घड़ी कोई देखता नहीं और देखने वाला उसे खटाला कहता है। घड़ी में काँटों का महत्त्व है, लेकिन काँटों के अलावा भी घड़ी में छोटे-बड़े कई-कई पुर्जे हैं जो दिखलाई भले ही न दें, पर उनके महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। घड़ी में एक-एक पुर्जे का महत्त्व है और एक पुर्जा भी खराब होने की स्थिति में घड़ी बंद हो जाती है, समय नहीं बता सकती। घड़ी में जैसे छोटे-से-छोटे पुर्जे का महत्त्व है, ठीक इसी तरह संघ में भले ही अध्यक्ष-मंत्री दिखते हैं, किन्तु छोटे-से-छोटे हर सदस्य का महत्त्व है और रहेगा।

आप बुहारी से परिचित हैं। आपने बुहारी देखी है, काम में लेते हैं। बुहारी का एक-एक तिनका यदि संगठित है तो वह बुहारी सफाई का काम कर सकती है। यदि तिनके बिखर जायें, अलग-अलग हो जायँ तो क्या उससे सफाई हो सकेगी?

शरीर की लज्जा ढँकने के लिए कपड़े की जरूरत होती है। कपड़ा सूत से बनता है। सूत का एक-एक धागा मिला हुआ है तब तो वह कपड़ा लज्जा ढँक सकता है, अन्यथा सूत का एक-एक तार किस काम का?

आप मकान में रहते हैं। जरूरत होने पर मकान बनवाते हैं। मकान ईंटों से बनता है। ईंटे चुनी हुई हैं, एक-दूसरे के साथ सीमेण्ट संयुक्त हैं तो वह दीवार का काम करती हैं, अन्यथा अलग-अलग पड़ी ईंटों से मकान नहीं बनता।

आप सब सामाजिक प्राणी हैं, समाज में रहते हैं, समाज में बढ़ते हैं। संघ हो या समाज, यदि आप संगठित हैं, एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं तब तो महत्त्व है। संघ या समाज के धरातल पर आपकी एकता-एकरूपता है तो आप ताकतवर हैं, शक्तिशाली हैं, संगठित हैं। शक्ति संगठन में है। मेरी बात आप सुन तो रहे हैं, लेकिन आपको समझ में भी आ रही है या नहीं?

(सभा में से- बाबजी! सुन रहे हैं, समझ में भी आ रही है।)

जब आपको मेरी बात समझ में आ रही है तो फिर तर्क-वितर्क क्यों? क्या आपको पोरवाल समाज का कोई श्रेष्ठ-सलौना रूप नहीं दिखता? आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) फरमाते थे कि पोरवाल समाज में कोई रात्रि-भोजन करने वाला नहीं मिलता। हाँ, कभी किसी ने अकेले में खा लिया, किसी को बीमारी की अवस्था में

खाना पड़ा, वह बात दूसरी है, परन्तु सामान्यतः कोई रात में नहीं खाता। आज क्या स्थिति है?

मैंने सुना है- "हवाई जहाज की यात्रा हो या रेल की यात्रा, दिन में भोजन करते हुए को देखकर पास बैठा व्यक्ति पूछता कि क्या आप जैन हैं?" मतलब क्या? जैन रात में खाना नहीं खाता, इसलिए पास में बैठे व्यक्ति समझ जाते हैं कि यह जैन है। रात्रि में नहीं खाना, यह जैन होने की पहचान हैं। आप जैन हैं, आपको अपनी गरिमा बनाए रखनी है। आपकी यह इज्जत, प्रतिष्ठा, पहचान कैसे बनी? कितने लोगों का इसमें सहयोग हैं?

आज कई स्थानों पर एक-एक व्यक्ति अपने अहं को लेकर अड़ रहा है। इस तरह की प्रवृत्ति को क्या सभ्य समाज कहा जा सकता है? एक व्यक्ति का संख्या में भले कुछ महत्त्व नहीं, परन्तु जैसे एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर सकती है, वैसे ही एक व्यक्ति संघ-समाज में बनी-बनाई प्रतिष्ठा या पैठ को धक्का पहुँचा सकता है। एक व्यक्ति ने मान लो झूठ कह दिया, उससे सारे झूठे नहीं हो जाते, पर उस व्यक्ति के कारण वातावरण तो दूषित हो सकता है। वातावरण बनाने में समय लगता है, शक्ति लगती है, पसीना बहाना पड़ता है और बिगाड़ने में कुछ सैकिण्ड लगते हैं।

आप सब संघ-समाज के सदस्य हैं, तो उसकी गरिमा बढ़ानी या घटानी? जरूरत है हर व्यक्ति संघ को सहयोग करे। एक जंगल में आग लग गई। आग बुझाने के लिए जिनको जो साधन सुलभ हुए उनका उन्होंने प्रयोग किया। हर कोई चाहता था- आग जल्दी-से-जल्दी बुझे। नुकसान कम-से-कम हो। आग बुझाने की भावना से एक चिड़िया भी पेड़ से उड़ी। पोखर पास ही था, वहाँ पहुँचकर एक बूँद पानी अपनी चोच में भरा। वह आग के पास जाकर चोंच में रही पानी की बूँद आग पर डालती है। चिड़िया की हरकत एक बन्दर देख रहा था। बन्दर बोला- "चिड़िया बहन! इण लाय में थारी एक बूँद काँई असर करै?"

चिड़िया ने कहा- "मैं मान रही हूँ, जान रही हूँ कि मेरी इस बूँद से आग बुझने वाली नहीं है। पर, जब भी आग बुझाने वालों के नाम आयेंगे तो मेरा नाम आग लगाने वालों में नहीं, बुझाने वालों में लिखा जाएगा।"

संघ का क्या रूप होना चाहिए? संगठन किसे कहना? जहाँ एकता है वहाँ संगठन है। जहाँ प्रेम है वहाँ संगठन है। जहाँ परस्पर सहयोग है वहाँ संगठन है। दो भाइयों को ही ले लीजिए। अगर उनमें प्रेम, स्नेह, सामंजस्य है तो लोग कहेंगे- इनका क्या कहना! इनकी तो एक दाँत रोटी टूटती है। शक्ति है एकता में। संगठन के लिए एकता जरूरी है।

आपने कभी ताश का खेल खेला होगा। ताश में देहला है तो उसके ऊपर गुलाम है। गुलाम से रानी भारी है तो रानी से बादशाह ऊपर होता है। बादशाह से बड़ा है इक्का। इक्का

सबसे भारी है। ऐसे ही संघ-समाज में इक्का (एकता) सबसे बढ़कर है। जिस संघ में, समाज में इक्का (एकता) है वह आगे बढ़ता है, प्रगति और उन्नति करता है। हाथी दिखने में विशालकाय है, परन्तु चींटियाँ एक हो जायें तो हाथी जैसे बलवान जानवर को धराशायी कर सकती हैं। विषधर साँप को चींटियाँ मार सकती हैं। कब? जब सारी चींटियाँ एक हो जायें। एकता में ताकत है। आप पोरवाल हैं, यदि एकता है तो ताकत है और एकता नहीं तो कुछ नहीं।

आप धर्म-संघ के सदस्य हैं। धर्म-संघ कर्म काटने वाला है। यहाँ एकता-एकरूपता और परस्पर सहयोग बनाए रखकर चलेंगे तो सारे समाजों में आपका नम्बर ऊपर आ सकता है। आपको जैन होने में गर्व होना चाहिए। आप अपनी पहचान फिर से बनाएँ, अपना गौरव जगाएँ। इसके लिए आपको संगठन का, सहयोग का, सबके साथ सामंजस्य का आदर्श उपस्थित करना होगा। जैन का गौरवशाली अतीत रहा है। कोर्ट में पचासों गवाह एक तरफ और एक जैन की गवाह एक तरफ मानी जाती रही। जज जानता था जैन झूठ नहीं बोलता इसलिए जैन की गवाही सत्य मानकर फैसला सुना दिया जाता था। आज आपको वही गौरव जागृत करना है।

आज अहंकार बोल रहा है। किसी को पैसे का अहंकार है तो किसी को पद का। कोई अपने प्रभुत्व और वर्चस्व को लेकर अहं जता रहा है तो कोई नेतागिरी को लेकर। आज व्यक्ति बोल रहा है, संघ नहीं। संघ बोलने लग जाएगा तो कल्याण होते देर नहीं लगेगी। आप अहं से हटकर संघ-समाज में एकता-एकरूपता लाने के लिए स्वयं आगे होकर पहल करें, आगे बढ़ें इसी मंगल मनीषा के साथ.....।

जिनवाणी पर अभिमत

श्री सुनित कुमार जैन

मई, 2013 के अंक में प्रकाशित सम्पादकीय "साधु ऐसा चाहिए" के द्वारा प्रेरणा मिलती है कि साधु को साधुत्व एवं श्रावक को श्रावकत्व का बोध होना चाहिए और उसी अनुरूप आचरण किया जाय तो जीवन में 'सत्यं-शिवं-सुन्दरम्' सार्थक हो जाए। आपके प्रत्येक आलेख में विनम्र श्रद्धाभावों का समावेश दृष्टिगोचर होता है। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का प्रवचन "विनय से जीतें अहंकार" पढ़कर लगा कि आज तक जितने महापुरुष हुए हैं, उन्होंने विनम्रता के सहारे ही ऊँचाई पाई है। विनम्रता के अभाव में गुरुकृपा असम्भव है। प्रत्येक स्तम्भ हम सबके लिए प्रेरणा पुंज की भूमिका निभा रहे हैं। *-जैन विहार कॉलोनी, अलीगढ़, जिला-टोंक-304023 (राज.)*

प्रवचन

आत्मदर्शन के लिए करें पुरुषार्थ

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

हमारा मौजूदा जीवन अन्तहीन विचारों के अस्त-व्यस्त जाल में उलझा हुआ है। जब तक जीव को यथार्थ का परिज्ञान नहीं होता है, तब तक यह जाल जंजाल बना रहता है। तन-मन की परिधियों में कैद चेतन कषायों की तपन से व्यथित होता है तथा आर्त और रौद्र ध्यान करके अपने आपको अधिक दुःखी करता है। वह दूसरों का अहित करने की भ्रान्ति में स्वयं का अहित करता रहता है। जीव की इस नादानी को देखकर आत्म-ज्ञानी उसे पुकारते हैं- हे चेतन! जगो, जानो और छोड़ो।

जागने के लिए दृष्टि और दृष्टिकोण में परिवर्तन करना होता है। विपरीत दृष्टि और अज्ञान के कारण अनादि काल से जीव भ्रम का शिकार हो रहा है। गलत धारणा को ही वह सही मानकर चल रहा है। परिणामस्वरूप असत्य की बीहड़ अटवी में भटक रहा है। जीव की यह बेहद करुण दशा है।

गाढ़ी कमाई को कोई एकाएक गँवा बैठे अथवा कड़ी मेहनत के बावजूद परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाए तो भी वह इतनी करुण दशा नहीं है, जितनी करुण दशा विपरीत मान्यताओं में, भ्रम में जीना है। आत्म-तत्त्व की विस्मृति और देह, पद, प्रतिष्ठा जैसे क्षणिक प्रलोभनों में जीवन के अनमोल क्षणों को बर्बाद करना समझदारी नहीं है।

हम एकान्त में बैठें और विचार करें कि अब तक इस जीवन में क्या खोया और क्या पाया? जब हमें लगे कि बहुकाल यूं ही प्रमाद-प्रपंच में व्यतीत हो गया है तो अब स्वयं को जगायें, सत्य को देखें, जानें और स्वीकार करें। आत्मबोधि/संबोधि के लिए अपनी गलतियों का बोध आवश्यक है। जिसे अपने अज्ञान का भान हो जाता है, वह ज्ञानवान होने की दिशा में गतिमान हो जाता है। अतः हमें संकल्पपूर्वक अपनी कमियों, कमजोरियों को ढूंढना और स्वीकार करने का साहस विकसित करना चाहिये।

हमारे सत्संकल्प और आत्म-साहस को विकसित करने के लिए सारे अनुकूल उपादान और निमित्त उपलब्ध हैं। स्वस्थ शरीर, विचारशील मस्तिष्क, गुरुजनों का सान्निध्य, आगम का मार्गदर्शन और जिनवाणी का आधार जैसी सशक्त अनुकूलताएँ होने के बावजूद यदि आत्मदर्शन का अभ्यास और पुरुषार्थ नहीं किया, तो फिर पछताने के अलावा कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है। अतः हमें हमारी ऊर्जा को केवल इस एक

कार्य में नियोजित करना है कि मैं कौन हूँ, मेरा वास्तविक स्वरूप क्या है, सत्य क्या है तथा जीवन का असली उद्देश्य क्या है। कहीं ऐसा नहीं हो कि राख के लिए मूल्यवान चन्दन को जला दिया जाए।

पास-पड़ौसी क्या कर रहे हैं या दुनिया में क्या हो रहा है, यह सब जानने के लिए मुझे मेरी विचार-शक्ति और भाव-शक्ति का अपव्यय नहीं करना है। मुझे मेरी सभी प्रकार की शक्तियों का उपयोग सिर्फ आत्मदर्शन में ही करना है। आत्मदर्शन के लिए आगम के दर्पण में निहारें और निहारें, बिना थके-हारे। यह सातत्य एक दिन का साक्षात्कार अवश्य करवाएगा। अतः अनन्त आस्था के साथ आगे बढ़ें और सदाचरण से आत्म-स्वरूप की प्राप्ति करें। मनुष्य जीवन को सार्थक करने के लिए आत्मदर्शन परमावश्यक है।

(सुश्री विधि कोठारी-कोटा द्वारा संकलित एवं डॉ. दिलीप धींग द्वारा सम्पादित)

परिवर्तन

श्री निर्मल कुमार जामड़

कोई ऐसा हल निकलना चाहिये।
आदमी फिर से बदलना चाहिये।।1।।

नर्म गद्दों से दरद रहने लगा है।
यह ज़मी सोने की होनी चाहिये।।2।।

कर रहे हैं खून हम, ज़ज्बात का।
ज़िन्दगी से प्यार होना चाहिये।।3।।

खुशबुओं की चाह में भटके हैं मन।
अब पसीना खुद का बहना चाहिये।।4।।

अपनी मंज़िल का पता, सब खो चुके।
हौंसलों को फिर जगाना चाहिये।।5।।

जो करम करते हैं, सुबह-और-शाम हम।
दो घड़ी उनसे भी, मिलना चाहिये।।6।।

ज़िस्म का क्या है, भला, घर रेत का।
आत्मा निर्मल बनानी चाहिये।।7।।

-2/175, जवाहर नगर, जयपुर-302004 (राज.)

प्रवचन

पुद्गल से आसक्ति तोड़ें, जीवरक्षा का भाव साधें

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा 1 जुलाई, 2011 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है। प्रस्तुत प्रवचन में पुद्गल से आसक्ति तोड़ने के साथ धोवनपानी के लाभ भी बताए गए हैं। -सम्पादक

आत्मा के द्वारा आत्मभाव में प्रवेश करने की दिशा में पुद्गल के आकर्षण को समाप्त करते हुए पुद्गलों से छुट्टी पाने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और जीव-अजीव के अनादिकालीन इस संघर्ष में जीव के महत्त्व को अनुभव कर पुद्गल पर अन्तिम विजय मिलाने के लिए सार्थक प्रेरणा प्रदान करने वाले आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्.....।

पुद्गल जैसा द्रव्य शायद ही संसार में हो। आप तो फिर भी कभी प्रेम से, कभी सहानुभूति से, कभी वात्सल्य से बिना बुलाये किसी के घर जा सकते हैं, किसी की कभी दुःख की बात सुन लें तो उसके पास पहुँच जाते हैं, पर पुद्गल बिना बुलाये आता ही नहीं। पहले के संचित कर्म-पुद्गल के प्रभाव से आए प्रमाद से, पुद्गल की आसक्ति से प्राणी पुद्गल में प्रवृत्ति करते हैं और तब नये पुद्गल आकर उससे चिपक जाते हैं। मन, वचन और काया तीनों पुद्गल हैं। मन की प्रवृत्ति, वचन की प्रवृत्ति, काया की प्रवृत्ति मन-वचन-काया के योग से पुकारी जाती है। जिसके योग नहीं उसका पुद्गल से कोई सम्बन्ध नहीं। चौदहवें गुणस्थान में शरीर पाँच लघु अक्षर अ उ इ ऋ लृ के उच्चारण काल के पश्चात् छूट ही जाता है। जीव उससे विमुक्त हो जाता है। योग रहता है तेरहवें गुणस्थान तक। पुद्गल आते हैं, पर पुद्गल का चिपकने वाला कार्य नहीं होता। चिपकाने का कार्य कषाय द्वारा दसवें गुणस्थान तक किया जाता है, उसमें भी विशेष नुकसान की सामर्थ्य नहीं, संज्वलन के सफल होने पर होने वाली प्रमत्त अवस्था में ही असातादि का बंध संभव है।

मान लीजिये आँधी आई, धूल उड़ी और धूल उड़कर दीवार पर लगी। दीवार पर कोई चिकनाहट का साधन नहीं है, तो लगी हुई धूल स्वयं नीचे गिर जायेगी। दीवार पानी से गीली हो तो धूल थोड़ी-सी चिपक जायेगी। यदि उसी दीवार पर डिस्टेंपर की चिकनाई है तो धूल गाढ़ी चिपक जायेगी। ठीक उसी प्रकार पुद्गल का आकर्षण नहीं, कामना नहीं, लोभ

नहीं, कषाय नहीं, तब मन, वचन, काया की प्रवृत्ति भले ही पौद्गलिक हो, पर पहले समय में कर्म-पुद्गल आया, दूसरे समय में उदय हुआ और तीसरे समय में पुनः अलग हो गया, तो प्रवृति दूषित नहीं होती। पूर्व के उदय के प्रभाव से वीर्यान्तराय के क्षयोपशम या क्षय से होने वाला भोग कार्मण वर्गणा को आकृष्ट भले ही करे, चिपका नहीं सकता, स्थिति, अनुभाग नहीं दे सकता। हाँ, तो प्रवृत्ति दूषित नहीं होती, जब तक कि इसमें कषाय का इंजेक्शन नहीं लगे। उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन में सातवीं पृच्छा में कहा- "भगवन्! अपने दोषों को सार्वजनिक करने की भावना से, अपने को दोषी नहीं रखने की व्याकुलता से त्रस्त प्राणी अपनी आलोचना करता है, निन्दा करता है, गर्हा करता है, अपने दोष देखता है। उससे क्या लाभ है?" उत्तर में भगवान ने कहा कि आलोचना से शल्योद्धरण होता हैं, निन्दा से पश्चात्ताप द्वारा मोहनीय कर्म को उखाड़ना सम्भव है और गर्हा से अपुरस्कार अर्थात् दूसरे से पुरस्कार (सम्मान) पाने की भावना छूटती है, अभिमान गलता है और योग प्रशस्त हो जाते हैं। अहंकृति से ही होती है विकृति। इसीलिये सावद्ययोग के त्याग द्वारा सामायिक में निन्दा, गर्हा की जाती है। प्रतिक्रमण का पहला आवश्यक भी सामायिक ही है-

पाप का परिहार कर, मौन व्रत स्वीकार कर
वासना पर वार कर, योग दुष्ट निवार कर
दृष्टि निज नासाग्र हो, शान्त चित्त एकाग्र हो...
लक्ष्य को पहचान.....

पहला आवश्यक साधना की शुरूआत है। श्रावक की सामायिक, चारित्राचारित्र में तथा साधु की सामायिक चारित्र के पेटे में आती है। इसकी आधारशिला है- सम्यग्दर्शन। सम्यग्दर्शनी का पहला लक्षण है-सम। समता के साथ जीव सात कर्मों की स्थिति कम करता हुआ, अन्तः कोटा-कोटि सागरोपम करता हुआ जीव-अजीव की सामान्य जानकारी करता है। सामान्य जानकारी है छः द्रव्य और नौ तत्त्वों की जानकारी। यह जानकारी होने पर श्रुत सामायिक कहलाती है। शुरू की चीज़ है- जीव, अजीव, पुण्य, पाप आदि की जानकारी। जीव क्या है? आत्मा क्या है? जो अपने को अनुभव करता है, वह है आत्मा। जो आत्मा में बैठा है वह है- परमात्मा। जो देखा जाय वह है अनात्मा, जो माना जाय वह है परमात्मा। अतः अनात्मा से जो भिन्न है वही है आत्मा। यही है जड़ और जीव की जानकारी। आत्मा आठ हैं- द्रव्य आत्मा, कषाय आत्मा, ज्ञान आत्मा, दर्शन आत्मा, चारित्र आत्मा, योग आत्मा, उपयोग आत्मा, वीर्य आत्मा। अन्दर जो बैठा है वह है परमात्मा, शुद्ध स्वरूप। जो देखा जाय वह है-अनात्मा। आँखों से जो भी दिख रहा है वह सब जड़ है। जिस जड़ में जीव है, वह है सचित्त और जिसमें जीव नहीं, वह है अचित। पानी

में जीव है, सचित्त कहलायेगा। बर्तन मांज दिए, चौबीस मिनट के भीतर प्रायः पानी के जीव काल कलवित हो गये। आपमें से कई पूछ सकते हैं- महाराज! पानी के जीवों को मारकर पानी पीना कौनसा धर्म है? कहने वालों की बात गलत नहीं है। साधु स्वयं करता नहीं, किसी से करवाता नहीं, करने वाले का अनुमोदन करता नहीं। पर गृहस्थ है तो उसे आवश्यक काम करने पड़ते हैं। आज से 25 वर्ष पूर्व प्रायः परिण्डे के ताम्बे, पीतल की चरियाँ, लोटा, ढक्कन आदि बर्तन राख से मांजे जाते थे। मारवाड़ में प्रायः बासी पानी को प्रातः छाने बिना काम में नहीं लिया जाता। पानी रोज छानने के पीछे कारण यही था कि पानी में जीवादि न पड़ जाय। पाली-बालोतरा में बहुत जल्दी जीवादि पड़ जाते हैं। जहाँ भी रंगाई-छपाई होती है वहाँ पानी जल्दी दूषित हो जाता है। गृहस्थी के घरों से धोवण पानी लाने वाले त्यागी वर्ग को अच्छा अनुभव रहता है। वे जीव तो त्रसकाय के हैं, चलने वाले, फिरने वाले हैं, छानकर उनकी यतना हो जाती है, पर अप्काय के जीव का परकाय शस्त्र खार, चिकनाई, खटाई, अग्नि आदि हैं।

आजकल बर्तन विम पाउडर से साफ किए जाते हैं, डिटरजेंट से धोये जाते हैं। विम पाउडर से धोएं या और किसी डिटरजेंट से वह पानी बेकार जाता है, फिर से काम में नहीं आता, जबकि राख का पानी कुछ समय पश्चात् निथर जाता है और राख का पानी फिर से काम में आ जाता है। डिटरजेंट का पानी काम नहीं आता, तो उसे फैंकना पड़ता है। पानी में डिटरजेंट के कारण पानी के जीवों की विशेष पीड़ा के साथ विराधना तो होती ही है, नाली में डिटरजेंट का पानी जायेगा तो उसके प्रभाव से कितने जीवों की घात होगी? नाली में रहे अप्काय के जीवों की, त्रस जीवों की, समूर्च्छिम मनुष्यों की और कभी-कभी तो लीलण-फूलण के अनन्त जीवों की हिंसा होती है।

आज कई लोग कहते हैं- राख मिलती नहीं। एक बात बताइये- राख महंगी मिलती है या डिटरजेंट? डिटरजेंट में व्यर्थ पैसा जाता है, पानी की बर्बादी है और डिटरजेंट के कारण जीव हिंसा का पाप लगता है सो अलग। पुद्गल से छुटकारे की बात चल रही थी, श्रुत सामायिक, दर्शन सामायिक, चारित्र सामायिक की बात चल रही थी, उसी प्रसंग में सचित्त-अचित्त चर्चा में धोवन का प्रसंग आ गया।

हमारा धर्म उपयोग में है। आप गृहस्थ हैं, गृहस्थ आरम्भ का त्यागी नहीं हुआ है। श्रावक के ग्यारह प्रतिमाएँ होती हैं। वीतराग भगवन्त ने चारित्र धर्म दो प्रकार का कहा है- आंशिक त्याग वाला श्रावक धर्म बताया है। वह श्रावक साधुपने के नज़दीक पहुँचने के क्रम में प्रतिमा आराधन करता है। सारी प्रक्रिया पुद्गल से छुटकारे की है, चिन्मयता प्रकट करने की है। पुद्गल में परायेपन का अनुभव होते अर्थात् सम्यग्दर्शन होने के कारण, पराये से

उदासीनता होती है, जो- विरति है। उस विरति में सचित्त-त्याग के पश्चात् ही आरम्भ का त्याग संभव है।

आरम्भ-क्रिया का मैं अनुमोदन नहीं करता। संत यह नहीं कहते कि राख से बर्तन मांजना। वे यह कह सकते हैं कि विम से बर्तन मांजने का त्याग कर दो। साधु संसार की प्रवृत्ति नहीं कहता। महाराज निवृत्ति की प्रेरणा करते हैं। महाराज पाँच बीड़ी पीने का नियम नहीं करवाते। पाँच बीड़ी से ज्यादा नहीं पीना यह त्याग करवा सकते हैं। साधु एक विगय का त्याग करवा सकता है, चार विगय खाने का नहीं कहता। आप सामायिक करो, पौषध करो, दीक्षा लो, यह कह सकता है। यह नहीं कह सकता कि आप धोवन पानी पीओ। यह कह सकता है कि कच्चा पानी मत पीओ।

पानी में जीव है। पानी पीने से मुँह में वे जीव मरेंगे, शरीर में जाकर मरेंगे। आप गृहस्थ हैं, आरम्भ का पूरा त्याग नहीं भी कर सकते। सचित्त का त्याग किया तो भी लाभ का कारण है। यह **पहला लाभ** है। कदाचित् कहीं धोवन उपलब्ध नहीं, नया धोवन पानी बनाया तो चौबीस मिनट प्रतीक्षा करनी होगी, समभाव से सहनशक्ति विकसित होगी। तितिक्षा बढ़ेगी- पुद्गल की पराधीनता छूटेगी। सहनशक्ति का विकास, मनोबल की दृढ़ता आदि, यह हुआ **दूसरा लाभ**। कच्चा पानी व्यर्थ ज्यादा जाता है। गिलास में पानी लिया, थोड़ा पानी बच गया तो नाली में फैंक दिया जाता है, जबकि धोवण पानी जितना चाहिये, उतना ही लेते हैं, कदाचित् थोड़ा ज्यादा भी आ गया तो फैंकते नहीं। प्रायःकर धोवन पानी फेंकने में कम काम आता है। अनर्थ दण्ड से बचें, जल के दुरुपयोग से बचें-यह हुआ **तीसरा लाभ**।

मनुस्मृति में गृहस्थ के घर में पाँच कत्लखाने कहे हैं। एक है ऊखल। ऊखल में बाजरा, गेहूँ कूटे जाते हैं। दूसरा कत्लखाना है चक्की। पहले हाथ की चक्की में पिसाई की जाती थी। स्वास्थ्य की दृष्टि से प्रसव के समय पीड़ा विशेष की समस्या से मुक्ति और घर का शुद्ध पदार्थ उपलब्ध कराने आदि की दृष्टि के साथ प्रायः युवतियाँ एवं प्रौढ महिलाएँ आलस-विलास से बचने हेतु प्रतिदिन यह कार्य करती थीं। बहिनें कुएँ से पानी भी लाती थीं, घर-घर में चक्कियाँ चलती थीं, तब स्वास्थ्य ठीक रहता था। अब महा-आरम्भ से निर्मित बिजली के द्रुत वेग वाले साधनों का प्रयोग हो रहा है, घर की घट्टी या चक्की को भी कत्लखाना कहा, उससे कई गुना अधिक विराधना बढ़ गई। स्वस्थता घट गई, भोज्य सामग्री विकृत हो गई। अब चक्की से पीसना नहीं होता, इसलिये उनको डॉ. चंचलमल जी चोरडिया साहब के पास जाकर बेलन (एक्यूप्रेशर) चलवाना पड़ता है। आज हजारों रुपये खर्च करके लोग जिम में जाते हैं। अभी मुनिराज (श्री योगेशमुनि जी) कह रहे थे, खिज़ाब वे

ही लगाते हैं, जिनमें बुद्धि नहीं। क्या कहें, आज के बुद्धिमान समझने वाले तथाकथित विकसित वर्ग को थोड़ा-सा बाहर जाना हो तो स्कूटर चाहिये। वे स्कूटर पर जाते हैं, कार में जाते हैं और मोटापा कम करने के लिए जिम में पहुँचते हैं। महात्मा गाँधी लन्दन में पढ़ते थे, उन्होंने वाहन का प्रयोग बन्द कर दिया। रोज सोलह किलोमीटर पैदल चलते थे। आज पुद्गल की आसक्ति बढ़ती जा रही है, चिकनाई बढ़ रही है। कषाय आत्मा पुष्ट हो रही है, कर्म बंध बढ़ रहा है। चूल्हे को भी कत्लखाना कहा। झाड़ू को भी कत्लखाना कह दिया। झाड़ू चलाओगे तो वायु के जीवों की विराधना होगी, और लापरवाही कर दी तो कीड़ियाँ और दूसरे-दूसरे जीव भी मर सकते हैं। आज कई घरों में झाड़ू-पोचे का काम नौकरों से करवाया जाता है। वे कैसे काम करते हैं? जीवरक्षा बड़ी मुश्किल से हो पाती है। पाँचवाँ कत्लखाना है परिण्डा। आज आप मिक्सी चलाते हैं। कपड़े धोने की मशीन, आटा पीसने की चक्की वाली मशीन से श्रम नहीं होता। पहले इन कामों में शारीरिक श्रम होता था। काका हाथरसी से पूछा गया- 80 साल की उम्र में भी आप इतने स्वस्थ कैसे? आपकी आवाज इतनी बुलंद कैसे? युवाओं जैसा उत्साह कैसे? तो उनका जवाब था-

भोजन आधा पेट कर, दुगुना पानी पीव।
तिगुना श्रम, चौगुनी हँसी, वर्ष 125 जीव।।

क्या कहा? भोजन आधा पेट कर। जितना भोजन किया, उससे दुगुना पानी। तीन गुना श्रम और चार गुनी हँसी। हँसी का मतलब हँसना नहीं, वो तो हास्य मोहनीय कर्म का कारण बनेगी। प्रसन्नचित्त रहना है। आपके जीवन में टेन्शन नहीं चाहिये। आप अटेन्शन रहेंगे तो टेन्शन नहीं होगा। नवम अध्ययन की चौदहवीं गाथा में कहा, उसका सार है-

हम सुख से रहते जीते हैं, नहीं यहाँ हमारा कुछ भी है।
मिथिला के जलने से शक्रेन्द्र, जलता मेरा तो कुछ नहीं है।।

अभी मुनिराज इसी की चर्चा कर रहे थे। हमारा प्रसंग भी आगे बढ़ रहा है। जो ईमानदार बन गये, सम्यग्दर्शनी बन गये वे संसार की किसी भी वस्तु को अपनी नहीं मानते। पुद्गल को पुद्गल की जरूरत है, आत्मा को किसी की जरूरत नहीं। अपने को कोई छीनकर नहीं ले जा सकता। अपने सिवाय अपना कोई नहीं है। भगवान यही तो कहते हैं-

संजोगा विप्पमुक्कस्स.....।
संजोगमूलाणि दुक्खाणि.....।।

सचित्त पानी में प्रति समय असंख्यात जीव पैदा होते हैं। जीव पैदा होते हैं, काल कवलित होते रहते हैं। एक भी समय वहाँ विरह नहीं पड़ता। हर समय असंख्य जीव पैदा होकर मर रहे हैं। धोवन बनने पर सामान्यतः 12-15 घण्टे नए जीव पैदा नहीं होते, इस कारण जीवों का जो निरन्तर मरना हो रहा था, वह रुक जाता है। अतः **चौथा लाभ** हुआ

निरन्तर होने वाली परिण्डे के कच्चे पानी के जीवों की विराधना का 12-15 घंटे रुकना।

आपके घर पर पानी है तो हिंसा का बोझ तो आने ही वाला है। आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज) का 1994 में नेहरुपार्क में चातुर्मास था। उस समय के राजस्थान के मुख्य सचिव मीठालाल जी मेहता जोधपुर पधारे। उन दिनों जोधपुर में मलेरिया या किसी अन्य रोग का प्रकोप ज्यादा था। उन्होंने कारण बताते कहा कि जोधपुर में गटर के पाइप लाइन का पीने के पानी की पाइप लाइन से मित्रता हो गई है। गटर का पानी पीने के पानी की पाइप लाइन से लोगों के घरों में जा रहा है, इसलिए पानी का प्रदूषण है, मलेरिया बढ़ रहा है। सरकार ने टी.वी. पर विज्ञापन दिया कि या तो पानी में राख घोलकर पीओ या पानी को उबाल कर पीओ। आप पानी को अचित्त करके काम में लेंगे तो बीमारी नहीं आयेगी। यह बात मैं नहीं कह रहा, उस समय की सरकार कह रही है। धोवन पानी का **पाँचवां लाभ** सरकार बता रही है।

राख के पानी में प्रदूषण का दूषण नहीं रहता। डॉ. जीवराज जी जैन जो मूलतः नागौर के हैं, जमशेदपुर में रहते हैं, प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं। वे प्रयोग करते रहते हैं। उनके शोध जिनवाणी में प्रकाशित होते रहते हैं। पानी में कितनी सम्पदा है, कितनी प्रोपर्टी है, धोवन पानी में कितनी प्रोपर्टी है, केमेस्ट्री वाले जानते हैं, प्रोपर्टी क्या होती है? डॉ. जीवराज जी जैन ने शोध किया कि सचित्त पानी के बजाय धोवन पानी में प्रोपर्टी बढ़ जाती है। आपने देखा होगा घरों में आपकी दादीजी-नानीजी सूखे साग जिनमें मूंग-मोठ भी शामिल हैं, राख में रखते थे। क्यों? राख में रखने से जीव पैदा नहीं होते। अनाज का रक्षण भी राख से होता है। दशवैकालिक अध्ययन 5, उद्देशक 1 की आठवीं गाथा में कहा है- साधु सचित्त रज से भरा है तो वह कोयले के और राख के ऊपर से नहीं जाए। सचित्त पृथ्वी के जीवों को राख मार देती है। साधु राख पर पैर नहीं रख सकता। भगवान की वाणी में राख को तीखा शस्त्र कहा है। हम यदि विवेक रखें तो कितने ही पापों से बच सकते हैं। पानी की सम्पत्ति (आंतरिक शक्ति) वर्धापन की बात वैज्ञानिक कह रहे हैं यह है **छठा लाभ**।

कई कहते हैं- धोवन पानी बनाने में हिंसा लगती है। सही बात है। आप एक भी जीव की हिंसा मत करो। गृहस्थ में रहने वालों का आरम्भ का त्याग नहीं छूटा है तो भी सचित्त का त्याग लाभ का कारण है। आप खाने-पीने में सचित का त्याग करेंगे तो आरम्भ का त्याग भी हो सकेगा। पहले आरम्भ नहीं छूट सकता, क्रम से ही छूट सकता है। मूल प्रसंग समय के अनुसार आगे चलता रहेगा। आज तो पुद्गल-मुक्ति के प्रसंग में किसी जिज्ञासु के प्रश्न पर कुछ चर्चा चल पड़ी।

अपनी बात चल रही थी- दीवार पर पानी लगा रहेगा तो उड़कर आने वाली

मिट्टी थोड़ी देर चिपकेगी। वह कुछ देर बाद नीचे गिर जायेगी। दो शब्द हैं- वृत्ति और प्रवृत्ति। वृत्ति कहते हैं भीतर के कषाय को, प्रवृत्ति कहते हैं बाहर के योग को। गर्हा की बात चल रही थी। पाप का परिहार कर, मौन व्रत स्वीकार कर। प्रवृत्ति में सबसे पहले अपने अहंकार से दोष आते हैं। काचरा छीला तो कर्म बंध हुआ। थोड़ा कर्म बंध। काचरा छीलकर दिखाया- "देख, मैंने कितना अच्छा काचरा छीला है।" काचरा छीलने से जितने कर्मों का बंध नहीं हुआ, काचरा छीलने का अभिमान करने और दिखाने से कई गुना कर्म-बंध हो गया।

एक कटोरी आमरस है और एक कटोरी मूंग की दाल। हिंसा किसमें ज्यादा? आम रस में एक पानी की बूँद डाली नहीं , किन्तु एक आम के फल का जीव मर गया और एक गुठली के जीव को पीड़ा हुई, किन्तु असंख्य जीव मरे बिना दाल नहीं बन सकती। कितने दाने हैं, फिर पानी के असंख्य जीव। कोई व्यक्ति जौहरीमल जी पारख की तरह सौर ऊर्जा से पका ले, तो भी पानी के जीव तो मरेंगे ही। नमक-मिर्ची के जीव भी मरेंगे। पाप किसमें ज्यादा? आमरस खाने में या दाल खाने में? एकान्त रूप से नहीं कह सकते। जिसमें भी आसक्ति है उसमें पाप अधिक है। किसी को दाल नहीं भाती, किसी को आमरस अच्छा नहीं लगता। कर्मबन्ध का कारण है आसक्ति। कर्मबंध का कारण है अहंकृति। जीव के मरने के बजाय आसक्ति से कर्म बन्ध ज्यादा होते हैं। आप किसी को बढ़िया-से-बढ़िया खाना खिलाओ और खाना खिलाने के बाद कहो- कभी तेरे बाप-दादा ने भी ऐसा खाना खाया क्या? चांदी के बर्तन में बादाम का हलुआ खिलाकर कहो कि इस तरह कभी, खाना खाया क्या? कर्मबंध का कारण है अहं। मेरापन हट गया तो बहुत-से कर्मबंध घट गये। इसीलिये कहते हैं-

समदृष्टि जीवड़ा करे कुटुम्ब प्रतिपाल।
अन्तर्गत न्यारा रहे, ज्यूं धाय खिलावे बाल।।

आज रसोई कैसी बनी? शादी के लिए डेकोरेशन कैसा रहा? खाना बनाने में जितना नुकसान नहीं होता, उससे ज्यादा प्रशंसा चाहने से हो जाता है। अभी मेरा क्या रूप देखा, मैं सजधज कर राज दरबार में आऊँ तब देखना।

पानी में जीव होते हैं यह बात आप कहेंगे, हम भी जानते हैं। परीक्षा में लिखते हैं एक बूंद में असंख्य जीव होते हैं। पानी में जीव होते हैं। स्थानक में, धर्म-परीक्षा में पच्चीस बोल सीखते समय भी आप जानते हैं, किन्तु बाथरूम में, घर की धुलाई करते समय, बाथटब में, समुद्र में जीव की बात भूल जाते हैं। जानकारी और जीवन में अन्तर मिटाने के लिए भगवान की वाणी प्रेरणा करती है।

श्रद्धार्पण

आगमादर्श मेरे आराध्य देव!*

महासती यशप्रभा जी म.सा.

हे आगमज्ञ, आगमदर्शी,
आगमप्रेमी, आगमप्रेरक,
आगम आराधक, आगम उपदेशक,
आगमसोची, आगमखोजी, आगमभोजी,
आगम अर्णव में कर अवगाहन
आगम ज्ञान रूपी पाये रतन,
आगम उपवन में कर विचरण
आगमज्ञान रूपी पाये सुमन,
अपने अद्वितीय ज्ञान प्रकाश से
विश्व को आलोकित और उद्योतित करने वाले
आगम अणगार, आगम पुरुष!
आपके अलौकिक पौरुष का,
मैं क्या करूँ बखान?
आचारांग सूत्र में हुआ है
मेरी विवशता का आख्यान
जिनके सम्मुख-
"सव्वे सरा णियट्टंति
तक्का जत्थ ण विज्जइ
मई तत्थ ण गाहिया!"
जहाँ शब्द मौन और श्रद्धा मुखर है
तर्क गौण और तत्त्व गोचर है
मति स्थिर और मन गतिशील है

* पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष पर महासतीवर्या द्वारा अभिव्यक्त भावों का कृत संकलन।

ऐसे विराट् व्यक्तित्व को शब्दायित करना
सागर को अपने बाहुबल से तैरने के समान दुःसाध्य है
फिर भी-
''गुण-संगाहन''
शिष्य का कर्त्तव्य है
बस, आपके **स्वर्णदीक्षा जयंती वर्ष** पर
आपमें विद्यमान यथार्थ वास्तविक गुणों का
अपनी अल्पबुद्धि से कुछ कथन कर
मैं
गुरु-शिष्य की परम्परा और
अपने दायित्व का यत्किंचित् निर्वाह करना चाहती हूँ।
मैं लिखना चाहती हूँ-
कुशलवंश के उस कुशल कलाकार को
जो चतुर्विध संघ का नेतृत्व करने में निपुण-कुशल है
रत्नवंश के उस अनमोल रतन को
जो क्रिया के पालन में अचल-अटल है,
गुमानचन्द्र के उस गुमान को
जिस पर समग्र संघ को गुमान प्रबल है,
हमीरमल की उस हिम्मत को
जिसके सहारे हमारे कदम मोक्षमार्ग पर चल-प्रचल हैं,
कजोड़ीमल के उस कर्त्तव्य को
जो हमें कर्त्तृत्वभाव से मुक्तकर कर्त्तव्य पालन की प्रेरणा दे रहे हैं,
विनयचन्द्र के उस विनय धर्म को
जो प्रवचन के अतिरिक्त गुरु के समक्ष पाट पर नहीं बैठकर
हमें विनय का पाठ पढ़ा रहे हैं,
शोभाचन्द्र के उस अखण्ड सौभाग्य को
जो व्यसन के नाम पर चाय तक से दूर रहकर
हमें व्यसन मुक्ति का संदेश दे रहे हैं।

हस्ती गुरु की उस मस्ती को
जो प्रभु चरणों में बैठे गौतम को प्रतिपल याद दिला
''सुयं मे आउसं'' को जीवंत कर रहे हैं
मुक्तिपथ के उस वीर राही को
जो भरी जवानी में संसार के जंजाल से ऊपर उठकर
संयम की राह पर
अपने चरणों को गतिशील कर
संसार की राह के अनुस्रोत से प्रतिस्रोत में चल
'राही' से **'हीरा'** हो गए
यह हीरा खदान से निकलने वाला जड़ हीरा नहीं
चैतन्य हीरा है,
जिनशासन का कोहीनूर हीरा है!
यह गुणगान एक ऐसे योगी का है
जिसने भोग की उम्र में
भोग विलास की कीचड़ से ऊपर उठकर
योग का कमल खिला दिया और
दुर्जेय कामभोगों को ललकारते हुए कहा-
''कामा दुरतिकम्मा'' हे काम!
मैं तुझे जानता हूँ,
तू संकल्प से पैदा होता है,
मैं तेरा संकल्प ही नहीं करूँगा,
काम को जीत वे ऐसा काम कर रहे हैं कि
आगामी छोरहीन काल में इस संसार में काम ना रहे!
यह गुणगान एक ऐसे साधक का है
जिसने वियोग को वैराग्य का निमित्त बना
वीतरागता का पथ प्रशस्त कर लिया
वियोग का विरोध
उनके वैराग्य का अवरोध नहीं बन सका

बल्कि लघुभगिनी के वियोग की वेदना ने
उन्हें संसार की असारता का बोध करा दिया
और आत्ममुक्ति की शोध में ने
ममतामयी माता की गोद से
प्रवचन माता की गोद में पहुँच गये।
यह गुणगान एक ऐसे संघशास्ता का है
जिनका जीवन नंदनवन है
जिनका प्रवचन मेघवर्षण है
जिनका अनुशासन शीतलचंदन है
जिनके चरणों में मेरा सर्वस्व समर्पण है
जो संततिविहीन होकर भी सनातन हैं
संपत्ति मुक्त होकर भी संपदावान हैं
जिनके सम्मुख सभी विशेषण पद गौण श्रीहीन एवं सत्त्वहीन हैं
जिनका जन्म ही अपने आप में एक विशेषता है
जिनका संयम ही ऐसा पद है
जिसको बताने के लिए कोई पद ही नहीं है
जिनके लिए स्वयं प्रभु कह रहे–
"अपयस्स पयं णत्थि"
जिनका पुण्य ही एक ऐसी पूँजी है
जिसने उन्हें अष्ट संपदा का स्वामी बना दिया
मैंने अहिंसा से परिग्रह तक
आचारांग से आवश्यक तक
सिद्धांत के हर सत्य को
उनके जीवन में सत्य होते देखा है और देख रही हूँ
मैं देख रही हूँ
हे मेरे आराध्य देव!
द्वादशांगी गणिपिटक में
प्रथम स्थान है–आचारांग
जिसमें आचार का हुआ है

विवेचन सर्वांग

उस

आचारांग का प्रत्येक आचार हो आप

ज्ञानादि पंच आचार दक्ष

''आयार कुसले'' हो आप

आचार केवल आपके

मन-वाणी और काया में ही नहीं

आत्मा के अणु-अणु से झलकता है-ज्ञानाचार

आपकी प्रज्ञा की निर्मलता है- दर्शनाचार

आपके अंतःकरण की शुद्धि है-चारित्राचार

आपके निरतिचार संयम का सुफल है-तपाचार

आपके पूर्व में किए गए सामर्थ्य के सदुपयोग की उपलब्धि है-वीर्याचार

इस प्रकार

साधना की कसौटी पर कसा हुआ

आपका समग्राचार

आगम में वर्णित

''अक्खयायारे, अभिण्णायारे, असबलायारे, असंकिलिट्ठायारे''

की उक्ति को चरितार्थ करने वाला

अतिचार-अनाचार रहित अक्षताचार है

मूलगुण-उत्तरगुण सहित अभिन्नाचार है

शबल दोष असेवित अशबलाचार है और

इहलोक-परलोक विषयक आशंसा से अबाधित

असंक्लिष्टाचार है। (क्रमशः)

आवश्यक निवेदन

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशती-वर्ष के अन्तर्गत एकान्तर वर्षीतप करने वाले तपस्वी भाई-बहनों से निवेदन है कि वे अपने नाम एवं सम्पर्क सूत्र संघ के प्रधान कार्यालय (दूरभाष 0291-2636763, Email-absjrhssangh@yahoo.com), घोड़ों का चौक, जोधपुर को प्रेषित करावें।

-निवेदक : ज्ञानेन्द्र बाफना-अध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

गुण-प्रेक्षण

आगमचक्षु संघनायक*

महासती पद्मप्रभा जी म.सा.

समर्पण

स्तुति करूँ आराध्य देव
करके समर्पित तन-मन
भावाञ्जलि हृदय से निकले
गीतों का बन स्पंदन
आलोकित हूँ
आनंदित हूँ
तव शुभनाम से
हर क्षण
भाव के सिवा लाऊँ क्या
स्वीकारो देव मम समर्पण.....

..."तुम्हारे रत्नत्रय के सम्मुख,
धरती और आसमां नमन करते हैं।
तुम्हारे असीम, अगाध, आह्लाद को देख,
बागवां और चमन भी नमन करते हैं।
अहो! हस्ती सुशिष्य तुम्हें पाकर धन्य हुआ संघ,
तुम्हारे व्यक्तित्व के सम्मुख,
नर तो क्या सुर भी नमन करते हैं।..."

धन्य हुई वो माँ.....

तीसरे आरे के अंत में एक ऐसी माँ हुई जिसने प्रभु आदिनाथ जैसे युगादिकर लाल को जन्म दिया। जिसके प्रथम मुखदर्शन से जीवन की साध पूरी हुई और अंतिम मुखदर्शन से मोक्ष में निवास मिला, वह माँ थी माता 'मरुदेवी'।

चतुर्थ आरे के अंत में एक ऐसी माँ हुई, जिसने प्रभु महावीर जैसे युगान्तरकारी तीर्थंकर

* पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष पर महासतीप्रवरा द्वारा अभिव्यक्त भावों का संकलित रूप।

पुत्र को जन्म दिया। जिसके उज्ज्वल-धवल यश का महानाद 21,000 वर्ष तक गूँजता रहेगा, वह माँ थी- माता त्रिशला। दोनों माताओं ने ऐसे प्रतापी पुत्ररत्नों को जन्म दिया, जिन्होंने अपने नगर या देश में ही नहीं, अपितु तीनों लोकों में परिवर्तन का क्रांतिकारी जयनाद गुंजाया।

पंचम आरा तीर्थंकरों के विरह का काल बन गया। उस विरह को पूरने के लिए समय-समय पर वीर माताओं ने महाप्रतापी पुत्रों को जन्म देकर धरा को महिमा मंडित किया। ऐसी ही वीरमाता हुई **माँ मोहिनी**, जिन्होंने गुरुदेव हीरा जैसे महान् पुत्ररत्न को जन्म देकर, स्वयं के सौभाग्य को ही शोभित नहीं किया, अपितु संघ के सौभाग्य को भी शोभित किया।

- जिनके संस्कारों से सिंचित सुपुत्र रत्नसंघ के सुधर्मा पाट पर, स्वामी सुधर्मा की तरह जिनशासन की महिमा को दिग्-दिगंत फैला रहे हैं।
- वे एक ऐसी माँ हुई, जिन्होंने अपने धवल दूध के रूप में पुत्र को चरित्रनिष्ठा और कुलीनता का घोल पिलाया।
- जिन्होंने अपनी दो अंखियों में से, एक से वात्सल्य का पयोधि बहाया और दूसरी आँख से अनुशासन का पाठ पढ़ाया।
- जिन्होंने अपनी वाणी से सबको मधुरता का रस पिलाया और पुत्र के कंठ को भी मधुमय बनाया।
- जिन्होंने अपने कर-युगलों से पुत्र के कर-कमलों में पुरुषार्थ एवं सेवा का सुंदर दीप जलाया।
- जिन्होंने अपने पुत्र को अंगुली पकड़कर अपने कदमों के साथ चरैवेति-चरैवेति का पाठ पढ़ाया।
- ऐसे दिव्य गुणों की निधान माँ मोहिनी देवी ने भव्य भगवान सरीखे पुत्र को जन्म दिया, जो आज चार तीर्थ को तार रहे हैं, जिनकी साधना के निखार से चतुर्विध संघ निखर रहा है।
- जिनके मंगल वचन ही हमारा सर्वार्थ सिद्ध योग है, जिसे साधकर सभी कार्य सिद्ध होते हैं, फिर किसी मुहूर्त्त को साधने या शोधने की हमें जरूरत नहीं।
- जिनकी मंगल निश्रा वह दिव्य कल्पवृक्ष है, जो हमारी समस्त इच्छाओं को ही पूर्ण नहीं करता, अपितु हमें इच्छा मुक्त कर देता है।
- जिनका दर्शन हमारा चतुर्थ मनोरथ है, जो हमारे प्रारम्भ के तीन मनोरथों को सफल और सार्थक करने वाला है।
- सचमुच धन्य हुई वो माता जिन्होंने अपनी दुग्ध धवल धारा से धर्म वृक्ष को सींचा। वे

सींचने किसी मंदिर नहीं गयी, लेकिन हजारों मंदिर उस देवी पर ढलक पड़े। उन माता-मोहिनी का नाम इतिहास में अनजान होकर भी गुरुदेव हीरा से जुड़कर-अमर हो गया। अनन्त पुण्य की भागीदार बनी वो माता। अन्यथा लाखों का सौभाग्य गलियों में ही गल गया होता। फिर मुझ जैसी पामर को भी परम की ओर कौन लगाता?

धन्य हुए वे गुरु.....

यहाँ मैं विशेष रूप से सभी का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ और बताना चाहती हूँ इस बात को कि, गुरु हस्ती स्वयं अपने आप में एक इतिहास थे, पर उनका यह इतिहास गुरु हीरा के आलेख और उल्लेख के बिना अधूरा है, नितांत अधूरा है, ठीक वैसे ही अधूरा है जैसे कि गणधर गौतम के बिना भगवती सूत्र।

इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर.....

तीर्थंकर के साथ गणधर, बलदेव के साथ वासुदेव, महावीर के साथ गौतम, सुधर्मा के साथ जंबू और बुद्ध के साथ आनन्द जैसे कई व्यक्तित्व हैं जो निष्पक्ष रूप से परस्पर जुड़े हैं। ऐसा ही श्रद्धास्पद व्यक्तित्व है गुरुदेव हस्ती और हीरा का। उत्तराध्ययन सूत्र उठाओ या द्वादशांगी का कोई भी अंश, उसमें प्रभु महावीर के साथ जुड़े गौतम नज़र आयेंगे। हर शब्द में साधना के रूप में गौतम साक्षात् हैं। गुरु भगवंत हस्ती की हर साधना में गुरुदेव हीरा भी प्रभु महावीर के गौतम की तरह साक्षात् हैं।

गुरु हस्ती के साधना यज्ञ में अपने जीवन के स्वर्णिम क्षणों की सम्पूर्ण रूप से आहुति देने वाले अगर कोई रहे तो वे 'गुरुदेव हीरा' ही थे।

साहित्य सृजन में मनोयोगपूर्वक सहयोग देकर उत्साह को द्विगुणित करने वाले कोई थे तो वे 'गुरुदेव हीरा' ही थे।

सफल संघ संचालन में सशक्त आलंबन बनकर, दृढ़तम धैर्य बांधनेवाले अगर कोई थे तो वे 'गुरुदेव हीरा' ही थे।

संथारा महोत्सव में गुरु के देह के साथ-सांथ अपनी समस्त इच्छाओं का व्युत्सर्ग करा देने वाले कोई थे तो वे 'गुरुदेव हीरा' ही थे।

आगम हो या आज्ञा, आराधना हो या उपासना, स्वाध्याय हो या सेवा, एकान्त हो या परिषदा, दिन हो या रात, हरक्षण हीरा सामने रहते और कार्य में लगे रहते। अपने गुरु के प्रति आपका अहोभाव, आत्मीयभाव सतत वर्धमान रहा। जब तक गुरु थे, तब तक मात्र एक चातुर्मास आपने अपने गुरु से अलग किया और वह भी शायद गुरु के प्रेम का ही परिज्ञापन था। और चातुर्मास पूर्ण होते-होते तो गुरु ने आपको अपने पास बुला ही लिया। आपकी

सेवा, सरलता, सादगी, छोटे-बड़े संतों के हृदय में स्थायी स्थान बना गयी थी और गुरु हस्ती भी आपकी करुणा-वत्सलता, सदायशता को देखकर रीझ गये थे। तभी तो सुयोग्य और विनीत जानकर, गुरु ने आपको हरदम अपने समीप रखा। आप अन्तेवासी शिष्य बनकर सदैव गुरु की सुखद शीतल छत्रछाया में रहे। गुरु के प्रति आपका अहोभाव, समर्पण भाव सदैव वर्धमान रहा।

ज्ञान-दर्शन-चारित्र का अहं व्यर्थ हो सकता है, पर सेवा कभी व्यर्थ नहीं हो सकती। सेवा में गुरु कृपा है, सेवक के जीवन में हमेशा ऋद्धि संपदा का वास होता है। आपने गुरु की कृपा पायी और अष्ट संपदावान बन गए। दीक्षा के पूर्व ही गुरु हस्ती ने आपको सत्यदृष्टि, विवेक, रसास्वादविजय और स्वाध्यायनिष्ठा की चौभंगी में पूर्ण कर दिया था। गुरु के नेतृत्व और अनुशासन में रहकर आपने खूब आध्यात्मिक विकास किया और आज आप संघ की आँखों के तारे-सितारे बन गए।

धन्य हुए हम.....

इस संसार में जिसके पास एक-दो रत्न हैं वह भी अपने को, दुनियाँ का सबसे ऊँचा व्यक्ति मानता है, क्योंकि रत्नों की राशि का अपने पास होने का अहसास ही कुछ निराला होता है। तो जिसके पास कोहिनूर जैसा तेजस्वी हीरा हो तो उसके पुण्य का कहना ही क्या? 'गुरुदेव हीरा' स्वयं रत्नवंश के अद्वितीय रत्न हैं और आपका जीवन भी रत्नों का भरा खजाना है। हीरे की प्रमुख तीन विशेषताएँ होती हैं- **1. हीरा दुर्लभ है-** कहा भी है- **दुर्लभं भवति हीरकं** सचमुच हीरा दुर्लभ है और उसमें भी कोहिनूर हीरा तो अत्यधिक दुर्लभ है। गुरुदेव हीरा जैसा संयम का सफल और सजग नेता मिलना संप्रति दुर्लभ है। **2. मूल्यवान है-** हीरा तो मूल्यवान है, पर जड़ हीरे की कीमत आंकने वाला चैतन्य हीरा तो अमूल्य है। गुरुदेव हीरा का संयम, यम-नियम, सब कुछ अमूल्य है। चक्रवर्ती की समस्त संपदा, देवलोक की संपूर्ण ऋद्धि-ऐश्वर्य भी इनके संयमी जीवन के एक-एक पल के समक्ष मूल्यहीन है। भगवती सूत्र कहता है- 12 माह संयम का विधिवत् पालन करने वाली संयमी आत्मा सर्वार्थसिद्धि के सुखों का उल्लंघन कर देती है। **3. वह सतत प्रकाशमान रहता है-** गुरुदेव भी 17 भेदे संयम से सतत प्रकाशमान हैं। सचमुच हर पत्थर हीरा नहीं होता और हर हीरा भी कोहिनूर नहीं होता।

धन्य हैं गुरुदेव! और गुरुदेव से भी ज्यादा धन्य हैं हम, जो इस पंचम आरे में चतुर्थ आरे जैसे सरल, निश्छल, निर्मल, निर्विकार गुरु की दिव्य सन्निधि मिली।

(क्रमशः)

Research Paper

Concept of *Śrutajñāna* *

Dr Dharmchand Jain

Śrutajñāna is an important knowledge which leads a person to salvation from sorrows. It has been compared with pure and perfect knowledge (*kevalajñāna*) with a slight difference that *kevalajñāna* is a direct perceptual knowledge, whereas *Śrutajñāna* is considered as indirect (*parokṣa*) knowledge. Its importance has been mentioned by Kundakunda in *Samayasāra*[1] and in *Pravacanasāra*[2] that a person who knows a pure soul through *Śrutajñāna* is considered as *śrutakevalin* by enlightened persons. *Kevalin* directly knows all the substances and their modes whereas *śrutajñānin* knows these through *śrutajñāna.*[3] Kundakunda says that the person who knows the self is called *Śrutakevalin.* In this way *śruta* is very much important for the development of a soul. What is *śruta*? *śruta* is considered as *āgamas* or canons uttered by *kevalins.* The *āgamas* are in verbal form, hence that verbal or scriptural form of knowledge is also considered as *śrutajñāna.* Actually, Scriptural knowledge is a source or instrumental cause of actual *śrutajñāna,* which is experienced by a soul. Verbal scriptures are the instrumental cause for generating the *śrutajñāna.* Here Jinabhadragaṇi in his *Viśeṣāvaśyakabhāṣya* says that every verbal knowledge is not a *śrutajñāna,* the knowledge which takes place due to *śruta* i.e. canonical literature or *āptopadeśa* is called as *śrutajñāna.* Other verbal knowledge is mainly a *matijñāna. Matijñāna* is a knowledge generated through sense organs, mind or by both.

Nature of Śrutajñāna

Umāsvāti provides synonyms of *śrutajñāna* in Tattvārthādhigama bhāṣya as-"*āptavacana, āgama, upadeśa, eitihya, āmnāya, pravacana, jinavacana*"[4]. All these synonyms establish that the sermons of *jinas* or

*Presented in the World Sanskrit Conference, Delhi organized from5th to 10th January, 2012

the perfect authentic persons who have conquered the passions of attachment (*rāga*) and aversion (*dveṣa*) is considered as *śrutajñāna* . This is a *dravyaśruta* and it can lead *bhāvaśrutajñāna* in a person who conceives the meaning of that *dravyaśruta.*

This *śrutajñāna* has two aspects. First, when it is spoken by an authentic person, and another, when it is understood by a listener for attainment of his own knowledge. Both these have been considered as śrutajñāna. If the speeches or statements have a written or published form, then also people consider it as *śruta,* because it may be an instrument for producing *śrutajñāna* in a soul. This śrutajñāna is also a result of subsidence-cum-destruction of *śrutajñānavaraṇa* karma.

The word '*śruta*' bears resemblance with the word '*śruti*' used for Vedas. Both of these have the same characteristic of verbal testimony. According to *Mīmāṃsaka*s, there is no creator of *śruti* or *Veda*s, whereas *Naiyāyika*s consider that the God is the creator of *Veda*s, but in Jaina philosophy when a *Kevalin* or *Tīrthaṅkara* expresses the truth for the welfare of all living beings, then it is called as *śruta,* and when its meaning or message is experienced by someone then it is called *śrutajñāna.* One more interesting point is that *śruti* is not considered in every living being as an essential element, whereas *śrutajñāna* is essentially accepted in every living being. It is another thing that due to perverted attitude it may be *śruta-ajñāna.*

It has been accepted that *śrutajñāna* takes place after *matijñāna.* In *Tattvārthasūtra,* its commentaries and *viśeṣāvaśyakabhāṣya,* it has been propounded that *śrutajñāna* takes place after *matijñāna.*[5] *Matijñāna* has been considered as an efficient cause of *śrutajñāna.* Here, a question has been raised by Pūjyapāda Devanandi in his *Sarvārthasiddhi* that if śruta is manifested after *matijñāna* then it should also be *mati,* because *'kāraṇasadṛśaṃ hi loke kāryaṃ dṛṣṭaṃ'*, an effect comes out similar to its cause, but in the view of Pūjyapāda Devanandi it is not always true, for instance stick (*daṇḍa*) is an instrumental cause for making an earthen pot but the stick (*daṇḍa*) does not turn into pot. Similarly, *matijñāna* is not converted into *śrutajñāna,* but it becomes instrumental cause for producing

śrutajñāna. Even in the presence of *matijñāna, śrutajñāna* may not appear due to effect of *śrutajñānavaraṇa*. Subsidence-cum-destruction of śrutajñānāvaraṇa *karma* is also essential for the manifestation of *śrutajñāna.*[6]

In *viśeṣāvaśyakabhāṣya* Jinabhadraganin kṣamāśramaṇa supports the notion that *śrutajñāna* is preceded by matijñāna '*maipuvvaṃ suyaṃ*' and he applies various meanings of word *'purva'* which is derived from the root *pṛ pālanpūraṇayoḥ.* He says that word '*pūrva*' may be used to denote the meaning of causing, guarding, nourishing, protecting etc. *Matijñāna* is an efficient cause of *śrutajñāna* and it also nourishes and protects the same. He also says that *śruta* is obtained, and it can be distributed to others through *matijñāna.* In the absence of *matijñāna śrutajñāna* cannot be preserved.[7]

Bhaṭṭa Akalaṅka in his *Tattvārthavārtika* raises a question that if *śruta* is caused by *mati,* then there is a beginning of *śruta* and which has beginning, has its end also. In this way canonical notion that '*śruta* has no beginning and no end' is defeated. Here he answers that for a particular person or situation it may have beginning but in universal point of view *śruta* is always present.[8]

Although *śrutajñāna* has been defined as verbal cognition conceived from the words known through *matijñāna,* but it is not limited upto the cognition of words. Vidyānanda explained it that knowledge manifested through sense organs and quasi-sense is instrumental cause of *śrutajñāna.* In this way knowledge manifested through touch-sense, gustatory sense, olfactory sense and sense of vision may also lead to *śrutajñāna.*[9] *Śrutajñāna* is a later stage of *matijñāna.* Even a knowledge originated through mind can also lead to *śrutajñāna.* It is also different from memory, recognition, concomitance and inference. *Śrutajñāna* is indirect pure knowledge by which a person becomes able to know the obstructed, distant and the subtle substances. Due to this characteristic of knowing the knower is called a *śrutakevali.*

Difference between *Matijñāna* and *Śrutajñāna*

Umāsvāti in his *Tattvārthādhigamabhāṣya* differentiates

śrutajñāna from *matijñāna* in the following words- "*utpannāvinaṣṭārthagrāhakaṃ sāmpratakālaviṣayaṃ matijñānam Śrutajñānaṃ tu trikālaviṣayam. Utpannavinaṣṭānutpannārthagrāhakam*"[10] This clarifies that *matijñāna* or *ābhinibodhika jñāna* deals with only the things which exist in the present whereas *śrutajñāna* deals with the objects of all three times present, past and future. A question arises here that memory (*smṛti*) is also a kind of *matijñāna* and it deals with the past, then how it can be said that *mati* is limited upto present objects? Haribhadra replied to this question in his *Tattvārthavṛtti* that memory (*smṛti*) is nothing than the knowledge of the things known in previously present. He tells- "*smṛteratītaviṣayatvānna sarvamevaṃvidhamiti cet, na, sāmpratakālagṛhītātiriktasya kasyacidasmaraṇāt.*"[11]

One more characteristic of *śrutajñāna* has been pointed out by Umāsvāti that it has more clarity then *matijñāna*.[12] Haribhadra explains that *śrutajñāna* may deal with the obstructed, distant and subtle objects , hence that has more clarity.[13]

One another differentiating characteristic between these two knowledges, according to *Tattvārthabhāṣya* is that *śrutajñāna* has wider objectivity than *matijñāna*. He gives two arguments in the support, the first, that *śrutajñāna* is produced by omniscient and the second that it deals with infinite knowables. [14]

According to canonical notion every living being has at least two knowledges, i.e. *matijñāna* and *śrutajñāna* or in the absence of right view (*samyaktva*) *mati-ajñāna* and *śruta-ajñāna*. If we consider *śrutajñāna* as verbal or scriptural knowledge, then it never appears in the one sensed to four sensed living beings and in some of the five sensed beings also. A few human beings can have this scriptural *śrutajñāna*. Jinabhadra, in his *Viśeṣāvaśyakabhāṣya* has given a solution to this problem that every living being can have *bhāvaśrutajñāna*. He propounds two kinds of *śrutajñāna* as *drāvyaśrutajñāna* and *bhāvaśrutajñāna*. *Dravyaśrutajñāna* is a verbal knowledge and *bhāvaśrutajñāna* is experienced through it, but somewhere *bhavaśrutajñāna* is experienced without *dravyaśruta* also,

as in the case of one sensed to four sensed living beings. It is also propounded as *labdhyakṣara śrutajñāna*. This kind of *akṣarśrutajñāna* is a minimum qualification of a soul without which a soul cannot remain a living being. That may turn into non-living thing.[15]

Importance of *Śrutajñāna*

Śrutajñāna is important for emancipation. When right view, right knowledge and right conduct are considered as the path of emancipation, role of *śrutajñāna* as right knowledge is considered significant. Although matijñāna, avadhijñāna and *manaḥparyayajñāna* are also the right knowledge but *śrutajñāna* is more important for the achievement of *kevalajñāna* and emancipation from sorrows. *Śrutajñāna* may be defined as *ātma-jñāna* or knowledge of the self. *Matijñāna* has a limit to know the outer world, but it can help in manifestation of *śrutajñāna* which is an instrument to know the self. It is not produced through sense-organs. *Tattvārthasūtra* says- "*śrutamanīndriyasya*".[16] Here '*anīndriya*' word denotes mind and soul. It can be called as *ātmajñāna*. Thus *śrutajñāna* is produced through mind and soul. It is the only knowledge which is important for conquering one self. It shows us that attachment and aversion are not beneficial for a soul. Samaṇasuttaṃ Mentions-

jeṇa taccaṃ vibujjhejja, jeṇa cittaṃ nirujjhadi
jeṇa attā visujjhejja, taṃ ṇāṇaṃ jiṇasāsaṇe
jeṇa rāgā virajejja, jeṇa seasu rajjadi
jeṇa mittī pabhāvejja, taṃ ṇāṇaṃ jiṇasāsaṇe.[17]

The knowledge by which ultimate truth is known, mind is restrained and soul is purified, is the right knowledge in Jaina tradition. The knowledge, by which a person gets detachment from worldly things and is attracted towards auspicious things and friendliness to the all beings is considered as right knowledge in Jain tradition. This knowledge can be named as *śrutajñāna*. *Śrutajñāna* is an inner light of one self which leads him to right conduct. *Acārānga sūtra* says- "*Je ātā se viṇṇātā, je viṇṇātā, se ātā*".[18] A soul is a knower and a knower is a soul. Knowledge is a power to cognize the things and oneself and it is never destroyed. It is important to note that *śrutajñāna* is never fully obscured. It is

experienced by every soul in some way. It has been accepted in *Viśeṣāvaśyakabhāṣya* and in other texts of *Śvetāmbara* and *Digambara* sects that according to the canonical tradition an infinitesimal part of *kevalajñāna* or *śrutajñāna* is always unobscured in a soul. [19]

Viśeṣāvaśyakabhāṣya propounds that *śrutajñāna* is actually a soul- "suyaṃ tu paramatthao jīvo ."[20] It is a characteristic of a soul in the view of Tīrthaṅkaras as Mallavādi says- *ātmanaḥ pariṇāmaśca śrutajñānamiśyate.*[21]

Kinds of *Śrutajñāna*

The *Nandī sūtra* and *Āvaśyakaniryukti* mention the following fourteen categories of *śrutajñāna*:

1. *Akṣara śruta* - It is imperishable and divided into three types- *saṃjñakṣara, vyañjanākṣara* and *labdhyakṣara. Saṃjñakṣara* means a particular shape and form of the letter of script. All the words of different languages with particular meaning are called *vyañjanākṣara. Labdhyākṣara* is the minimum characteristic of a living being and it is considered as *bhāva śruta.*
2. *Anakṣaraśruta*- It is defined as the symbols of bodily activities. Bhaṭṭa Akalanka includes inferential knowledge in it.
3. *Saṁjñīśruta*- It is defined as mental power of retaining the past experiences and speculation in future plans etc.,
4. *Asaṁjñīśruta*- Contrary to *Saṁjñīśruta* is called *asaṁjñīśruta*
5. *Samyak śruta*- the scriptures composed by the *gaṇadharas* or other *ācāryas* having the knowledge of 10 *pūrvas* is called *samyak śruta.*
6. *Mithyāśruta*- Non-jaina scriptures like *Mahābhārata, Rāmāyaṇa* are called as *Mithyāśruta*, but this is not a proper notion. In the absence of right view every scripture may be *mithyāśruta* for a person.
7. *Sādi śruta*- According to the *paryāyārthika naya śrutajñāna* may have a beginning.
8. *Anādi śruta*- According to *dravyārthika naya śrutajñāna* is not having any beginning.
9. *Saparyavasita*- In the view of *paryāyārthika naya* it can have an

end.

10. *Aparyavasita*- In the view of dravyārthika naya it is endless.
11. *Gamika*- The *śruta* which repeats the same text again and again is known as *gamika śruta. Dṛṣṭivadā* is considered in this category.
12. *Agamika*- The *śruta* composed in various meters and prose is *agamika*. It is also known as *kālika śruta.*
13. *Aṅgapraviṣṭa*- Twelve-*āgamas* composed by gaṇadharas are called as *aṅgapraviṣṭa śruta.*
14. *Anaṅgapraviṣṭa*- The *āgamas* composed by the *ācāryas* other than gaṇadharas are called as *anaṇgapraviṣṭa śruta* or *aṅgabāhya śruta. Ṣaṭkhaṇḍāgama* defines *śrutajñāna* on the basis of alphabets and their mutual combination and provides 20 types of *śrutajñāna*[22] as- 1. *Paryāya*, 2. *Paryāya samāsa*, 3. *Akṣara*, 4. *Akṣara samāsa*, 5. *Pada*, 6. *Pada samāsa*, 7. *Saṇghāta*, 8. *Saṇghāta samāsa*, 9. *Partipatti*, 10. *Paratipatti samāsa*, 11. *Anuyogadvāra*, 12. *Anuyogadvāra samāsa*, 13. *Prābhṛta Prābhṛta*, 14. *Prābhṛta prābhṛta samāsa*, 15. *Prābhṛta* 16. *Prābhṛta samāsa*, 17. *Vastu*, 18. *Vastu samāsa*, 19. *Pūrva* and 20. *Pūrva samāsa*

Here, Virasena in his Dhavalā commentary defines akṣara śrutajñāna as eternal knowledge which is never obscured even in labhdhyaparyāptaka nigoda being.[23] *Labhdhyakṣara* knowledge is found incessant in every living being. In *Gommaṭasāra Jīvakāṇḍa*, it has been categorized under *paryāya śrutajñāna.*[24] *Digambara* and *Śvetāmbara* texts accept that this knowledge is always un-obscured in a living being and it is pre-requisite for a living being. This fact proves the eternal nature of *śrutajñāna.*

Śrutajñāna is quite different from *matijñāna* (sensuous knowledge). *Matijñāna* has stages of *avagraha*, *īha*, *avāya* and *dhāraṇa* knowledge and it requires sense organs, mind or both for its manifestation whereas *śrutajñāna* requires an inner light which leads a person to understand and experience the momentariness of worldly things. It is a self-knowledge by which a person becomes able to discriminate between the good (*śreya*) and covetable (*preya*). It tends a person to a real spiritual development. He can renunciate the worldly attractions. It can be called

as *prajña* (wisdom).

Conclusion

1. *Śrutajñāna* is an essential characteristic of every worldly soul. In the presence of right view it is considered as *samyag śrutajñāna* and in the presence of perverted view it is considered as *śruta-ajñāna.*
2. Generally *śrutajñāna* is considered as a verbal testimony. It includes scriptures, canons or sermons of an authentic teacher and the knowledge originated through them.
3. It is preceded by *matijñāna. Matijñāna* is manifested through sense organs and mind, whereas *śrutajñāna* requires the prior occurrence of *matijñāna.* This śrutajñāna comes into action after acquiring ability through the subsidence-cum-destruction of *śrutajñānavaraṇa.*
4. It is not generated only by verbal cause; every *matijñāna* may lead to *śrutajñāna. Matijñāna* is an instrumental cause and a soul itself is a natural cause for manifestation of śrutajñāna. According to Jinabhadragaṇi, *avadhijñāna* and *manaḥparyāya* jñāna may also be the instrumental causes of *śrutajñāna.*
5. *Śrutajñāna* is the only knowledge which has a similarity with *kevalajñāna* and which can lead the emancipation from all sorrows and the manifestation of *kevalajñāna.*
6. If *śrutajñāna* is accepted as verbal or scriptural knowledge, it is not possible in one-sensed to four-sensed living beings and in some of the five-sensed beings also. Hence, there must be a different nature of śrutajñāna. Jinabhadragaṇi has suggested that *bhāvaśrutajñāna* is found in the one sensed to four sensed living beings which can occur directly without *dravyaśruta* in those living beings.
7. *Śrutajñāna* is the knowledge which leads a person to decide distinction between the real needs and the futile wants in life. It enables a person in attaining detachment from the worldly allurements and motivates him to proceed towards the salvation from sorrows. It is a big power for spiritual development of a soul. When it is obscured or perverted, a soul cannot decide the right path.

Notes:-

1. Samayasāra, 1.9 :
   jo hi suyeṇahigacchai appāṇamiṇaṃ tu kevalaṃ suddhaṃ.

taṃ suyakevalimisiṇo bhaṇanti loyappaīvayarā.

2. Pravacanasāra, 1.33:
   jo hi sudeṇa vijāṇadi appaṇaṃ jāṇagaṃ sahāveṇa.
   taṃ suyakevalimisiṇo bhaṇanti loyappadīvayarā.
3. Gommaṭasāra, Jivakāṇḍa, verse, 369:
   sudakevalaṃ ca ṇāṇaṃ, doṇṇi vi sarisāṇi honti bohādo.
   sudaṇaṇaṃ tu parokkhaṃ, pacchakhaṃ kevalaṃ. ṇāṇam.
4. Śabhāṣya tattvārthādhigamasūtra, 1.20 : *"śrutamāptavacanāgama upadeśa eitihyamāmnāyaṃ pravacanaṃ jinavacanamityanarthānamaraṃ"*
5. (i) Tattvārthasūtra : 1.20- śrutaṃ matipūrvaṃ dyanekadvādaśabhedam:
   (ii) Viśeṣāvaśyakabhāṣya, verse 105: maipuvvaṃ suyaṃuttaṃ
6. Sarvārthasiddhi, p. 85
7. Viśeṣāvaśyakabhāṣya, verse 105 and 106:
   maipuvvaṃ suyamuttaṃ na maī suyapuvviyā visesoyaṃ.
   puvvaṃ pūraṇa-pālaṇabhāvāo jaṃ mai tassa.
   pūrijjai Pāvijjai dijjai vā jaṃ maieṇāmaiṇa.
   palijjai ya maie gahiyaṃ iharā paṇasejjā.
8. Tattvārthavārtika, 1.20.7
9. Tattvārtha ślokavārtika : 1.20.10
   matisāmānya nirdeśānna śrotra matipurvakaṃ.
   śrutaṃ niyamyate aśeṣamatipurvasya vīkṣaṇāt.
10. Tattvārthabhāṣya, 1.20
11. Hāribhadrīya Tattvārtha vṛtti on Tattvārtha sūtra. 1.20 p. 99
12. Sabhāṣyatattvārthādhigamasūtra 1.20 :
    śrutajñānaṃ tu trikālaviṣayaṃ viśuddhataraṃ ceti.
13. Hāribhadrīya Tattvārtha vṛtti 1.20, p.103
14. Sabhāṣyatattvārthādhigamasūtra 1.20 : sarvajñapraṇītatvādānantyacca jñeyasya śrutajñāṇaṃ. matijñānan mahāviṣayam.
15. see, Viśeṣāvaṣyakabhāṣya, verses 110 to 117
16. Tattvārtha sūtra 2.22
17. Samaṇasuttaṃ, verse 252 and 253
18. Acārāṅga sūtra, 1.5.5 sūtra 177
19. (1) Ṣaṭkhaṇḍāgam 5.5.48 : akkharassāṇantimo bhāgo ṇiccugghadio.
    (2)Gommaṭasāra (Jīvakāṇḍa, verse 320) : havadi hu savvajahaṇṇaṃ ṇiccugghadaṃ ṇirāvaraṇaṃ.
20. Viśeṣavaśyaka bhāṣya, verse 99
21. Vṛitti of Mallavādi on Viśeṣāvaśyaka bhāśya, verse 98
22. Ṣaṭkhandāgama 5.5.48

23. Dhavalā commentary on Ṣaṭkhaṇḍāgama 5.5.48:akkharassāṇantimabhāgo ṇiccugghadio.
24. see, Gommaṭasāra (Jīvakāṇḍa), verse 320

Reference Books

1. Acārāṅgasutra (first part), Āgama Prakashan Samati, Beawer, Fourth Edition, 2010
2. Gommtasāra (Jīvakāṇḍa) of Nemicandra, Shri Paramashruta Prabāvaka Maṇḍal, Agās, 1985
3. Pravacanasāra of kundakunda, Prākṛit, Shri Paramashrutra Prabhāvaka Maṇḍal, Agās, 1984
4. Sabhāṣya tattvārthādhigamasūtram of Umāsvati, shri Parama Shruta Prabhāvaka Maṇḍal, Agās, 1992
5. Samaṇasuttaṃ, Sarvasevā-sangha-Prakashan, Rajghat, Varanasi, 1975.
6. Samayasāra of Kundakunda, Shri Parama Shruta Prabhāvaka Maṇḍal, Agās. 1982
7. Sarvārthasiddhi or Pūjyapāda Devanardin, Bharatiya Jñāna piṭha, New Delhi, Fifteenth Edition, 2009
8. Shastri Indra Chandra, Jaina Epistemology, P.V. Research Institute, Varānasi, 1990
9. Shri Nandisutram, Samyagjñāna Pracharak Mandal, Jaipur, Second Edition 2009
10. Ṣaṭkhaṇḍāgama of Pushpadanta Bhūtabali with Dhavalā commentary of Virasena (Part 13), Ed. Heeralal Jain, Bhelasa, 1955
11. Tattvarthādhigamasūtram (with Commentary of Haribhadrasūri), Ed. Vijayanemi Chandra Sūri, Shri Harsh Puṣpāmṛta Jain Granthamāla, volume 369, Jamnagar, Vikram Samvat 2056
12. Tattvārtha sūtra of Umāsvāti, Annotated by pandit, Sukhlal Sanghavi, Parshvanatha Vidyapeetha, Varanasi, 2001
13. Tattvārthavārtika of Bhaṭṭa Akalaṅka, Ed.Mahendra Kumar Jain, Bharatiya Jñānpīṭha, New Delhi, Eighth Edition, 2008
14. Tattvārthślokavārtikālaṅkāra, Part 3, Hindi translation by Gaṇinī Supārshvamatī Mātāji, Kolkata, Vikram Saṃvat 2066
15. Viśeṣāvaśyakabhāṣya (Part-I), of Jinabhadragaṇi with commentary of Mallavādi, Divya Darshan Trust, 68, Gulalvādi, Mumbai, Vikram Saṃvat, 2039

-3k 24-25, Kudi Bhagatasani Housing Board,
Jodhpur-342005(Raj.)

शोधालेख

पंच समवाय सिद्धान्त : एक समीक्षा

डॉ. श्वेता जैन

पाँचवीं शती के आचार्य सिद्धसेन ने तीर्थंकर महावीर के उपदेशों के गर्भ में रहे हुए अनेकान्त सिद्धान्त की पुष्टि में कार्य-कारण की व्याख्या के अन्तर्गत पंचसमवाय के सिद्धान्त का बीजारोपण करते हुए कहा है-

कालो सहाव णियई पुव्वकयं पुरिसे कारणेगंता।
मिच्छत्तं ते चेव उ समासओ होंति सम्मत्तं।।

-सन्मतितर्क, तृतीय काण्ड, सूत्र-53

काल, स्वभाव, नियति, पूर्वकृत (कर्म) एवं पुरुष (चेतन तत्त्व, आत्मा, जीव)- इन्हें एकान्त कारण मानने पर ये मिथ्यात्व के द्योतक हैं तथा इनका सामासिक या समवाय रूप सम्यक्त्व कहलाता है।

कालादि प्रत्येक कारण को सम्पूर्ण कारण मानने की एकान्तवादी विचारधाराएँ कालवाद, स्वभाववाद, नियतिवाद, कर्मवाद एवं पुरुषवाद या पुरुषार्थवाद के नाम से प्रचलित रही हैं। कालवादी कहते हैं-**''काल: पचति भूतानि काल: संहरते प्रजा:। काल: सुप्तेषु जागर्ति, कालो हि दुरतिक्रम:**[1] अर्थात् काल ही पृथ्वी आदि भूतों का परिणमन करता है, काल ही प्रजा (जीवों) को पूर्व पर्याय से प्रच्यवित कर अन्य पर्याय में स्थापित करता है, काल ही लोगों के सो जाने पर जागता है, इसलिए काल की कारणता का अपाकरण सम्भव नहीं है। स्वभाववादी कहते हैं-**'स्वभावाज्जायते सर्वं**[2] अर्थात् स्वभाव से ही सब उत्पन्न होते हैं। नियतिवादी का मानना है- **''प्राप्तव्यो नियतिबलाश्रयेण योऽर्थ:, सोऽवश्यं भवति नृणां शुभाऽशुभो वा। भूतानां महति कृतेऽपि हि प्रयत्ने, नाभाव्यं भवति न भाविनोऽस्ति नाश:।।**[3] अर्थात् जो पदार्थ नियति के बल के आश्रय से प्राप्तव्य होता है, वह शुभ या अशुभ पदार्थ मनुष्यों को अवश्य प्राप्त होता है। प्राणियों के द्वारा महान् प्रयत्न करने पर भी अभाव्य कभी नहीं होता और भावी का नाश नहीं होता है। पूर्वकृत कर्मवादी समस्त कार्यों के प्रति पूर्वकृत कर्म को ही कारण स्वीकार करते हैं। अत: महाभारत में कहा है-**''सर्वे कर्मवशा वयम्''** हम सभी कर्माधीन हैं। पुरुषवाद में पुरुष शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है-1. सृष्टिकर्ता पुरुष के अर्थ में, 2. पुरुषकार या पुरुषार्थ के अर्थ में। प्रथम अर्थ में ब्रह्मवादी ब्रह्म को एवं ईश्वरवादी ईश्वररूपी

सर्वशक्तिमान पुरुष को सभी कार्यों का कर्ता स्वीकार करते हैं। द्वितीय अर्थ में पुरुषार्थ को ही एकमात्र कारण माना जाता है। इस प्रकार की ऐकान्तिक कारणता सिद्धसेन को मान्य नहीं है। अत: पंच कारणों का समन्वय कर उन्होंने कार्य के प्रति काल, स्वभाव, नियति, पूर्वकृतकर्म और पुरुष-इन सबकी कथंचित् कारणता स्वीकार की है। विद्वान् आचार्य श्री के इसी चिन्तन पर 'पंच समवाय' सिद्धान्त आधृत है।

पंच समवाय की ऐतिहासिकता

सिद्धसेनसूरि ने काल आदि पाँच कारणों के एकान्त को मिथ्या एवं समास (समन्वित रूप) को सम्यक्त्व अवश्य कहा, किन्तु उन्होंने 'पंच समवाय' शब्द का प्रयोग नहीं किया है। 'पंच समवाय' शब्द का प्रथम प्रयोग 19 वीं शती में रचित साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। उसके पूर्व समवाय के लिए समुदाय, समुदित, कलाप आदि शब्दों का प्रयोग प्राप्त होता है।

पंच कारणों को सम्मिलित रूप से स्वीकार करने की परम्परा को प्रमुख श्वेताम्बर जैन दार्शनिक हरिभद्रसूरि (आठवीं शती) ने आगे बढ़ाया है। उन्होंने शास्त्रवार्तासमुच्चय में कालादि के समुदाय को कारण मानने के मत का समर्थन करते हुए कहा है-**''अत: कालादय: सर्वे समुदायेन कारणम्''**[4] (शास्त्रवार्तासमुच्चय 2.79) हरिभद्रसूरि ने अपनी अन्य कृतियाँ धर्मबिन्दु[5] (2.68), बीजविंशिका[6] (श्लोक 9), उपदेश पद (गाथा 165)[7] में पाँचों कारणों का समन्वय किया है। उपदेशपद में उन्होंने समवाय के अर्थ में कलाप शब्द का प्रयोग किया है।

हरिभद्रसूरि के अनन्तर शीलांकाचार्य (9-10 वीं शती) ने सूत्रकृतांग की टीका में काल आदि पंच कारणों की चर्चा करते हुए उनकी एकांत कारणता का निरसन किया है तथा उनके समुदित स्वरूप को स्वीकार किया है-**''कालादीनामपि समुदितानां परस्परव्यपेक्षाणाम्''**[8]। दसवीं शती में अभयदेवसूरि ने सन्मतितर्क पर रचित अपनी तत्त्वबोधविधायिनी टीका में पंच कारणों की विस्तृत चर्चा की है। बारहवीं-तेरहवीं शती में मल्लधारी राजशेखरसूरि, सतरहवीं शती में उपाध्याय यशोविजय और उपाध्याय विनयविजय ने अपनी कृतियों में काल आदि पाँच कारणों को स्थान दिया है।

19 वीं शती में स्थानकवासी परम्परा के संत श्री तिलोकऋषि ने सवैया छन्द में पंचवादी-स्वरूप विषयक काव्य के अन्तर्गत काल आदि पाँच मतों का विस्तार से निरूपण करते हुए अन्त में पंच समवाय सिद्धान्त की प्ररूपणा की है। इनकी कृति में 'पंच समवाय' शब्द का प्रयोग अनेक बार हुआ है। मुझे अधीत ग्रन्थों में 'पंच समवाय' शब्द का स्पष्टत:

प्रथम प्रयोग इनकी रचना में प्राप्त हुआ है। सम्भव है उनके समय में यह शब्द प्रसिद्ध हो चुका था। पंच समवाय की सिद्धि में वे लिखते हैं-

पंच समवाय मिल्या होत है कारज सब,
एक समवाय मिल्या कारज न होइए।
पंच समवाय माने सो ही समदृष्टि जीव,
अनुभो लगाय दूर दृष्टि कर जोइए।।

-तिलोक काव्य कल्पतरू, पंचवादी स्वरूप, पृ. 105

बीसवीं शती में शतावधानी रत्नचन्द्र जी महाराज ने 'कारण-संवाद' नामक अपनी कृति में राजा, मंत्री, पंडित, कालवादी, स्वभाववादी, नियतिवादी, पूर्वकृत कर्मवादी और पुरुषार्थवादी को पात्र बनाकर रोचक संवाद प्रस्तुत किया है। इसी शती के कानजी स्वामी ने कालनय, स्वभावनय नियतिनय, पूर्वकृत कर्मनय और पुरुषार्थनय के आधार पर पंच समवाय सिद्धान्त का निरूपण किया है। आचार्य श्री विजयलक्ष्मीसूरीश्वर जी ने अपनी कृति 'उपदेश प्रासाद' में, मुनि न्यायविजय ने 'जैन दर्शन' में, आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. ने 'गजेन्द्र मुक्तावली के भाग-2 में इसकी चर्चा की है। आचार्य श्री विजयराज जी म.सा., श्रुतधर श्री प्रकाशमुनि जी आदि संत-प्रवरों के प्रवचनों में तथा आचार्य महाप्रज्ञ के ग्रन्थों में भी कारणपंचक की सापेक्षता स्वीकार की गई है। आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरि जी महाराज ने पति-पत्नी, पिता-पुत्र, सास-बहू आदि के बीच में उत्पन्न होने वाली समस्याओं के निराकरण में पंच समवाय के सिद्धान्त को आधार बनाया है। पं. दलसुख मालवणिया, डॉ. सागरमल जैन, डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल आदि विश्रुत विद्वानों ने भी इस सिद्धान्त की पुष्टि में लेखन किया है।

ऐतिहासिक सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि पंचसमवाय सिद्धान्त का अनेकान्त के धरातल पर रोपण हुआ है। ऐसे भी कहा जा सकता है कि तत्कालीन प्रसारित सिद्धान्तों में अनेकान्त दृष्टि से समन्वय स्थापित कर 'पंचसमवाय' का स्वरूप अवस्थित हुआ है। पांचवीं शती में जब इसका बीजारोपण हो गया तो बाद की शती के आचार्यों ने भी इस सिद्धान्त के समर्थन में तर्क देकर इसको विकसित किया। जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण, हरिभद्रसूरि, शीलांकाचार्य, अभयदेवसूरि आदि प्रबुद्ध आचार्यों ने तर्कपूर्वक कालवाद आदि पंच कारणों की ऐकान्तिकता का खण्डन कर इनकी कथंचित् कारणता को स्वीकार किया। उन्नीसवीं शती में यह पंच समवाय काव्यस्वरूप में बीसवीं शती में नाट्य शैली में जनग्राह्य बना। इस प्रकार पंचसमवाय का यह सिद्धान्त सूत्र शैली में, खण्डन की दार्शनिक शैली में, काव्य की माधुर्य शैली में और नाट्य की हृदयाकर्षक शैली में निबद्ध होकर

जिज्ञासु और विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत होता गया। विद्वानों के बुद्धिनिकष पर अवतरित हुआ यह सिद्धान्त कई दृष्टियों से चिन्तन का विषय बना।'

जैनदर्शन के कारण-कार्य सिद्धान्त में पंचसमवाय का स्थान

अनेकान्तवादी जैनदार्शनिकों ने कारण-कार्यवाद पर विभिन्न दृष्टियों से ध्यान आकृष्ट करते हुए कारणता के विविध रूपों पर विचार किया है, यथा-

1. द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव और भव की कारणता
2. षट्कारकों की कारणता
3. षड्द्रव्यों की कारणता
4. निमित्त और उपादान की कारणता
5. पंचसमवाय की कारणता

द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव की कारणता पर विचार जैन दार्शनिकों का अपना मौलिक योगदान है। वे इन चार कारणों को आधार बनाकर समस्त कारण-कार्य सिद्धान्त की व्याख्या करते हैं। अजीव द्रव्यों में घटित होने वाले कार्यों में इन चारों कारणों का व्यापक दृष्टि से विचार किया गया है। जीव में घटित होने वाले कार्यों के प्रति भव की कारणता को भी अंगीकार किया गया है। नारक, तिर्यक्, मनुष्य और देव भव विभिन्न कार्यों के विशिष्ट कारण होते हैं।

विशेषावश्यकभाष्य में जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान एवं अधिकरण इन छह कारकों की कारणता को प्रतिपादित कर अनेकान्त दृष्टि का परिचय दिया है।

जैन दार्शनिकों ने धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीवास्तिकाय और काल द्रव्य की कारणता पर भी विचार किया है। इन षड्द्रव्यों के अपने उपग्रह या उपकार हैं। वे ही उनके कार्य हैं जो अन्य द्रव्यों के कार्यों में भी सहायक बनते हैं।

उपादान और निमित्त कारणों के रूप में भी जैन दार्शनिकों ने कारण-कार्य सिद्धान्त की व्याख्या की है। आगम वाङ्मय में उपादान और निमित्त शब्दों का प्रयोग नहीं हुआ है, किन्तु उत्तरवर्ती दार्शनिकों ने इन्हें जैन दर्शन में यथोचित स्थान दिया है।

कारण-कार्यवाद के इतने सिद्धान्तों के उपलब्ध होने पर भी 'पंचसमवाय' सिद्धान्त ने अपना विशिष्ट स्थान जैनदर्शन में बना लिया है। 'पंच-समवाय' सिद्धान्त वर्तमान परिप्रेक्ष्य के अनुरूप जीवन की दैनिक घटनाओं की कारणता को व्याख्यायित करने में समर्थ तथा सामान्य जनग्राह्य भाषा में निहित होने से अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त

आगम प्रमाणों से इस सिद्धान्त की पुष्टि सम्भव होने से पाँचवीं शती में स्थापित यह सिद्धान्त किसी भी आचार्य, चिन्तक और विद्वान् के द्वारा खण्डन के योग्य नहीं माना गया। इस सिद्धान्त के सम्बन्ध में सभी जैन सम्प्रदाय एकमत हैं। एकता और समन्वय को स्थापित करने वाला यह सिद्धान्त अधुना जैनदर्शन का महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त बन गया है।

पंचसमवाय का स्वरूप

'पंच समवाय' सिद्धान्त पाँच कारणों का योग (समूह) है। 'पंच समवाय' को पूर्णरूपेण समझने के लिए काल, स्वभाव, नियति, पूर्वकृत कर्म और पुरुष/पुरुषार्थ की ऐकान्तिक कारणता में उत्पन्न दोषों और पंचसमवाय की कथंचित् कारणता को समझना अनिवार्य है। ऐकान्तिक कारणता यहाँ 'वाद' शब्द से द्योतित है, यथा-कालवाद, स्वभाववाद, नियतिवाद, कर्मवाद और पुरुषवाद/पुरुषार्थवाद। खण्डन के अन्तर्गत दोष का निरूपण किया गया है और कथंचित् कारणता के रूप में पंचसमवाय में काल, स्वभाव आदि की अवस्थिति निरूपित है। अतः यहाँ पाँचों कारणों की ऐकान्तिकता, उनके खण्डन और कथञ्चित् कारणता को बतलाने का प्रयास किया जा रहा है-

कालवाद : काल की ऐकान्तिक कारणता सम्बन्धी मत

कालवाद के अनुसार एक मात्र काल ही समस्त कार्यों का कारण है। कालवाद के सम्बन्ध में कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। इस सिद्धान्त को लेकर किसी ग्रन्थ की रचना की गई हो, ऐसा भी उल्लेख नहीं मिलता और न ही इस सिद्धान्त के प्रवर्तक का नामोल्लेख मिलता है। कालवाद किसी एक व्यक्ति की मान्यता न होकर सामूहिक मान्यता बन गई थी, ऐसा प्रतीत होता है। कालवाद की मान्यता के सम्बन्ध में निम्नांकित श्लोक महाभारत, अभयदेव की सन्मतितर्क टीका, सूत्रकृतांग पर शीलांकाचार्य की टीका, हरिभद्रसूरि विरचित शास्त्रवार्तासमुच्चय आदि ग्रन्थों में मिलता है-

काल: पचति भूतानि, काल: संहरते प्रजा:।
काल: सुप्तेषु जागर्ति, कालो हि दुरतिक्रम:।।

अर्थात् काल ही पृथ्वी आदि भूतों का परिणमन करता है। काल ही प्रजा का संहार करता है। काल ही लोगों के सो जाने पर जागता है, इसलिए काल की कारणता अनुल्लंघनीय है।

कालवाद की प्राचीनता का अनुमान करना कठिन है। अथर्ववेद के उन्नीसवें काण्ड के 53-54 वें सूक्त 'कालसूक्त' नाम से प्रसिद्ध हैं। ये कालसूक्त ही कालवाद के उद्गम के स्रोत प्रतीत होते हैं। इनमें निहित काल तत्त्व का ही विकास उपनिषद्, पुराण, महाभारत,

ज्योतिर्विद्या आदि में हुआ है।

जैनदर्शन में भी काल की कारणता को स्वीकार किया गया है, किन्तु यह कारणता कालवाद में मान्य ऐकान्तिक कारणता से भिन्न है। आचार्य मल्लवादी क्षमाश्रमण, हरिभद्रसूरि, शीलांकाचार्य एवं अभयदेवसूरि ने अपने ग्रन्थों में कालवाद की मान्यता को पूर्वपक्ष में उपस्थापित कर उत्तरपक्ष के रूप में उसका खण्डन किया है।

कालवाद के प्रमुख तर्क

1. काल कार्य के प्रति नियत पूर्ववर्ती है, इसलिए एकमात्र वही कार्य का कारण है।
2. काल को कार्य का यदि असाधारण (एकमात्र) कारण न माना जाएगा तो गर्भादि सभी कार्यों की उत्पत्ति अव्यवस्थित हो जाएगी।
3. काल नित्य एवं एकरूप है। काल-कारण की सभी कार्यों के साथ अन्वय-व्यतिरेक व्याप्ति होती है। अत: जहाँ-जहाँ कारण है वहाँ-वहाँ कार्य घटित होते हैं तथा काल के अभाव में कोई कार्य घटित नहीं होता।

जैन दर्शन के अनुसार कालवाद का खण्डन

1. मल्लवादी क्षमाश्रमण कहते हैं कि कूटस्थ काल (नित्य एवं एकरूप) में परमार्थत: कारण-कार्य का विभाग नहीं हो सकता। कारण-कार्य का विभाग नहीं होने से व्यवहार की व्यवस्था भी नहीं बन सकती।
2. हरिभद्रसूरि का तर्क है कि एकमात्र काल को कारण नहीं माना जा सकता, क्योंकि काल रूपी कारण के समान रूप से उपस्थित होने पर भी कार्य समान नहीं देखे जाते, इसलिए अन्य हेतु भी अपेक्षित हैं। काल को ही कारण मानने पर जहाँ मिट्टी नहीं है वहाँ भी घड़े की उत्पत्ति होगी।
3. शीलांकाचार्य का तर्क है कि एक स्वभावी, नित्य एवं व्यापक काल का ग्राहक कोई प्रमाण नहीं है। वे अन्य तर्क में कहते हैं कि यदि काल ही एकमात्र कारण हो तो समान काल में सभी किसानों के खेतों में मूँगों के पकने आदि की समान फल प्राप्ति होनी चाहिए, किन्तु ऐसा नहीं होता है।
4. अभयदेव के तर्क महत्त्वपूर्ण हैं। उनका तर्क है कि वर्षाकाल आदि कालरूप कारण के होने पर भी वर्षा का होना रूप कार्य निरन्तर नहीं चलता। इससे काल की नित्यता एवं एकरूपता भी खण्डित होती है। साथ ही काल का स्वभाव भेद भी प्रकट होता है।

जैन दर्शन में स्वीकार्य काल की कथञ्चित् कारणता

काल को ही एकान्त कारण मानने का जैनदार्शनिक खण्डन करते हैं, किन्तु उसकी

कथंचित् कारणता उन्हें स्वीकार्य है। जैनदर्शन में प्रत्येक द्रव्य के पर्याय-परिणमन में काल की कारणता अंगीकार की गई है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय एवं पुद्गलास्तिकाय के पर्याय-परिणमन में काल प्रमुख उदासीन निमित्त कारण है। यही नहीं सभी द्रव्यों का वर्तन 'काल' से ही सम्भव होता है। क्रिया एवं ज्येष्ठ-कनिष्ठ का बोध भी काल के बिना सम्भव नहीं। काललब्धि को मोक्ष में भी हेतु माना गया है। कर्म-सिद्धान्त में आबाधाकाल की अवधारणा भी काल की कारणता का द्योतन करती है। अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल से जीवों की शक्ति, अवगाहना, आयु आदि में क्रमशः कमी और वृद्धि होती है।

सन्दर्भ-

1. महाभारत, आदि पर्व, 1.248, 250
2. हरिवंश पुराण, द्वितीय खण्ड, संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब, बरेली, पृ. 189, श्लोक 13.16
3. सूत्रकृतांग, 1.1.2.3 की शीलांक टीका
4. शास्त्रवार्तासमुच्चय 2.79
5. धर्मबिन्दु, 2.68
6. बीजविंशिका, श्लोक 9
7. उपदेशपद, गाथा 165
8. सूत्रकृतांग, 1.12 की प्रारम्भ की टीका में
9. पंच समवाय की विस्तृत जानकारी के लिए पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी और प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर से प्रकाशित पुस्तक "जैन दर्शन में कारण-कार्य व्यवस्था : एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण (काल, स्वभाव, नियति पूर्वकृत कर्म, पुरुष/पुरुषार्थ का विवेचन)-डॉ. श्वेता जैन" द्रष्टव्य है।

(क्रमशः)

-अतिथि अध्यापक, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

'जैन जीवनशैली' पर आलेख आमन्त्रित

सुज्ञ एवं प्रज्ञाशील विद्वानों को सूचित करते हुए प्रमोद का अनुभव हो रहा है कि परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशती की सम्पूर्ति एवं 51 वें दीक्षा-दिवस के सुप्रसंग पर जिनवाणी का एक विशेषांक प्रकाशित किए जाने की योजना है। विशेषांक का विषय "जैन जीवन-शैली" रहेगा। विभिन्न आगमों के आधार पर लेख सादर आमन्त्रित हैं। आपकी रचनाएँ 31 अगस्त 2013 तक प्रेषित कर अनुगृहीत करें।

गत वर्ष जयपुर में इस विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया था, उसके आलेख भी इस विशेषांक में समाविष्ट रहेंगे। **-सम्पादक**

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः81)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(गमा का थोकड़ा-4)

जिज्ञासा– सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय देवता के कितने घरों में आ सकते हैं?

समाधान– संख्यात वर्ष की आयु वाले कर्मभूमिज सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय यदि काल करके देव गति में आते हैं तो देवलोक के 20 घरों में आते हैं। क्योंकि सन्नी तिर्यंच भवनपति से लेकर आठवें देवलोक तक ही उत्पन्न होते हैं। साथ ही यह भी विशेषता है कि भवनपति से लेकर आठवें देवलोक तक के 20 घरों के देवता भी मरकर सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में आकर उत्पन्न हो सकते हैं।

जिज्ञासा– सन्नी मनुष्य देवता के कितने घरों में आकर उत्पन्न हो सकते हैं?

समाधान– सन्नी मनुष्य यदि संख्यात वर्ष की आयु वाले कर्मभूमिज हैं तो वे काल करके देवता के सभी 27 घरों में आकर उत्पन्न हो सकते हैं।

सन्नी मनुष्य में सम्यक्दृष्टि, श्रावक, साधु आदि सभी प्रकार के होते हैं, इसी कारण से वे सभी देवलोकों में आकर उत्पन्न हो जाते हैं।

जिज्ञासा– मिथ्यादृष्टि, सम्यग्दृष्टि, श्रावक, साधु आदि के देवलोक में आकर उत्पन्न होने सम्बन्धी क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ हैं?

समाधान– 1. मिथ्यादृष्टि कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य भवनपति से लेकर नवग्रैवेयक तक के घरों में आकर उत्पन्न हो सकते हैं। इसमें भी यह विशेषता है कि जो क्रिया के आराधक होकर द्रव्य साधुपणा पालते हैं, वे नवग्रैवेयक तक जा सकते हैं। जो क्रिया के आराधक द्रव्यलिंगी साधु नहीं बनते वे बारहवें देवलोक तक आकर उत्पन्न हो सकते हैं।

2. जो सम्यक्त्व अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं, वे सन्नी कर्मभूमिज मनुष्य भी बारहवें देवलोक तक के घरों में आकर उत्पन्न हो सकते हैं।

3. जो श्रावक व्रतों की आराधना करते हैं वे भी बारहवें देवलोक तक के घरों में आ सकते हैं।

4. जो साधु जीवन को अंगीकार कर लेते हैं, वे देवलोक के सभी घरों में आकर उत्पन्न हो सकते हैं।

उक्त के सम्बन्ध में यह विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि जो सम्यक्त्व, श्रावकव्रत, साधु-जीवन अंगीकार तो कर लेते हैं, किन्तु उनकी परिपूर्ण पालना नहीं कर पाते, अतिचार-दोषों का शुद्धीकरण नहीं कर पाते, वे विराधक बन जाने के कारण भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी आदि देवलोकों में आकर उत्पन्न हो जाते हैं। किन्तु जो उक्त व्रत-महाव्रतों को स्वीकार कर आराधक बन जाते हैं अर्थात् सम्यक्त्व, श्रावकपन अथवा साधुपन में रहते हुए अगले भव का आयुष्य बंध कर लेते हैं, वे नियमा वैमानिक देवलोक के घरों में ही आकर उत्पन्न होते हैं। इसमें भी-

(अ) जो मात्र चतुर्थ-पंचम गुणस्थान के आराधक होते हैं वे वैमानिक देवलोकों में पहले देवलोक से लेकर बारहवें देवलोक तक के घरों में आते हैं।

(ब) जो साधु-जीवन को अंगीकार कर, आराधक बनकर छठे गुणस्थान में काल करते हैं, वे पहले देवलोक से लेकर नवग्रैवेयक तक के घरों में आकर उत्पन्न होते हैं।

(स) जो आराधक साधु अप्रमत्त अवस्था में अर्थात् सातवें गुणस्थान में रहते काल करते हैं तो वे 35 वैमानिक देवलोकों में (3 किल्विषी को छोड़कर) आकर उत्पन्न होते हैं।

(द) जो आराधक साधु उपशम श्रेणि करते हैं अर्थात् 8 वें से 11 वें गुणस्थान में रहते काल करते हैं तो वे पाँच अनुत्तर विमान के घरों में ही आकर उत्पन्न होते हैं। 33 सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति ही प्राप्त करते हैं तथा अगले भव में साधु बनकर मोक्ष में चले जाते हैं।

जिज्ञासा- सास्वादन समकित वाले मनुष्य मरकर कौन से देवलोकों में आकर उत्पन्न होते हैं?

समाधान- सास्वादन समकित वाले सन्नी मनुष्य काल करके बारहवें देवलोक तक के घरों में आकर उत्पन्न हो सकते हैं, किन्तु नव ग्रैवेयक के घरों में आकर उत्पन्न नहीं हो सकते।

नव ग्रैवेयक के घरों में उत्पन्न नहीं हो पाने का कारण यह है कि प्रज्ञापना

सूत्र के छठे पद के आधार से वर्णित छोटी गतागत में उल्लेख है कि नव ग्रैवेयक में सलिंगी सम्यग्दृष्टि साधु अथवा सलिंगी मिथ्यादृष्टि साधु ही आते हैं। सलिंगी सम्यग्दृष्टि साधु छठे-सातवें गुणस्थान वाले तथा सलिंगी मिथ्यादृष्टि साधु पहले गुणस्थान वाले होते हैं, किन्तु दूसरे गुणस्थान वाले नहीं होते।

जिज्ञासा- जब सास्वादन समकित वाले नवग्रैवेयक में आकर उत्पन्न नहीं होते तो फिर नवग्रैवेयक देवों में सास्वादन समकित क्यों मानी जाती है?

समाधान- यद्यपि यह सही है कि सास्वादन समकित वाले नवग्रैवेयक में आकर उत्पन्न नहीं होते, तथापि पर्याप्त अवस्था में कोई उपशम समकित प्राप्त कर ले, उपशम समकित से नीचे गिर जाये और सास्वादन समकित में आ जाये, इस अपेक्षा से भेद लिये जाते हैं। अर्थात् नवग्रैवेयक के अपर्याप्त अवस्था में सास्वादन समकित नहीं मानी जाती, किन्तु पर्याप्त अवस्था में मानी जाती है।

जिज्ञासा- आराधक के मुख्य भेद कौन-कौन से हैं?

समाधान- आराधक के मुख्य भेद निम्नांकित हो सकते हैं-

1. चरम शरीरी जीव, उसी मनुष्य भव में मुक्ति को प्राप्त करने वाला।
2. किसी भी गति में चौथे से सातवें गुणस्थान में रहते अगले भव की आयु का बंध करने वाला।
3. सातवें गुणस्थान से लेकर ग्यारहवें गुणस्थान तक में रहते हुए मरण को प्राप्त करने वाला।
4. पाँच अनुत्तर वैमानिकों में आकर उत्पन्न होने वाला।

जिज्ञासा- पाँच अनुत्तर विमानों में आकर उत्पन्न होने वाला देवता भविष्य में अधिकतम कितने भव कर सकता है?

समाधान- सर्वार्थसिद्ध विमान के सभी देवता एकभवतारी ही होते हैं। वे सभी निश्चित ही अगले भव में मोक्षगामी होते हैं।

चार अनुत्तर विमान के देवता भविष्य में अधिकतम 13 भव कर सकते हैं। वे भी सन्नी मनुष्य और वैमानिक देव, इन दो स्थानों के ही करते हैं।

13 भवों में भी निम्नांकित विकल्प हो सकते हैं-

7 भव मनुष्य के 6 भव वैमानिक देवलोकों के

अथवा 8 भव मनुष्य के 5 भव वैमानिक देवलोकों के
अथवा 9 भव मनुष्य के 4 भव वैमानिक देवलोकों के
अथवा 10 भव मनुष्य के 3 भव वैमानिक देवलोकों के
अथवा 11 भव मनुष्य के 2 भव वैमानिक देवलोकों के
अथवा 12 भव मनुष्य के 1 भव वैमानिक देवलोक का

इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखना चाहिए कि मनुष्य के लगातार भव 8 से अधिक नहीं हो सकते। अधिक भव तभी संभव है जबकि बीच में वैमानिक देवलोक का भव हो। (क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

अज्ञानहारी ये अनमोल वाणी

श्री अशोक कवाड़

(तर्जः- हे शारदे माँ)

हे जिनवाणी, हे जिनवाणी अज्ञानहारी ये अनमोल वाणी,
अनंत ज्ञानी के मुख से ये गाजे,
सुधर्मा की वाचनी हम भी वाचें।
शरण भी है तेरी, आज्ञा भी तेरी,
वंदन स्वीकारो हे वीतरागी।।हे जिनवाणी.....
तेरे पठन से ही ज्ञान प्रकाशे,
तेरा हर शब्द ही जीवन में साजे।
हर एक कदम भी, हर एक वचन भी,
तेरे अनुरूप हो श्रुत वाणी। हे जिनवाणी.....
तमेव सच्चं निस्संकं तमेव,
एवमेयं तहमेयं तमेव।
सद्दहामि भंते पत्तियामि भंते,
रोएमि फासेमि, पालेमि भंते।। हे जिनवाणी.....
दूर ऊँचे उस क्षितिज के पार जाना है
अज्ञानता का मिटा है अंधेरा,
शुद्ध भाव का हुआ है सवेरा।
पवित्रता की कोयल चहके,
रोम रन्ध्र हैं फूलों से खिलते।।
उत्साह भरी उड़ान भर के पार जाना है।। हे जिनवाणी.....

-690,Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600056

युवा-स्तम्भ

आन्तरिक व्यक्तित्व हो संस्कारित

श्री पदमचन्द गाँधी

पुरातन धर्मशास्त्रों के अनुसार संस्कार वह है जिसके होने से पदार्थ या व्यक्ति किसी कार्य के लिए योग्य हो जाता है। संस्कार मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का विकास करता है, उसे पूर्ण बनाता है। संस्कार व्यक्तित्व का निर्माण करता है। जिस देश में वृक्ष, नदी, पर्वत, प्रकृति, चन्द्र, सूर्य, पृथ्वी, हवा, मिट्टी की पूजा होती हो, जहां पर तिर्यंच पशु-पक्षियों से प्रेम हो, जहाँ पर 'अतिथि देवो भव' की संस्कृति हो, ऐसा देश है भारत! लेकिन आज की भौतिकवादी संस्कृति के कारण हमारी मौलिक संस्कृति में विकृतियाँ उत्पन्न हो गयी हैं। जो परिवर्तन पिछले 100 वर्षो में नहीं देखे गये, वे मात्र विगत 15 वर्षो में हो चुके हैं। यह परिवर्तन एकदम तीव्रगति से आया है। सबसे ज्यादा परिवर्तन युवा पीढ़ी में देखा जा रहा है। वर्तमान में नैतिकता क्षीण हो चुकी है, संवेदनाएँ मर चुकी हैं, यहाँ तक कि अपने ज़िगर के टुकड़े को फेंक दिया जाता है, वह चिल्लाता हुआ मर जाता है। धार्मिकता, आडम्बरों में जा रही है। सिद्धान्त ताकों में रखे जा रहे हैं। हिंसा, झूठ, चोरी, कपट, बलात्कार, लूट, मारकाट, डकैतियां, घरेलू हिंसा, गैंगरेप इत्यादि बढ़ते जा रहे हैं। लोगों की सोच विकृत हो गयी है, मानसिक प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। नकारात्मक विचारधारा घर कर रही है, जिसके कारण हमारे परिवार टूटे, भाईचारा मिटा, मित्रता स्वार्थ की हो गयी, पति-पत्नी के रिश्तों में दरारें आ गयी, इतना ही नहीं अब तो इनके रिश्तों को भी नकारा जा रहा है। आधुनिकता बनाम बाह्य संस्कृति के प्रभाव ने हमारी भाषा को मरोड़ा, परिधानों को सिकोड़ दिया, इतना ही नहीं, हमारी सभ्यता एवं संस्कृति को धूमिल कर दिया है। जहां पर विवाह त्याग एवं समर्पण पर आधारित थे, अब वे अनुबन्ध एवं शर्तों पर हो रहे हैं।

इन सब विकृतियों का युवाओं पर गहरा प्रभाव पड़ा है, लेकिन हमारे पूर्वजों के जो संस्कार दिए हुए हैं उनकी जड़ें बहुत गहरी हैं। जिस तरह से सूर्य की रोशनी पर बादलों के आने से रोशनी छिप जाती है उसी प्रकार कुसंस्कारों की कुहासा छा गयी है, सम्पूर्ण वातावरण दूषित हो गया है। इन्हें दूर करना कठिन जरूर हो गया है, लेकिन असंभव नहीं। इनको दूर करने हेतु विभिन्न आयामों द्वारा व्यक्ति को संस्कारित किया जा सकता है। आज के युवाओं को प्रामाणिकता चाहिए, समझाने वाला चाहिए, युवा तीव्र बुद्धि के धनी हैं, अपनी धुन के पक्के होते हैं। जो ठान लिया कर दिखाते हैं अत: उन्हें मोड़ा जा सकता है

तथा संस्कारों को सुदृढ़ किया जा सकता है। इसके लिए प्रामाणिक, क्रियावान, निःस्वार्थ एवं सच्चे गुरु की आवश्यकता है।

आज का युवा सम्यक् पूर्ति के स्थान पर इच्छा-पूर्ति के लिए लालायित रहता है। इच्छा पूर्ति से उसकी तृप्ति नहीं हो पाती है और वह अनन्त लालसा की उधेड़बुन में खोया रहता है तथा उसकी पूर्ति हेतु दिनभर भागदौड़ करता रहता है। जब इच्छा पूर्ति हो जाती है तो उसे वह सुख मान बैठता है, लेकिन वास्तव में वह सुख होता नहीं, वरन् क्षणिक इन्द्रिय सुख होता है अर्थात् वह भ्रम के माया जाल में उलझा रहता है, क्योंकि एक के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी और इस प्रकार अनन्त इच्छाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। आज का युवा चलता जमीन पर है, लेकिन दौड़ आकाश में लगाता है। वह देखता सामने है, लेकिन नज़र हवाई किले पर होती है। वह निःस्वार्थ सेवा के लिए हाथ आगे बढ़ाता जरूर है, लेकिन उसमें भी अपना हित ढूँढता है। इसी भ्रम में मनुष्य अपने 'मनुष्यत्व' को भूलकर मिथ्यात्वी जीवन के संस्कारों को अंगीकार करने लगता है। वह सभी प्रकार के अभावों की पूर्ति के साथ-साथ नित्य चिन्मय-इस पूर्ण जीवन की उपलब्धि चाहता है, जो उसे उपलब्ध नहीं होती, क्योंकि वह अर्थ और काम की ओर दौड़ता है तथा धर्म और मोक्ष की राह भूल जाता है।

धर्म-ग्रन्थों में चार प्रकार के पुरुषार्थों का वर्णन मिलता है। वे हैं- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनमें धर्म का स्थान प्रथम है तथा मोक्ष को अन्तिम लक्ष्य माना गया है। धर्म का अर्थ वस्तु का स्वभाव या गुण की आत्मिक शुद्धता एवं जीवन-पद्धति का बोध करना है। धर्म व्यक्ति के कर्तव्य-आधार की संहिता का ज्ञान कराता है। महाभारत में कहा गया है कि जीवन में अर्थ और काम का इस प्रकार सेवन करो कि धर्म का उल्लघंन न हो। धर्म वह विश्वव्यापी नैतिक तथा आध्यात्मिक व्यवस्था है जो लोक जीवन को धारण करती है। भारत की संस्कृति ने दोनों व्यवस्थाओं में एक सेतु का काम किया है। इन दोनों में समन्वय स्थापित किया है, जो व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। भगवान महावीर, बुद्ध, स्वामी विवेकानन्द, तिलक आदि अनेक महापुरुषों ने संस्कार जगाने एवं अभिवृद्धि हेतु ज्योति जगायी थी। हमें 'जीओ और जीने दो' की संस्कृति को चरम स्तर तक पहुंचाना था, लेकिन आज समाज में बढ़ती हिंसा, हत्याएँ, आत्म हत्याएं, भ्रूण हत्याएं, बलात्कार, नारी शोषण एवं उत्पीड़न, भ्रष्टाचार एवं व्यभिचार इत्यादि दिल दहलाने वाली अनेक आपराधिक घटनाओं के कारण न केवल मानवीय एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट आयी, वरन् 'मरो, मारो और मरने दो' की संस्कृति का प्रादुर्भाव भी हुआ है। जिसके दुष्परिणाम अत्यन्त ही घातक एवं विनाशकारी सिद्ध हो रहे हैं।

आज युवा मात्र एक टूल या साधन बन गया है। वह मात्र एक रेस के घोड़े की तरह दौड़

रहा है। वह 'इजी मनी' के अर्जन हेतु अपने अमूल्य एवं भव-भव के जन्मों के बाद मिलने वाले इस दुर्लभ जीवन को दांव पर लगा रहा है। वह अर्थ-प्राप्ति हेतु किस हद तक जा सकता है, अन्दाजा लगाना मुश्किल हो गया है। पुराने समय में इस प्रकार के घृणित कार्यों को तिरस्कृत रूप से देखा जाता था, लेकिन आज सभ्य, सज्जन एवं सम्मानित परिवार भी इससे अछूते नहीं रहे हैं। जिस समाज में अहिंसा, अपरिग्रह का साया हो, चरित्र जिस समाज की शान हो, शील एवं सदाचार जिस समाज के आभूषण हों, सुदेव, सुगुरु व सुधर्म जिसका प्राण हो, उस समाज में ऐसी घटनाएं यदि घटित होती हैं तो आत्मा रो उठती है। यह सच है कि दुनियां में चारों तरफ आग लग रही है। उस आग को बुझाने में कोई समर्थ नहीं है, तथापि अपना घर, अपना परिवार, अपना सन्तान सुख, अपने परिवार की प्रतिष्ठा, उस आग में स्वाहा नहीं हो, यह ध्यान रखना अनिवार्य ही नहीं, जीवन का अभिन्न अंग है। इस विकृत वातावरण के दबाव एवं प्रभाव में आने वाली और कोई नहीं हमारी अपनी सन्तानें हैं, इसलिए इन सभी विकृतियों पर चिन्तन करना अनिवार्य है।

वर्तमान में नैतिकता, मानवता एवं धार्मिकता का निरन्तर ह्रास हो रहा है। समाज तथा परिवार विखण्डित होते जा रहे हैं। बढ़ती भोगवादी संस्कृति के कारण युवाओं की विचार धारा, मानसिकता बदल गयी है। मानव मात्र के प्रति अन्तर्मन में व्याप्त मैत्री, समभाव, सहिष्णुता, निष्काम प्रेम आदि शुभ भावनाओं के स्थान पर द्वेष, कलह, असहिष्णुता, वासना, आदि बुरी भावनाएँ बढ़ रही हैं। नि:स्वार्थ प्रेम एक अलौकिक शक्ति है, उसमें वासना का तनिक भी स्थान नहीं होता, लेकिन अधिकांश युवा वासना को ही प्रेम मान कर अपना जीवन विकृत कर लेते हैं। जिनके प्रति हमारा सच्चा प्रेम होता है उसके प्रति त्याग, उत्कर्ष तथा सेवा के विचार जागृत होते हैं संवेदनाएं जागृत होती हैं। उस त्याग में एक अनोखा आनन्द मिलता है। प्रेम सभी के सामने आने में संकोच नहीं करता है, जबकि वासना एकान्त तलाशती है, वासना पतन की ओर ले जाती है, जबकि प्रेम आत्मचेतना का ज्ञान कराता है। अत: युवा वासना के स्थान पर प्रेम को समझें, उसके स्वरूप को अपनायें। वासना के दलदल में या अर्थ तंत्र की उलझन में जीना ही जीना नहीं है। जीना वह है, जो प्रेम और क्षमा का रस बरसाता है, क्रोध के बदले क्षमा का अमृत देता है, अन्धकार के विरुद्ध प्रकाश फैलाता है। ऐसे गुण ही जीवन को जीवन्त बनाते हैं। जीना उसका नाम है जब पुत्र के नाम से माता-पिता गौरान्वित होते हों, जब शिष्य के नाम पर गुरु का सम्मान बढ़ता हो। जिस विद्यार्थी के नाम से शिक्षक का चेहरा पुलकित होता है, वह विद्यार्थी श्रेष्ठ है। जिस पति के नाम से पत्नी को नीचा न देखना पड़ता हो, वह पति श्रेष्ठ है।

बाहरी ज्ञान से युवा परिपूर्ण नहीं बनता है। वह पूर्ण होता है अन्तस्थ में व्याप्त भीतरी

ज्ञान से, वह अन्तरमन में झाँके कि वह क्या है? स्पष्ट होता है कि आज युवा गहरी आत्मवंचना में जीने के आदी हो गये हैं। हमारे लिए आज यह महत्त्वपूर्ण नहीं रह गया है कि हम अपनी दृष्टि में क्या हैं? आज की मनोदशा में महत्त्वपूर्ण यह बना दिया गया कि वह दूसरे की दृष्टि में क्या है?

संस्कृति एवं संस्कारों में गहरा सम्बन्ध है। हमारी संस्कृति देवताओं द्वारा पूजनीय तथा सकल विश्व द्वारा अभिनन्दनीय रही है। वस्तुत: संस्कृति ही संस्कारों की जननी है। संस्कारों के अभाव में पतन के साधनों का प्रभाव निरन्तर बढ़ता जा रहा है। इन्हें रोकना आवश्यक है।

आज के युवा साधनों के ढेर में संवेदनशील रिश्तों एवं अपनापन को ढूंढ रहे हैं। युवाओं में साधनों के प्रति आसक्ति बढ़ रही है। युवाओं को सभी साधन चाहिए और आज ही चाहिए 'कल पर' उनका विश्वास नहीं है। उनकी जैविक भूख आज के उपभोक्तावादी युग में बहुत ज्यादा बढ़ने लगी है, 'अतिवाद' पराकाष्ठा पार कर चुका है। जब सब कुछ खुला-खुला सा होता है तो ऐसे यौवन में युवा कभी अटकता है तो कभी भटकता है और कभी मिट भी जाता है। कभी नादानी के कारण अपने ही उसे लूट लेते हैं तो कभी स्वयं अपनी गलतियों के कारण यौवन के उन्माद में क्षणिक सुख की खोज में सब कुछ खो बैठता है। इसी उम्र में स्वाभिमान की तलाश में भटकता हुआ युवा आक्रोश में जल्दी आने से विप्लवकारी तोड़-फोड़ की गतिविधियों का साक्षी हो जाता है तथा उनका भागीदार बन जाता है। आज का युवा साधनों के अम्बार में एवं सुविधाओं की विपुलता की होड़ में संवेदनशीलता के तारों से बने इन्सानी रिश्तों एवं भावनाओं का अपनापन खोता जा रहा है। साधनों की इस एकांगी विकास की दौड़ में हताशा, निराशा, भावनात्मक एवं मानसिक विकार, तनाव, कुण्ठा प्रबलता पूर्वक फैलती जा रही है, जिसके कारण वे आन्तरिक घुटन के शिकार हो रहे हैं। अत: युवा अपने बुनियादी रिश्तों को समझें, उन्हें मजबूत बनाने के लिए साधनों का भोग नहीं, सम्यक् उपयोग करें।

भोगवादी मूल्यों पर आधारित भौतिकतावादी सभ्यता बढ़ते तनाव का मुख्य कारण है। आज युवाओं में असंयमित आचरण जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। एक दूसरे को नीचा दिखाने की प्रतिस्पर्द्धा, विलासी जीवन, अमर्यादित आचरण, उद्दण्ड व्यवहार, विकृत चिन्तन, दिनचर्या का अभिन्न अंग बन गया है। ऐसी प्रवृत्ति को छोड़ना होगा। बढ़ते तनाव को ध्यान-पद्धति द्वारा तथा परिवार में एवं बच्चों में समय देकर अपनी परेशानियों को दूसरों के साथ बाँट कर के दूर किया जा सकता है। संयमित आचरण ही व्यक्ति को शान्ति का अनुभव करा सकता है।

आज समाज, राष्ट्र और विश्व में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। मेडिकल, टेक्निकल, प्रोफेशनल, कॉलेज में अव्वल दर्जे से निकलने वाले प्रतिभावान छात्र हैं। पब्लिक कॉरपोरेट सेक्टर एवं प्रोफेशनल कॉलेजों में एक्ज़िक्यूटिव ऑफिसरों, प्रोफेसरों का भी अभाव नहीं है, लेकिन इनका आन्तरिक व्यक्तित्व बिखरा हुआ है, धुंधला एवं खोखला है। ये किसी गहरी प्यास से प्यासे लगते हैं। इनकी भावनाएं अतृप्त एवं अनबुझी हैं। इनको बौद्धिकता तो मिली है, लेकिन अनुभव नहीं। प्रवीणता तो प्राप्त हुई है, लेकिन व्यक्तित्व को नहीं संवारा है। आये दिन पेपर की सुर्खियों में आता है इन्जीनियरों ने डकैती की, चोरी करते पकड़े गये, डॉक्टर ने आत्महत्या करली, शिक्षक ने बलात्कार कर दिया। यह सभी आन्तरिक विकास की कमी के कारण होता है। यह स्पष्ट है जब तक मन के खुले गगन में स्वच्छ विचारों की रोशनी प्रकट नहीं होगी, हृदय के धवल आकाश में भावनाओं का निर्मल प्रकाश नहीं स्फुटित होगा, तब तक अमानवीय प्रवृत्ति थमेगी नहीं। जिस दिन युवा के अन्तस्थल की चेतना जागृत हो जायेगी, निराशा के बादल छंट जायेंगे।

संस्कार की नींव बचपन में तैयार होती है। माता-पिता उस पौध को तैयार करते हैं। माँ बालक को अपने आंचल की छांव में बाह्य प्रभावों से बचाते हुए पल्लवित एवं प्रस्फुटित करती है। पिता अपने साये में उसके विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। यदि ये दोनों तथा घर का वातावरण अच्छे नहीं होंगे तो वे आगे युवा बनकर भी सुसंस्कृत एवं संस्कारित नहीं बन पायेंगे। यदि संस्कारवान बनना है तो पहले अभिभावक स्वयं संस्कारवान हों तब जाकर वह घर स्वर्ग बनता है। युवा संस्कारवान अपने बचपन के संस्कारों से होते हैं। लेकिन समस्या है कि ऐसा वातावरण हम नहीं दे पा रहे हैं। किसी ने कहा है:-

जहां हर सांस पर पहरा हो, घुटन हो,
खामोशियां व सन्नाटे का आलम हो,
हर संवाद में व्यंग्योक्तियों का ज्वार हो,
पारिवारिक रिश्तों में जड़ता हो
बच्चों की मासूमियत पर सहमा-सहमा आवरण हो
कर्कश कठोर, संवेदनहीन नारी हो,
माँ की कोमल अनुभूतियों का स्निग्ध स्पर्श न हो,
पति-पत्नी में आपसी सामंजस्य व विचारों का आदर न हो,
वो घर बालकों के लिए स्वर्ग नहीं नरक है।
वह घर संस्कारविहीन है।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार-बी, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राज.)

भजन

राग तजो, संताप मिटेगा

श्री मनोज कुमार जैन 'निर्लिप्त'

वीतराग की शरण जो आया, बिन माँगे उसने सब पाया।
आलोकित हो गई आत्मा, आप्त प्रभु ने तमस मिटाया।।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, की मानो सुख-धाम मिलेगा।
राग तजो संताप मिटेगा।।1।।

सुखाभास दुःख दावानल है, राग-द्वेष सांसारिक बन्धन।
देखो! ज़र, ज़ोरू, ज़मीन का, राग बनाता निज-पर दुश्मन।।
दुश्मन दिखते पास-दूर के, जब तक मन में लोभ रहेगा।
राग तजो.....।।2।।

मन-मन्दिर में मंगल मूरत, वीतराग की भज कर देखो।
निज में सच्चा सुख पाने को, राग-द्वेष को तज कर देखो।।
राग तजो तो सच्चेपन से, द्वेष स्वयं ही दूर भगेगा।
राग तजो.....।।3।।

जीवन का आनन्द तभी है, मानव की पर्याय सफल हो।
चतुःकषाय की चतुर-चौकड़ी, वश न भव-भव में क्रन्दन हो।।
इह-भव पुरुषार्थी होने से, पर-भव शाश्वत सुख विलसेगा।
राग तजो.....।।4।।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित ही, वीतराग की शिक्षाएँ हैं।
जिनमें वचन भरे हितकारी, सच्चे शास्त्र कहे जाते हैं।।
वीतराग-मार्गी वैरागी, सत् गुरु से सन्मार्ग दिखेगा।
राग तजो.....।।5।।

वीतरागमयी दृष्टि से ही, वीतरागता-पुष्प खिलेगा।
अनन्त चतुष्टय प्रकटन करके, निज-आतम सत् सुखप्रद होगा।
भव-भव का आताप नसेगा, 'निर्लिप्त' शुद्धातम प्रकटेगा।
राग तजो.....।।6।।

निज-स्वरूप में रमना सीखो, 'निर्लिप्त' आतम-कलुष हटेगा।
राग तजो.....।।7।।

राग-द्वेष का भाव मिटाओ, 'निर्लिप्त' परम सौख्य प्रकटेगा।
राग तजो.....।।8।।

-पी. डब्ल्यू.डी. क्वार्टर नं. 52, समद रोड़, अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)

पुरस्कार पत्र

।। श्री महावीराय नमः ।।

।। जय गुरु हीरा ।। ।। श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः ।। ।। जय गुरु मान ।।

''गुरुद्वय आचार्य श्री हीराचन्द्र-उपाध्याय श्री मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशती वर्ष''

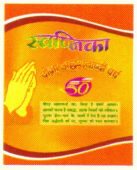

स्वप्निका

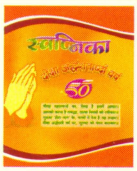

मुख्य लिखित परीक्षा

परीक्षा दिनांक : 10 नवम्बर, 2013 **परीक्षा दिवस : रविवार/Sunday**

परीक्षा समय : 12.00 से 2.00 बजे तक **परीक्षा केन्द्र : 5 परीक्षार्थी होने पर**

स्वप्निका के अनमोल पुरस्कारों की उद्घोषणा

प्रथम पुरस्कार : अविस्मरणीय पुरस्कार

A. उपलब्धि :- 2,51,000/- रुपये
B. उपधि :- हीरक पदक
C. उपाधि :- स्वप्निल/स्वप्निका
D. उपासना :- 5 वर्ष तक निरन्तर स्वाध्यायी रूप में सेवा देना ।

द्वितीय पुरस्कार : अद्वितीय पुरस्कार

A. उपलब्धि :- 1,71,000/- रुपये
B. उपधि :- स्वर्ण पदक
C. उपाधि :- स्वर्णिम/स्वर्णिका
D. उपासना :- 1 वर्ष तक एकासन का एकान्तर करना ।

तृतीय पुरस्कार : अलौकिक पुरस्कार

A. उपलब्धि :- 1,31,000/- रुपये
B. उपधि :- रजत पदक
C. उपाधि :- स्वस्तिक/स्वस्तिका
D. उपासना :- 1 वर्ष तक स्नान त्याग का एकान्तर करना ।

चतुर्थ (सुखकर) पुरस्कार : अचम्भित पुरस्कार

(11 प्रतिभागियों को)

A. उपलब्धि :- 1,21,000/- रुपये (11000x11)
B. उपधि :- कांस्य पदक
C. उपाधि :- स्वप्नजीत/स्वप्नजेत्री
D. उपासना :- 12 माह में 12 पौषध करना।

पंचम (शुभंकर) पुरस्कार : अविराम पुरस्कार

(50 प्रतिभागियों को)

A. उपलब्धि :- 2,50,000/- रुपये (5000x50)
B. उपधि :- फ्रेम शील्ड
C. उपाधि :- स्वप्नशाली/स्वप्नशीला
D. उपासना :- प्रतिदिन भक्तामर स्तोत्र से 1 वर्ष तक भगवान् की भक्ति करना ।

विशेष पुरस्कार : सभी परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया जायेगा ।

।। पुरस्कारों से हो प्रोत्साहन – व्रत पुरुषार्थ का करें आराधन।।

परिष्कार-पत्र

10 नवम्बर, 2013 को होने वाली स्वप्निका मुख्य लिखित परीक्षा

नियमावली

1) प्रश्न-पत्र (परीक्षा का) **'स्वप्निका'** पुस्तक में से ही होगा, अंग्रेजी कॉटेशन में से प्रश्न नहीं आयेंगे ।

2) परीक्षा-स्थल पर परीक्षार्थी को अपनी **'स्वप्निका'** पुस्तक साथ में लाना अनिवार्य होगा, अन्यथा परीक्षा के मनोवांछित फल से वंचित रहना होगा।

3) परीक्षा के दौरान आपस में बातचीत नहीं करें, अन्यथा परीक्षा से वंचित कर दिया जायेगा ।

4) परीक्षा, दिनांक 10 नवम्बर, 2013 को 12.00 से 2.00 बजे तक सभी केन्द्रों पर आयोजित की जाएगी, इसमें किसी भी कारण से कोई परिवर्तन नहीं होगा।

5) परीक्षा पश्चात् **'स्वप्निका'** पुस्तिका परीक्षार्थी को पुन: नहीं लौटाई जाएगी।

6) परीक्षार्थी, परीक्षा-स्थल पर समय से 15 मिनट पूर्व पहुँचने का लक्ष्य रखावें।

7) परीक्षा हेतु रजिस्ट्रेशन 10 जुलाई से 10 अक्टूबर के मध्य करवाया जा सकता है। इसके पश्चात् रजिस्ट्रेशन मान्य नहीं होगा।

8) **रजिस्ट्रेशन प्रत्येक परीक्षार्थी को कराना अनिवार्य है। रजिस्ट्रेशन निम्न के पास करवायें:-**

(1) नमन मेहता - 94141-16766
(2) गजेन्द्र जैन - 77378-01643
} प्रात: 7.00 बजे से 10.00 बजे तक, सायं 5.00 बजे से 9.00 बजे तक

9) 10 नवम्बर, 2013 तक परीक्षार्थी **'स्वप्निका'** के सभी नियमों को पूर्ण करने का लक्ष्य अवश्य रखावें।

10) परीक्षा की कॉपियाँ किसी को नहीं दिखाई जायेगी।

11) अन्तिम निर्णय, निर्णायक मंडल का मान्य होगा।

12) परीक्षा में पुस्तिका का आधार नहीं होगा, परीक्षा स्मृति आधारित होगी।

13) जिन्होंने 23.05.2013 की परीक्षा नहीं दी, वे भी इसमें भाग ले सकते हैं।

14) नियमावली का पूर्ण रूपेण पालन किया जाए, यह भी एक सर्वोत्तम नियम है।

।। नियमों से हो जीवन निर्मित, निर्जरा से करें निज को सर्जित।।

परिणाम-पत्र

स्वप्निका की सुगंध ।
जन-जन में फैली सौगंध ।।

आप सभी को सूचित करते हुए परम प्रसन्नता की प्रतीति हो रही है कि जन-जन की आस्था के अमर केन्द्र, भक्तों के भगवान **आचार्य भगवंत पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** एवं शान्ति के दातार, दान्तता के अवतार, आत्मार्थी **पं. रत्न पूज्य उपाध्याय भगवंत श्री मानचन्द्र जी म.सा.** के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में गुरुद्वय के पावन पुनीत पाद-पद्मों में सभी श्रद्धालु भक्तों ने **'स्वप्निका'** के माध्यम से व्रत-नियम अंगीकार कर गुरु-चरणों में भक्ति स्वरूप भेंट अर्पित-समर्पित की है।

यह भेंट भव-परम्परा में भटकाने से बचाने वाली है। यह भेंट भव्य प्राणियों के भव्य भवन के त्रिभुवन को भक्ति भाव से भरने वाली है। यह भेंट भव-भवान्तर के भय-बंधन से मुक्त कर अभिनव सुख में विचरण कराने वाली है।

इसी भेंट की समीक्षा स्वरूप उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 51 वें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में 23 मई, 2013 को आयोजित परीक्षा में देश के विभिन्न प्रान्तों के विविध ग्राम-नगरों में कुल 76 केन्द्रों पर परीक्षा आयोजित हुई, जिसमें कुल 2100 परीक्षार्थियों ने प्रोत्साहित भाव से प्रतिभागित हो जिनशासन की प्रभावना में अपना प्रशस्तशाली प्रभाव छोड़ा, उन्हीं प्रतिभागियों में से जिन प्रतिभागियों ने चरम शिखर पर पहुँचकर, अपना स्थान निश्चित कर जिनशासन की चाँदनी में चार चाँद लगाए, उनका नाम वरीयता सूची रूप में निम्नांकित प्रकार से है :-

स्थान	नाम	रजिस्ट्रेशन नं.	प्राप्तांक/पूर्णांक	पुरस्कार
प्रथम स्थान	**सुरुचि जैन – दिल्ली**	1511	48/50	11,000/-
द्वितीय स्थान	**प्रमिला बोथरा – जयपुर**	2549	47.5/50	9,000/-
तृतीय स्थान	**नीरा भंडारी – ब्यावर**	784	47/50	5,000/-

जिन महानुभावों ने स्वप्निका के माध्यम से महापुरुषों के चरणों में व्रत-नियमों की भेंट अभी तक नहीं चढ़ाई है, वे आज और अभी संकल्पबद्ध होकर नियमों के माध्यम से भेंट अर्पित करें, प्रोत्साहित हो प्रतिभागी बनें। आगे बढ़ने का लक्ष्य रखें ।

निवेदन : सभी परीक्षार्थी अपना परिणाम अपने केन्द्र प्रतिनिधि से जान सकते हैं ।

।। परिणाम का फल पूरा तब पके, जब परीक्षा का पूर्ण ध्यान रखें।।

प्रसन्नता-पत्र

प्रतिभागी उद्‌गार

1) स्वप्निका एक शृंगार है, बिगड़े हुए चरित्र के लिए ।
स्वप्निका एक मार्गदर्शक है, लक्ष्य प्राप्ति के लिए ।
स्वप्निका एक प्रेरणा स्रोत है, निजत्व को पाने के लिए।
स्वप्निका पथ प्रदर्शक है, स्व-कल्याण के लिए।

स्वप्निका जैसी अमूल्य कृति को मूर्तरूप देने वाले प्रख्यात पुरुषों को हृदय की गहराई से बहुत-बहुत साधुवाद।

- रिंकी जैन, अलीगढ़-रामपुरा (टोंक)

2) स्वप्निका स्वप्न नहीं, स्व को अपना बनाने की भावना है ।
स्वप्निका आँखें मूँदना नहीं, अन्तर नयन जगाने की प्रेरणा है।
स्वप्निका अपनी शान हीं नहीं, स्व अनुशासन की अनुपालना है।
स्वप्निका केवल नियमावली नहीं, नियमों को जीवन में उतारना है।
स्वप्निका केवल परीक्षा नहीं, परीक्षार्थी की समीक्षा दर्शाना है ।
स्वप्निका स्वप्न नहीं, स्वप्नों को साकार करना है।
स्वप्निका जड़ता नहीं, आत्म-चेतना की अभिव्यंजना है।
स्वप्निका मन को पारदर्शी बनाने हेतु की गई आत्म विवेचना है।
स्वप्निका चौदह स्वप्नों का पुंज ही नहीं, परभव को मिटाने की चाहना है।
स्वप्निका गुरु को समर्पित हमारी वंदना है।

स्वप्निका के माध्यम से
स्वप्न से पुरुषार्थ की ओर
पुरुषार्थ से परीक्षा की ओर
परीक्षार्थी से आत्मार्थी की ओर बढ़ चलो।

- मोनिका जैन, स. माधोपुर

3) स्वप्निका के स्वरूप में, हमें मिला अनोखा उपहार ।
तारक नियमों को शुद्ध मन से, हमने कर लिया स्वीकार ।।
'नमन मेहता' का भावपूर्ण, व्यक्त करते हैं आभार ।
धर्म दलाली ऐसे ही करके, करना भव-सागर को पार ।।

- श्रीमती उजास डाकलिया, जोधपुर

आपकी अनुभूतियाँ भी आदरपूर्वक आमंत्रित हैं। - सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर

प्रसन्न करने वाले बोल अमोल, दिल का खजाना रख दिया खोल ।।

प्रासङ्गिक

चातुर्मास के बजट बढ़ते न चले जाएँ

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरड़िया

चातुर्मास शुरू होने वाले हैं। सभी जगह चातुर्मास-व्यवस्था की तैयारी चल रही है, योजनाएँ बन रही हैं। कार्यकर्त्ताओं में कुछ नया करने का उत्साह है। यह देखकर बड़ा अच्छा लगता है।

विगत कुछ वर्षों से चातुर्मास के खर्चे लाखों से बढ़कर करोड़ों के आसपास या उसके पार तक पहुँचने लगे हैं। इसमें सिर्फ खाने-पीने-ठहरने, मान-सम्मान और प्रचार-प्रसार के खर्चे हैं।

यह सच है कि खर्च चाहे जितना हो, उसकी बहुत उत्साह व उमंग से व्यवस्था हो जाती है। छोटे-छोटे गाँव वाले भी बड़ा-बड़ा बजट बनाकर चातुर्मास कराने के लिए ताल ठोक कर मैदान में खड़े हैं, क्योंकि वहाँ भी बड़े-बड़े धनपति हैं। उन छोटे गाँव वाले श्री संघों की क्या स्थिति होती होगी, जो बड़े बजट का चातुर्मास कराने के खर्चे को वहन नहीं कर पाते हैं। भविष्य में छोटे श्री संघों में चातुर्मास कराना सपना हो सकता है। फिर बड़े संत भी बड़े खर्च करने वालों के यहाँ चातुर्मास करने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहे हैं।

चातुर्मास खर्चे को कैसे कम कर सकते हैं, किस मद में कटौती हो सकती है, हमें इस पर ध्यान देना है।

चातुर्मास में खर्चे के बढ़ते हुए बजट हमारे समाज की सम्पन्नता की अभिवृद्धि के संकेत हैं, जो शुभ हैं। अच्छा लगता है। किन्तु आसमान की ओर देखने वालों को जमीन पर भी दृष्टि डालनी चाहिए। इस सच्चाई को भी नज़र में लिया जाना चाहिए। आज हमारे कई सहधर्मी परिवार किन विषम स्थितियों में रह रहे हैं, इसका थोड़ा सा अन्दाजा लगाया जाना चाहिए। कई परिवार बीमारी में अपना इलाज नहीं करा पा रहे हैं। समाज के होनहार लड़कों की फीस भरने का जुगाड़ नहीं जुटा पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में हमें क्या करना है, क्या करना चाहिए। इस विषय पर भी सभी को साथ मिलकर सोचना चाहिए।

हमारा सुझाव है कि चातुर्मास हेतु एकत्रित राशि में से 10 प्रतिशत का उपयोग समाज के ऐसे वर्ग के लिए किया जाए।

सहयोग किस प्रकार, किसे और कहाँ मिलना चाहिए इसके लिए कुछ नियम, कुछ सही तरीका, कार्य प्रणाली बनाना अति आवश्यक है ताकि यह निरन्तर भविष्य में हमारे स्थानकों में संचालित होता रहेगा।

-52, कालाथी पिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079

प्रासङ्गिक

चातुर्मास में पालनीय नियम

श्री कृष्णमोहन जैन

चातुर्मास का काल आषाढ़ी शुक्ला पूर्णिमा से कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा तक माना जाता है। इन दिनों में साधक वर्ग को अपनी साधना करने में अनुकूलता रहती है। तपस्या भी इन दिनों में सहजता से की जा सकती है।

चातुर्मास में प्रमुख लक्ष्य उस स्थान, शहर या गाँव के निवासियों को ज्ञान-ध्यान सिखाने एवं उनको धर्म-साधना में आगे बढ़ाने का होता है। संत-सतीवृन्द तो अपनी साधना में प्रतिपल, प्रतिक्षण संलग्न रहते ही हैं, साथ ही वहाँ के निवासी तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान, संयम एवं वैराग्य की ओर आगे बढ़ते हैं।

हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि सन्त-भगवंतों के द्वारा दिये गये उपदेशों, निर्देशों को हम जीवन में उतार कर तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान आदि में अभिवृद्धि करें। पूज्य संत-सती भगवंत फरमाते हैं कि चातुर्मास तप-त्याग, व्रत-नियम, ज्ञान-ध्यान एवं सादगी पूर्ण हो, आडम्बर रहित हो, प्रदर्शन रहित हो, लेकिन फिर भी हम उनकी आज्ञा का पालन करने में बड़ी कठिनाई महसूस करते हैं। हमें संत-सतियों द्वारा दिये गये निर्देशों का आवश्यक रूप से पालन करना चाहिए।

स्थानीय संघ द्वारा चातुर्मास में पालन करने योग्य नियम:-

1. प्रत्येक घर से एक श्रावक एवं एक श्राविका प्रतिदिन प्रवचन में पधारने का लक्ष्य रखे।
2. अवकाश के दिन बच्चों को गुरु भगवंतों के दर्शन-वंदन तथा उनसे ज्ञान सीखने के लिए अवश्य ही धर्मस्थान (चातुर्मास स्थल) पर भेजें।
3. चातुर्मास काल में रात्रि-भोजन का निषेध रखें।
4. चातुर्मास काल में फिजूल खर्च, आडम्बर, प्रदर्शन नहीं करें एवं तपस्या के पारणें में तपस्वी का वरघोड़ा, जुलूस आदि नहीं निकालें तथा न ही तपस्या की रसोई करें।
5. चातुर्मास-स्थल पर तपस्वी का बहुमान केवल अचित्त माला पहनाकर करें। कोई प्रभावना आदि भेंट नहीं करें।
6. भोजन सात्त्विक एवं सादा हो, जिसको ग्रहण करने से प्रमाद नहीं आए तथा सहजता से दर्शन, वंदन एवं प्रवचन का लाभ ले सकें।

दर्शनार्थी भाई-बहनों द्वारा पालन करने योग्य नियम:-

1. एक संघ से एक साथ सीमित संख्या में दर्शन-वंदन करने हेतु पधारें (विशेष कार्यक्रम को छोड़कर जैसे-दीक्षा महोत्सव, चातुर्मासार्थ प्रवेश एवं संघ के सम्मेलन आदि को छोड़कर)।
2. चातुर्मास में संत-सती भगवंतों के दर्शन-वंदन हेतु पधारने पर पहनावा सादा हो तथा शरीर की विभूषा, साज-सज्जा आदि का त्याग हो।
3. चातुर्मास स्थल पर हम जितने भी समय रहें, तब तक हम सामायिक, स्वाध्याय, संवर, दया आदि में व्यतीत करें।
4. संत-सती भगवंतों के दर्शन-वंदन हेतु पधारने पर साधना के जो-जो कार्यक्रम हैं जैसे- प्रार्थना, प्रवचन, शास्त्रवाचन एवं सायंकालीन प्रतिक्रमण तथा ज्ञान-चर्चा आदि में अनिवार्य रूप से भाग लेंवे।
5. चातुर्मास में संत-सती भगवंतों के दर्शन-वंदन के अतिरिक्त उस नगर या गाँव की कोई विशेष ऐतिहासिक स्थान को देखने जाना हो तो वहाँ के संघ अध्यक्ष/मंत्री/विशिष्ट कार्यकर्त्ता को सूचित कर पधारें।

-वर्द्धमान नगर, हिण्डौनसिटी (राज.)

बाल-स्तम्भ [मई-2013] का परिणाम

जिनवाणी के मई-2013 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'श्रमण महावीर की समता' कथा के प्रश्नों के उत्तर 27 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक20 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	दक्ष कटारिया-वाशी (नवी मुम्बई)	16.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	प्रखर गाँधी-चित्तौड़गढ़ (राज.)	16
तृतीय पुरस्कार- 200/-	भावेश बोहरा-जोधपुर(राज.)	15.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	प्रणत धींग-उदयपुर(राज.)	15
	आयुषी जैन-जयपुर(राज.)	15
	भूमि सिंघवी-जोधपुर (राज.)	15
	चेतन कुमार जैन-अलीगढ़-रामपुरा (राज.)	15
	निधि जैन-खेरली, जिला-अलवर(राज.)	14.5

नारी-स्तम्भ

कैसे हो नारी सुरक्षित?

श्री पारसमल चण्डालिया

भारतीय संस्कृति में नारी की गरिमा महिमा मंडित रही है। लक्ष्मी, सरस्वती, जगदम्बा, शक्ति, देवी, महामाया, सीता व सावित्री जैसे पूजनीय नामों के साथ नारी उपमित है। अतः बड़े गर्व के साथ कहा जाता है- **''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः''** अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते हैं। किन्तु विगत वर्षों में नारी की जो अवहेलना, अपमान, अवज्ञा, अनादर हुआ है, वह चिंतनीय है।

संस्कृति और संस्कार प्रधान भारत देश में आज यह बुरा समय क्यों आया? आज हर जगह सम्मान पूर्वक पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर देश को प्रगति की ओर ले जाने का दावा करने वाली नारी असुरक्षित क्यों है? घर, सड़क, खेत, खलिहान, स्कूल, हॉस्टल, फैक्ट्री, बाजार, थाना, पब्लिक पार्क, अस्पताल आदि कोई भी जगह नारी के लिए सुरक्षित नहीं है। नारी-सुरक्षा से तात्पर्य उसके अस्तित्व एवं शील रक्षण से है। आज प्रतिदिन जो समाचार पढ़े और सुने जाते हैं, उनमें 3 वर्ष से 70 वर्ष तक की महिला के साथ दुष्कर्म, बलात्कार और 80 प्रतिशत मामलों में दुष्कर्म के बाद हत्या के समाचारों की बाढ़-सी आ गई है। पिता-भाई, चाचा, माता, गुरु, डॉक्टर, पुलिस, पड़ौसी, मालिक आदि किसी पर भी भरोसा नहीं, यानी न उम्र का बंधन है न रिश्तों की रोक है। आखिर क्यों है असुरक्षित नारी? सरकार है, अदालते हैं, कानून हैं, पुलिस है, प्रशासनिक तंत्र है, फिर भी नारी-सुरक्षा आज का ज्वलन्त प्रश्न क्यों बना हुआ है? यह चिंतन का विषय है। क्या पूरा दोष अपराधियों का ही है या बढ़ती हुई पश्चिमी शिक्षा, सभ्यता या स्वतंत्र-स्वच्छंद प्रकृति इसके लिये उत्तरदायी नहीं है? होना तो यह चाहिये कि महिलाएँ अपने पहनावे, समय व जीवन शैली को इतना व्यवस्थित बनाए कि तुच्छ मति वाले एवं संकुचित दृष्टि वाले को कोई गलत अनुमान लगाने का मन ही न हो।

वर्तमान परिस्थितियों में यदि नारी सुरक्षित रहना चाहती है तो उसे स्वयं सतर्क और सावधान रहते हुए स्वयं की सुरक्षा पर ध्यान देना होगा, क्योंकि कहा भी है- Self Help is the Best Help और God helps those who help themselves. नारी सुरक्षा के निम्न उपायों पर विचार कर अमल किया जा सकता है-

1. आज स्त्री को प्रायः वैसी ही दृष्टि से देखा जाता है, जिससे कामवासना जागृत व तृप्त

हो। नारी की छवि विकृत करने में, उसके साथ व्यभिचार की बढ़ोतरी में मीडिया की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पोस्टरों, दीवारों, पत्रिकाओं में मीडिया की बदौलत ही नारी के नग्न चित्रों का प्रदर्शन फला-फूला है। आम व्यक्ति के मन में इन्हीं कामुकता भरे चित्रों के कारण हिंसक वासना जागृत होती है। आज बलात्कार मामलों से जो अप्रत्याशित वृद्धि हुई है, इसी की देन है। आज सेंसर की कैंची भी वहाँ जाकर रुक जाती है जहाँ फिल्म की सफलता के लिए नग्नता, फूहड़ता, अश्लीलता आवश्यक है। लगातार अश्लील दृश्यों को देखते, सुनते रहने के कारण ही नई पीढ़ी की मानसिकता समय से पूर्व बिगड़ रही है। जरा सोचिए! देश के नौनिहालों, भावी कर्णधारों पर इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है। यदि यही स्थिति रही, तो नारी की छवि भविष्य में भी सुधरने के कोई आसार नहीं रहेंगे। सरकार को चाहिए कि वह ऐसे सारे उपाय अमल में लाये, जिनसे बढ़ती अश्लीलता पर अंकुश लगे।

2. गौरतलब है कि इन तमाम घटनाओं के लिए मात्र पुरुष को जिम्मेदार करार देना उचित नहीं। चंद महिलाएँ जो कि जिस्म को नुमाईश की वस्तु समझती हैं, गलत तरीकों से दौलत, शोहरत हासिल करना चाहती हैं, पैसे व नाम के लिए कुछ भी कर सकती हैं, वे इसके लिए जवाबदार हैं। वे इस बात को विस्मृत कर देती हैं कि हुस्न एवं अश्लीलता का प्रभाव चिर स्थायी नहीं रहता। वास्तविक सौंदर्य मन की शुद्धता तथा जीवन की पवित्रता में है। नारी यदि अपने गौरव को समझे, अपनी संस्कृति के महत्त्व को जाने तो कुत्सित वातावरण से मुक्ति पा सकती है। आज की महिलाएँ यदि सादा जीवन व्यतीत करने से संतुष्ट हो जायें, आदर्शों की ओर उन्मुख होकर यदि श्रेष्ठ जीवन यापन का संकल्प करें तो निश्चय ही समाज में कुछ सीमा तक अश्लीलता एवं चरित्रहीनता का अंत हो जायेगा।

3. प्रत्येक मनुष्य को सुन्दर दिखने की अभिलाषा होती है और स्त्रियों में तो और भी अधिक है। सभी उम्र की स्त्रियाँ स्वभावतः प्रदर्शन प्रिय होती हैं। उसकी देह की बनावट और उसके वस्त्र आभूषण चाल ढाल सभी उसके प्रति आकर्षण उत्पन्न करते हैं, अतः सुन्दर और आकर्षक दिखें, पर प्रदर्शनीय नहीं बनें। ऐसा कहा जाता है- वस्त्र ही सत्कार कराते हैं और वस्त्र ही बलात्कार कराते हैं, इसलिए वेशभूषा लज्जा बचाये जैसी हो। अपनी वेशभूषा देश के समयानुकूल होना आवश्यक है। आधे अधूरे या पारदर्शी कपड़े पहन कर घर से बाहर जाने की जरूरत ही क्या है।

4. नारी का भूषण लज्जा है, इस बात को हर समय याद रखें। महासती सीता का उदाहरण सामने रखें। सीता जी ने नहीं चाहा, तो रावण जैसा महाशक्तिशाली उनका कुछ भी

नहीं बिगाड़ सका। आपकी ज़रा सी ढील आपको खतरे में डाल सकती है।

5. हमारी संस्कृति में देह की शुचिता को सर्वोच्च नैतिक धार्मिक नियम की मान्यता प्राप्त है, अतः लड़कियों को बचपन से ही शिष्ट, शालीन और देह की पवित्रता का ध्यान रखना सिखाया जाये।
6. नारी का सम्मान भगवान् से भी ऊँचा रखा गया है। हमारे पूर्वजों ने स्त्री का सम्मान बनाये रखने के लिए उसको देवी, भगवती, माँ, बहिन, पत्नी, पुत्री के रूप में मान्यता दी है। स्त्री को पतिव्रता और पुरुष को एक पत्नी व्रत धारण का पाठ पढ़ाया गया है, ऐसे धार्मिक और नैतिक संस्कार बचपन से दिये जायें, क्योंकि-

   फूल कितना भी सुन्दर हो, पर खुशबू नहीं तो कुछ नहीं।
   कुल कितना भी ऊँचा हो, संस्कार नहीं तो कुछ नहीं।
   ज्ञान कितना भी हो, लेकिन सदाचार नहीं तो कुछ नहीं।
   मानव कितना भी अच्छा हो, समझ नहीं तो कुछ नहीं।

7. उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 16 में स्त्री और पुरुष को अग्नि और नवनीत (मक्खन) की उपमा देते हुए ब्रह्मचर्य पालन की नववाड़े बताई गई हैं। यहाँ तक कहा गया है कि किशोरी के साथ उसके पिता और भाई को भी एक कमरे में नहीं सोना चाहिये। ये संकेत नारी सुरक्षा हेतु पर्याप्त हैं।
8. शील की सुरक्षा हेतु आगम में वर्णन आया है- "एगो एगित्थिए सद्धिं णेव चिट्ठे ण संलवे।" अकेली स्त्री अकेले पुरुष के साथ खड़ी भी न रहे और बातचीत भी न करे। स्त्री, पुरुष मित्र को आवश्यकता से अधिक महत्त्व न दे, स्वतंत्रता नहीं दे। लिबर्टी लेना चाहे तो उसे सख्ती से रोक दे।
9. जहाँ खतरे की संभावना हो, उन पार्कों, पार्टियों में या ऐसे ही अन्य स्थानों पर न जाये। शाम, देर रात के समय का विशेष ध्यान रखे।
10. लड़कियाँ समूह में चलें, छेड़छाड़ या छींटाकशी करने वाले लड़कों को हिम्मत से पलट कर जवाब दें। सहायता के लिए पुकारें और शोर करें। दुर्व्यवहार की शिकायत तत्काल अपने माता-पिता और पुलिस से जरूर करें, शर्म या लिहाज न करें, झिझके नहीं, झूठी बदनामी से नहीं डरें।
11. स्त्रियाँ अपने मोबाइल नम्बर, सम्पर्क सूत्र अत्यन्त विश्वसनीय व्यक्ति को ही दें।
12. माता-पिता अपनी बेटियों के प्रति निरन्तर जागरूक रहें। उनकी सुरक्षा हेतुः-
    (1) लड़कियों को कोचिंग सेण्टर आदि में दो घंटे से अधिक के लिए न छोड़ें।
    (2) अपनी बेटियों के मोबाइल में प्रीपेड के जगह मासिक पेमेण्ट सिस्टम रखे। समय-

समय पर उनके मोबाइल को चेक करे। किसको एम.एम.एस. किये जाते हैं, किसके संदेश आते हैं, कौन-कौन से नम्बरों पर अधिक बात की जाती है, उनका पता लगाएँ।

(3) लड़कियों के मित्रों, सहेलियों को एक दो महीने में घर में चाय आदि के लिए बुलायें और स्वयं उनके साथ बैठें, उनके व्यवहार, चाल-चलन, खर्च करने की आदत को परखें, उनके घर परिवार की जानकारी रखें।

(4) माता-पिता सदैव इस बात का ध्यान रखें कि उनकी बेटियाँ कब कहाँ जाती हैं, किसके साथ उठती, बैठती हैं, घूमती-फिरती हैं। लड़कियाँ भी माता-पिता की इस प्रकार की रोक-टोक या उनके व्यक्तिगत मामलों में दखल देने का न तो बुरा मानें और न उन्हें मना करें। यह लड़कियों के स्वतंत्र विकास में बाधा नहीं है, किन्तु आज की जरूरत है, इसे समझें और गम्भीरता से स्वीकार करें, क्योंकि-

दुश्मन समझने लगी है युवा पीढ़ी माँ बाप को।
सच तो यह है ये पीढ़ी धोखा दे रही है अपने आपको।
वासना का भूत जबर्दस्त हो रहा है सवार।
खुद कुल्हाड़ी लेकर अपने पाँवों पर कर रही प्रहार।।

नारी का शील काँच के समान नाजुक होता है। स्वस्थ समाज व परिवार के लिए नारी का सुरक्षित रहना जरूरी है। बीते वक्त की त्रुटियों पर मातम न मनाएँ, पर आगामी वर्षों में स्त्री अपना अस्तित्व बनाए रखे, उसे उसका हक मिले, इसके लिए उसके प्रति नज़रिए में बदलाव लाना ही होगा। स्त्रियों को भी कामुकता, अश्लीलता बढ़ाने वाले संवादों, व्यवहार से परहेज करना होगा ताकि आने वाले वर्षों में वे सुरक्षित रह सकें। अंत में दो शब्द नारी शक्ति के लिए-

सृष्टि संवारने का तू पावन प्रयास है,
लक्ष्मी, सरस्वती का तुम में निवास है।
चाहे अगर, घर को मंदिर बना दे तू,
पथ से भटक गई तो महा सर्वनाश है।।

-7/14, उत्तरी नेहरू नगर, बिद्रुल बस्ती, ब्यावर-305901 (राज.)

सूचना

शोधालेख लेखकों से निवेदन है कि वे पाद टिप्पण अथवा सन्दर्भ देते समय प्रयुक्त पुस्तकों के लेखक, प्रकाशक, प्रकाशन स्थान, वर्ष आदि की पूर्ण जानकारी दें, अन्यथा लेख प्रकाशित नहीं हो सकेंगे।-**सम्पादक**

स्वास्थ्य-विज्ञान

बिना दवा मधुमेह का प्रभावशाली उपचार

डॉ. चंचलमल चोरडिया

मधुमेह का कारण

शरीर को स्वस्थ रखने एवं समुचित विकास हेतु भोजन में अन्य तत्त्वों के साथ संतुलित प्रोटीन, वसा तथा कार्बोहाइड्रेट आदि तत्त्वों की विशेष आवश्यकता होती है। जब इनमें से कोई भी या सारे तत्त्व शरीर को संतुलित मात्रा में भोजन में नहीं मिलते अथवा शरीर उन्हें पाचन के पश्चात् पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर पाता, तो शरीर में विविध रोग होने लगते हैं। इंसुलिन की कमी के कारण जब शरीर कार्बोहाइड्रेड को ग्लूकोज के रूप में परिणत नहीं कर पाता तथा शरीर का भलीभांति उपयोग नहीं कर पाता तो मधुमेह का रोग हो जाता है। मानसिक तनाव, शारीरिक श्रम का अभाव, गलत खान-पान अथवा पाचन के नियमों का पालन न करना और अप्राकृतिक जीवन शैली इस रोग के मुख्य कारण होते हैं। कभी-कभी यह रोग वंशानुगत भी होता है।

मधुमेह क्या है ?

शरीर में पेंक्रियाज एक ऐसी ग्रन्थि है जो दोहरा कार्य करती है। यह पाचन हेतु पाचक रस और इंसुलिन नामक हारमोन्स को पैदा करती है। इंसुलिन भोजन में से कार्बोहाइड्रेट्स का पाचन कर उसको ग्लूकोज में बदलती है। कोशिकाएँ ग्लूकोज के रूप में ही पौष्टिक तत्त्वों को ग्रहण कर सकती हैं, अन्य रूप में उनको शोषित नहीं कर सकती। इंसुलिन रक्त में ग्लूकोज की मात्रा का भी नियन्त्रण करती है। ग्लूकोज रक्त द्वारा सारे शरीर में जाता है तथा कोशिकाएँ उसको ग्रहण कर लेती हैं, जिससे उनको ताकत मिलती है। ग्लूकोज का कुछ भाग यकृत ग्लाइकोजिन में बदल कर अपने पास संचय कर लेता है, ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसे पुन: ग्लूकोज में बदल कर कोशिकाओं के लिये उपयोगी बना सके। शरीर की स्वस्थ अवस्था में ग्लूकोज को शरीर के विभिन्न अंगों में वसा (Fats) अथवा चर्बी के रूप में भी रखा जा सकता है। पाचन तंत्र की गड़बड़ी के कारण अथवा भोजन में शर्करा की मात्रा ज्यादा होने के कारण, अधिक इंसुलिन की आवश्यकता होती है। कभी-कभी पेन्क्रियाज ग्रन्थि के बराबर कार्य न करने पर भी इंसुलिन की आवश्यक मात्रा का निर्माण नहीं होता।

इंसुलिन की कमी के कारण पाचन क्रिया के पश्चात् आवश्यक मात्रा में ग्लूकोज नहीं

बनता और कार्बोहाइड्रेट्स तत्त्व शर्करा के रूप में ही रह जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप जिन-जिन कोशिकाओं को ग्लूकोज नहीं मिलता वे निष्क्रिय होने लगती हैं। उनकी कार्य क्षमता कम होने लगती है, जिससे प्राय: भूख और प्यास अधिक लगती है।

मधुमेह के दुष्परिणाम

शरीर में लगातार अधिक शर्करा रहने से अनेक जैविक क्रियाएँ प्रभावित हो सकती हैं। अधिक मीठे रक्त से रक्त वाहिनियों की दीवारें मोटी हो जाती हैं और उनका लचीलापन कम होने लगता है। रक्त का प्रवाह बाधित हो सकता है। जब यह स्थिति हृदय में होती है तो हृदयाघात और मस्तिष्क में होने पर पक्षाघात कहलाता है। पिण्डलियों में होने पर वहां भयंकर दर्द तथा प्रजनन अंगों पर होने से प्रजनन क्षमता प्रभावित हो सकती है।

रक्तवाहिनियों के बाधित प्रवाह से पैरों में संवेदनाओं में कमी आ सकती है तथा जाने अनजाने मामूली चोट भी घाव जल्दी न भरने के कारण गम्भीर रूप धारण कर सकती है। शरीर के सभी अंगों को क्षमता से अधिक कार्य करना पड़ सकता है। जिससे पैरों में कंपन, स्वभाव में चिड़चिड़ापन, तनाव आदि के लक्षण प्रकट हो सकते हैं। संक्षेप में प्रभावित कोशिकाओं से संबंधित रोग के लक्षण प्रकट होने लगते हैं।

शरीर में इंसुलिन की आवश्यकता को कैसे नियन्त्रित किया जा सकता है?

मधुमेह का रोग शरीर में पेंक्रियाज ग्रन्थि के बराबर कार्य न करने से होता है। परन्तु पेन्क्रियाज बराबर कार्य क्यों नहीं करता? क्या वास्तव में पेंक्रियाज इंसुलिन कम बनाता है? क्या जो इंसुलिन बनता है उसका हम पूर्ण सदुपयोग करते हैं? कहीं तनाव अथवा अप्राकृतिक जीवन शैली तथा पाचन के नियमों का पालन न करने से हमें आवश्यकता से अधिक मात्रा में इंसुलिन की आवश्यकता तो नहीं होती है?

पेंक्रियाज रोग ग्रस्त क्यों होता है? उसके रोग ग्रस्त होने से कौन से अंग अथवा अवयव प्रभावित होते हैं? पेंक्रियाज के कार्य को सहयोग देने वाले शरीर में कौन-कौन से अंग, उपांग, ग्रन्थियाँ और तंत्र होते हैं? पेंक्रियाज की क्षमता को कैसे बढ़ाया जा सकता है? यदि इन अंगों को सक्रिय कर दिया जाये तथा पेन्क्रियाज की कार्य क्षमता बढ़ा दी जाए, पाचन में इंसुलिन का जो अनावश्यक दुरुपयोग करते हैं अर्थात् जो कार्य बिना इंसुलिन अन्य अवयवों द्वारा किए जा सकते हैं, कराये जायें तो समस्या का समाधान हो सकता है।

आधुनिक चिकित्सक मधुमेह को असाध्य रोग मानते हैं, परन्तु उनका कथन शत-प्रतिशत ठीक नहीं होता है। मात्र पेंक्रियाज द्वारा पर्याप्त मात्रा में इंसुलिन न बना सकने के कारण बाहर से इंसुलिन देना समस्या का सही समाधान नहीं हो सकता। यह तो फूटे घड़े में

छिद्र को बंद किये बिना पानी भरने के समान अथवा वृक्ष को सुरक्षित रखने के लिए फूल पत्तों पर पानी देने के समान अदूरदर्शिता पूर्ण आचरण होता है। जिस प्रकार वृक्ष की सुरक्षा हेतु उसकी जड़ों में पानी देना आवश्यक होता है, ठीक उसी प्रकार पेंक्रियाज द्वारा इंसुलिन अथवा पाचक रस न बनाने अथवा कम बनाने के कारणों को दूर कर तथा इंसुलिन की आवश्यकता कम कर उसके सहयोगी अंगों से तालमेल एवं सहयोग लेकर मधुमेह को नियन्त्रित रखा जा सकता है। उसके दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है। अत: जो मधुमेह से बचना चाहें, उन्हें आगे लिखी बातों का विशेष पालन करना चाहिए।

शरीर में अधिकांश कार्यों की वैकल्पिक व्यवस्था होती है

शरीर में कोई अंग, उपांग, अवयव पूर्ण रूप से अकेला कार्य नहीं करता। उसके कार्य में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से कोई न कोई शरीर का अन्य अवयव अवश्य सहयोग करता है। उसके आंशिक विकल्प के रूप में कार्य करता है। शरीर में पेंक्रियाज एक अन्त:स्रावी ग्रन्थि है। सारी ग्रन्थियाँ सामूहिक जिम्मेदारी, तालमेल और आपसी समन्वय से कार्य करती है। अत: पेन्क्रियाज की गड़बड़ी होने पर अन्य ग्रन्थियों को अधिक कार्य करना पड़ता है। अत: यदि किसी विधि द्वारा पेंक्रियाज के साथ-साथ अन्य ग्रन्थियों को सक्रिय कर दिया जाये तो मधुमेह से मुक्ति मिल सकती है। चीनी पंच तत्त्व के सिद्धान्तानुसार पेंक्रियाज, तिल्ली-आमाशय परिवार का सदस्य होता है। अर्थात् पेंक्रियाज की गड़बड़ी का तिल्ली पर सीधा प्रभाव पड़ता है। अत: यदि तिल्ली बियोल मेरेडियन में किसी विधि द्वारा प्राण ऊर्जा का प्रवाह बढ़ा दिया जाये तो पेन्क्रियाज की कार्य क्षमता ठीक हो सकती है।

तिल्ली का आमाशय पूरक (यांग) अंग होता है। अत: पेंक्रियाज के बराबर कार्य न करने से तिल्ली-आमाशय का संतुलन बिगड़ जाता है। पाचन तंत्र बराबर कार्य नहीं करता। अत: पाचन के नियमों का दृढ़ता से पालन कर पाचन तंत्र की कार्य प्रणाली सुधारी जा सकती है जिससे पाचन हेतु अधिक इंसुलिन की आवश्यकता नहीं पड़ती।

हृदय, तिल्ली का मातृ अंग होता है और फेफड़ा पुत्र अंग। तिल्ली, यकृत से नियन्त्रित होती है और गुर्दों को नियन्त्रित करती है। अत: पेंक्रियाज के बराबर कार्य न करने से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से हृदय, फेफड़े, गुर्दे, यकृत आदि भी प्रभावित हो सकते हैं, जिसका प्रभाव उनके पूरक (यांग) अंगों छोटी आंत, बड़ी आंत, मूत्राशय और पित्ताशय पर भी पड़ सकता है। जो अंग जितना-जितना असक्रिय होता है, उसी के अनुपात में उससे संबंधित रोगों के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। इसी कारण सभी मधुमेह के रोगियों के बाह्य लक्षण एक जैसे नहीं होते।

किसी को भूख और प्यास अधिक लगती है, तो किसी को अधिक पेशाब। किसी की

त्वचा खुश्क एवं खुरदरी हो जाती है या चर्म रोग होते हैं तो किसी के बाल झड़ने लगते हैं। किसी में यकृत, गुर्दों, हृदय या फेफड़ों से संबंधित रोगों के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। यदि लक्षणों के आधार पर संबंधित अंगों में प्राण ऊर्जा के प्रवाह को बियोल ऊर्जा संतुलन पद्धति द्वारा संतुलित कर दिया जाये तो असाध्य समझा जाने वाला मधुमेह चंद दिनों में ही बिना दवा ठीक किया जा सकता है। अत: सभी मधुमेह के रोगियों के लिये एक जैसा उपचार कैसे संभव हो सकता है?

मधुमेह से मुक्ति हेतु पाचनतंत्र के नियमों का पालन आवश्यक

करोड़पति पिता का पुत्र यदि धन का व्यर्थ अपव्यय करे तो अधिक परेशानी नहीं होती, परन्तु उसकी देखा-देखी उसका गरीब मित्र भी धन का अपव्यय करने लगे तो उसको कठिनाई हो सकती है। इंसुलिन का कार्य भोजन के पाचन में सहयोग करना होता है। अत: मधुमेह का रोगी यदि पाचन के नियमों का दृढ़ता से पालन करे एवं उपलब्ध सीमित इंसुलिन की मात्रा का सही उपयोग करे तो इंसुलिन की कमी से होने वाले दुष्प्रभावों से सहज बचा जा सकता है।

सही समय पर भोजन करें

जब प्रकृति से आमाशय और पेंक्रियाज/तिल्ली समूह में अधिकतम प्राण ऊर्जा का प्रवाह हो, अर्थात् जब वे दिन में सर्वाधिक सक्रिय हों, उस समय मधुमेह के रोगियों को अपना मुख्य भोजन अवश्य कर लेना चाहिए, ताकि उसका सहजता से पाचन हो सके।

पाचन के नियमों का पालन करें

दूसरी बात, मधुमेह के रोगियों को भोजन तनाव रहित वातावरण में धीरे-धीरे चबा-चबा कर खाना चाहिए, जिससे भोजन में थूक और लार मिलने से उसका आंशिक पाचन मुँह में ही सम्पन्न हो सके। आमाशय को पाचन हेतु अधिक ऊर्जा एवं इंसुलिन की आवश्यकता नहीं होती। चबा-चबा कर खाना खाना मधुमेह की सर्वोत्तम औषधि है। भोजन सूर्य स्वर में करने तथा भोजन के पश्चात् कुछ समय वज्रासन में बैठने से पाचन ठीक होता है। साथ ही भोजन करने के लगभग डेढ़ घंटे से दो घंटे तक जब तक पाचन की प्रारम्भिक क्रिया पूर्ण न हो जाये, पानी नहीं पीना चाहिए।

पाचन तंत्र को अनावश्यक क्रियाशील न रखें

तीसरी बात, मधुमेह के रोगियों को बार-बार मुंह में कुछ डालकर पाचन तंत्र को हर समय क्रियाशील नहीं रखना चाहिए, अन्यथा मुख्य भोजन के समय पाचन तंत्र पूर्ण क्षमता से कार्य नहीं करता है। सुबह का भोजन यथा संभव जल्दी एवं सायंकाल का भोजन सूर्यास्त

के पूर्व कर लेना चाहिये, क्योंकि उसके पश्चात् आमाशय और पेंक्रियाज में प्रकृति से प्राण ऊर्जा का प्रवाह निम्नतम होता है। फलत: आवश्यक इंसुलिन उपलब्ध नहीं होता। यथा संभव दो बार से अधिक पाचन तंत्र को क्रियाशील नहीं करना चाहिए। प्रतिदिन एक समय भोजन करना तथा सप्ताह में एक बार उपवास मधुमेह के रोगियों के लिये बहुत लाभप्रद है।

भोजन में स्वाद का संतुलन रखें

चौथी बात, भोजन में कड़वे स्वाद वाले पदार्थ जैसे करेला, दाणामेथी, नीम आदि का अधिक प्रयोग करना चाहिये, जिससे पाचन हेतु ताप ऊर्जा उपलब्ध हो सके। भोजन में मीठे पदार्थों का सेवन जितना कम कर सकें, करना चाहिये, ताकि उनको पचाने हेतु इंसुलिन की कम आवश्यकता पड़े।

सत्साहित्य का स्वाध्याय एवं सम्यक् चिन्तन करें

तनाव, चिन्ता, भय तथा शारीरिक श्रम का अभाव मधुमेह का मुख्य कारण होता है। मधुमेह का रोगी किसी भी दृष्टि से शारीरिक अथवा मानसिक रूप से अपंग नहीं होता है। अत: उन्हें अपने चिन्तन की दिशा में परिवर्तन कर जीवन शैली बदलनी चाहिए। संयमित, नियमित, अनुशासित दिनचर्या से वे जीवन के किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। मधुमेह के रोगियों को सद्-साहित्य का स्वाध्याय, आध्यात्मिक भजनों का गायन व श्रवण, ध्यान,मौन एवं सकारात्मक चिन्तन में समय व्यतीत करना चाहिए। सम्यक् चिन्तन ही मधुमेह का स्थायी उपचार होता है।

पेंक्रियाज को सशक्त बनाने के उपाय

मधुमेह के अन्य प्रमुख कारण शारीरिक श्रम का अभाव, अप्राकृतिक जीवन शैली और गलत खानपान आदि होते हैं। व्यायाम, आसन, प्राणायाम तथा प्राकृतिक नियमों का यथासंभव पालन कर एवं इन्द्रिय-संयम से उन पर नियन्त्रण रखा जा सकता है। मधुमेह के रोगी को अपने आपको अधिकाधिक व्यस्त रखना चाहिए। खुले बदन धूप सेवन से भी ऊर्जा मिलती है।

1. प्रात:काल जल्दी उठ शांत वातावरण में चैतन्य चिकित्सा द्वारा तिल्ली-पेंक्रियाज पर दबाव के माध्यम से आवश्यक चेतना पहुँचानी चाहिए, जिससे तिल्ली और पेंक्रियाज शक्तिशाली होते हैं।
2. प्रतिदिन कुछ मिनटों के लिये लगातार मुस्कराने एवं खुलकर हँसने से शरीर में तनाव, भय, नकारात्मक सोच के कारण एकत्रित विजातीय तत्त्व विसर्जित होने लगते हैं।
3. मधुमेह के रोगियों का नाभि केन्द्र प्राय: विकार ग्रस्त हो जाता है। स्पन्दन केन्द्र में नहीं

रहता। अत: नाभि केन्द्र को स्वस्थ रखना आवश्यक होता है। जब तक नाभि संतुलित न हो जाए, नियमित नाभि का संतुलन करना चाहिए।

4. मधुमेह सम्बन्धी रोगियों को अपने पैरों, गर्दन और मेरूदण्ड का संतुलन नित्य परीक्षण कर ठीक रखना चाहिए।
5. पेंक्रियाज और तिल्ली डायफ्राम के नीचे बांयीं तरफ शरीर में स्थित होते हैं। अत: वहां पर दाणा मैथी का स्पर्श रखने से पेंक्रियाज की ताकत बढ़ती है।
6. प्रात:काल उदित सूर्य को चन्द मिनटों तक देखना एवं उषापान से मधुमेह के रोगियों को बहुत लाभ होता है।
7. चुम्बक का सक्रिय दक्षिणी ध्रुव तिल्ली-पेंक्रियाज पर आवश्यकतानुसार कुछ समय स्पर्श करने से उसकी ताकत बढ़ती है।
8. सूर्यमुखी तेल के गंडूस से रक्त का शुद्धीकरण होता है, फलत: मधुमेह ठीक होता है।
9. मधुमेह के रोगी को प्राण मुद्रा एवं नमस्कार मुद्रा का अधिकाधिक अभ्यास करना चाहिए।
10. हथेली और पगथली में एक्यूप्रेशर के सभी संवेदनशील प्रतिवेदन बिन्दुओं पर दबाव देना चाहिए, परन्तु पेंक्रियाज, तिल्ली, लीवर, गुर्दों तथा सभी अन्त:स्रावी ग्रन्थियों के मुख्य बिन्दुओं पर विशेष एकाग्रता पूर्वक एक्यूप्रेशर करना चाहिए।
11. तिल्ली बियोल मेरेडियन में ऊर्जा का प्रवाह बढ़ाना चाहिए, जिससे पेंक्रियाज में भी अधिक ऊर्जा पहुँचती है।
12. मधुमेह के रोगियों को कार्य के अनुरूप स्वर संचालन हेतु विशेष सजगता रखनी चाहिये।
13. रोगी को अपने स्वमूत्र का पान करना चाहिए, जिससे शरीर के अन्दर के सारे विकार दूर हो जाते हैं। प्राय: मधुमेह वालों को यह आशंका रहती है कि उनके मूत्र के साथ शर्करा का विसर्जन होता है, अत: उसको कैसे लिया जा सकता है? परन्तु शिवाम्बु चिकित्सा में रोगी का अपना शिवाम्बु ही उसके रोग की राम-बाण दवा होती है। शिवाम्बु का तर्कसंगत सत्-साहित्य पढ़ने से उसके प्रति मन की सारी भ्रान्तियाँ दूर हो जाती हैं। जिस प्रकार जौहरी ही रत्नों की पहचान कर सकता है, इंजीनियर आदि अन्य व्यक्ति नहीं। ठीक उसी प्रकार जैसी चिकित्सा करनी है, उसी के अनुभवी चिकित्सक का परामर्श महत्त्वपूर्ण होता है, अन्य का नहीं।
14. मधुमेह के रोगियों के लिए पथ्य-अपथ्य का विवेक औषधि एवं उपचारों से श्रेष्ठ होता

है।

यदि उपर्युक्त नियमों की पालना की जाए तो मधुमेह जैसा असाध्य रोग चन्द दिनों में ही नियन्त्रण में आकर समाप्त हो जाता है।

मधुमेह शारीरिक से ज्यादा मानसिक रोग है। आधुनिक चिकित्सकों द्वारा उसको असाध्य बतलाने के कारण, रोगी यह स्वीकार करने को तैयार नहीं होता कि मधुमेह ठीक भी हो सकता है। अनेक रोगियों का उपचार करते समय मैंने प्राय: ऐसा अनुभव किया कि उपचार के पश्चात् मधुमेह के सारे लक्षण दूर हो जाने के बावजूद रोगी अपने आपको मधुमेह का रोगी मानते रहते हैं। एक बार चिकित्सक द्वारा मधुमेह की घोषणा करने के पश्चात् अपना नियमित परीक्षण करवाते रहते हैं और परीक्षणों में मधुमेह के लक्षण न आने के बावजूद बहुत से रोगी दवा की दासता नहीं छोड़ते। परन्तु जो सम्यक् चिन्तन और वैज्ञानिक तर्कों के आधार पर रोग के मूल कारणों को समझ स्वावलम्बी उपचारों की प्रामाणिकता से अपना विवेक जागृत कर लेते हैं, उन्हें स्थायी रूप से दवाओं से मुक्ति मिलती है।

कहने का आशय यह है कि मधुमेह का प्रभावशाली उपचार स्वावलम्बी चिकित्सा पद्धतियों में सम्भव होता है, क्योंकि वहाँ पर रोग के मूल कारणों को दूर किया जाता है न कि, बाह्य माध्यम द्वारा इंसुलिन की पूर्ति कर रोग के मुख्य कारणों की उपेक्षा की जाती है। फैसला आपके हाथ में है, जीवन भर दवाइयाँ खाकर मधुमेह के रोगी बने रहें अथवा स्वावलम्बी उपचारों के द्वारा उससे अपने आपको मुक्त करें।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन: 0291-2621454, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com,

Website: www.chordiahealthzone.com, www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर 15 अगस्त 2013 तक श्री चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं पते सहित सीधे प्रेषित कर सकते हैं। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

1. मधुमेह होने के कोई चार कारण लिखिए।

2. पेंक्रियाज ग्रन्थि के बारे में बताइए।
3. मधुमेह के रोगी को भूख-प्यास अधिक क्यों लगती है?
4. तिल्ली बियोल मेरिडीयन विधि क्या है?
5. मधुमेह का एक रोगी बहुत निराश एवं हताश है, आप उसको कैसे समझाएँगे कि वह प्रसन्नचित्त हो जाए।
6. मधुमेह को शारीरिक रोग से ज्यादा मानसिक रोग क्यों कहा गया है?

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के अप्रेल-मई 2013 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत 'स्वर का हमारे जीवन पर प्रभाव' के प्रश्नों के उत्तर 32 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। उनमें से तीन प्रतियोगियों के समान अंक होने से उनको समान राशि का वितरण किया जा रहा है।

पुरस्कार एवं राशि-	**नाम**
प्रथम पुरस्कार (750/-रु.)	श्रीमती मीना जैन-कोटा (राज.)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्रीमती पुष्पा सुकनराज कोठारी-मुम्बई (महा.)
तृतीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्री राणुलाल माणिकचन्द कोचर-नाशिक (महा.)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व पूरा पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें।

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.

सम्यक् क्रम

जब हो जाएगा दूर मिथ्या भ्रम,
तब होने लगेगी आत्मा से दूरी कम,
इसके बिना कितना भी
क्यों न करो बाह्य श्रम,
पर आत्मा नहीं पाएगी स्वयं में रम,
इसीलिए सर्वज्ञों ने कहा
सम्यक् दर्शन ज्ञान-चारित्र-तप
यही है मोक्ष-मार्ग में
बढ़ने का सम्यक् क्रम।

तीक्ष्ण शूल

यह नश्वर क्षणभंगुर
औदारिक शरीर तो है धूल,
इसको अपना मान रखा
यही है सबसे भारी भूल,
जिस दिन यह भूल चुभेगी अन्तर में
जैसे तीक्ष्ण शूल,
उसी दिन खिल उठेंगे हमारे
जीवन उपवन में
सुन्दर-सुवासित सुरम्य फूल।

बाल-स्तम्भ

धन, प्रेम और सफलता

श्री अनन्त जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के व्यक्ति 15 अगस्त 2013 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुमार छात्रावास के सामने, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

एक औरत अपने घर से निकली, उसने घर के सामने सफेद लम्बी दाढ़ी में तीन साधु-महात्माओं को बैठे देखा, वह उन्हें पहचान नहीं पायी।

उसने कहा-"मैं आप लोगों को नहीं पहचानती, बताइए क्या काम है?"

"हमें भोजन करना है।" साधुओं ने कहा।

"ठीक है, कृपया आप सभी मेरे घर पर पधारिये और भोजन ग्रहण कीजिये।"

"क्या तुम्हारा पति घर में है?" एक साधु ने प्रश्न किया।

"नहीं, वे कुछ देर के लिए बाहर गए हैं," औरत ने उत्तर दिया।

"तब हम अन्दर नहीं आ सकते है", तीनों एक साथ बोले।

थोड़ी देर में पति घर पर आ गया। उसे साधुओं के बारे में पता चला तो उसने तुरन्त अपनी पत्नी से उन्हें पुनः आमंत्रित करने को कहा। औरत ने ऐसा ही किया। वह साधुओं के समक्ष गयी और बोली-"महाराज जी, अब मेरे पति घर आ गए हैं, कृपया आप लोग घर में प्रवेश कीजिए।"

"हम किसी के घर में एक साथ प्रवेश नहीं करते," साधुओं ने स्त्री को बताया।

"ऐसा क्यों है?" औरत ने अचरज से पूछा।

जवाब में मध्य में खड़े साधु ने कहा- "पुत्री मेरी दायीं तरफ खड़े साधु का नाम 'धन' और बायीं तरफ खड़े साधु का नाम 'सफलता' है, और मेरा नाम 'प्रेम' है। अब जाओ और अपने पति से विचार-विमर्श करके बताओ कि तुम हम तीनों में से किसे बुलाना चाहती हो।"

औरत अन्दर गयी और अपने पति को सारी बात बता दी। पति बेहद खुश हो गया। ''वाह, आनंद आ गया, चलो जल्दी से 'धन' को बुला लेते हैं, उसके आने से हमारा घर धन-दौलत से भर जाएगा, और फिर कभी पैसों की कमी नहीं रहेगी।''

औरत बोली-''क्यों न हम सफलता को बुला लें, उसके आने से हम जो करेंगे वो सही होगा, और हम देखते-देखते धन-दौलत के मालिक भी बन जायेंगे।''

''हम्म, तुम्हारी बात भी सही है, पर इसमें मेहनत करनी पड़ेगी, मुझे तो लगता है धन को ही बुला लेते हैं,'' पति बोला।

थोड़ी देर उनकी बहस चलती रही पर वो किसी निश्चय पर नहीं पहुँच पाए, और अंततः निश्चय किया कि वे साधुओं से यह कहेंगे कि धन और सफलता में जो आना चाहे आ जाये।

औरत झट से बाहर गयी और उसने यह आग्रह साधुओं के सामने दोहरा दिया।

उसकी बात सुनकर साधुओं ने एक दूसरे की तरफ देखा और बिना कुछ कहे घर से दूर जाने लगे।

''अरे! आप लोग इस तरह वापस क्यों जा रहे हैं?'' औरत ने उन्हें रोकते हुए पूछा।

''पुत्री, दरअसल हम तीनों साधु इसी तरह द्वार-द्वार पर जाते हैं, और हर घर में प्रवेश करने का प्रयास करते हैं, जो व्यक्ति लालच में आकर धन या सफलता को बुलाता है हम वहाँ से लौट जाते हैं, और जो अपने घर में प्रेम का वास चाहता है उसके यहाँ बारी-बारी से हम दोनों भी प्रवेश कर जाते हैं, इसलिए इतना याद रखना कि जहाँ प्रेम है, वहाँ धन और सफलता की कमी नहीं होती।'' ऐसा कहते हुए धन और सफलता नामक साधुओं ने अपनी बात पूर्ण की।

-संकलित, सी-426, जे.डी.ए., पालडी मीना, आगरा रोड़, जयपुर (राज.)

प्रश्नः-

1. औरत द्वारा साधुओं को घर पर निमन्त्रण देना- हमारी संस्कृति के कौनसे पहलू का परिचायक है?
2. महात्मा किसे कहते हैं?
3. पति के घर न रहने पर साधु घर में प्रविष्ट क्यों नहीं हुए?
4. धन से सफलता प्राप्त होती है- इस बात से आप कहाँ तक सहमत हैं?
5. प्रेम से धन और सफलता मिलती है- समझाइये।
6. दो-दो पर्यायवाची लिखिए- लालच, धन, साधु, औरत, पति।

(बाल-स्तम्भ मई-2013 का परिणाम पृष्ठ 75 पर देखें)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

गौतम से प्रभु फरमाते- मधुर व्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी, ***संकलन***- विवेक कुमार जैन (राहुल), ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान), फोन-0141-2575997, 2571163, फैक्स-0141-2570753, Email-sgpmandal@yahoo.in ***पृष्ठ***- 13+175 (आर्ट पेपर), ***मूल्य***-40 रुपये मात्र, मई 2013

कवित्व की प्रतिभा में रत्नसंघ के ही नहीं, अपितु स्थानकवासी परम्परा के गौरव मधुरव्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी के द्वारा रचित गीत एवं भजन आज सम्पूर्ण देश में गाये जाते हैं। उनके गीत-भजनों को अच्छी लोकप्रियता एवं प्रसिद्धि मिली है। उनके भजनों में भाव एवं भाषा का अद्‌भुत समन्वय रहता है। लयपूर्वक गाए जाने पर भावों का सम्प्रेषण व्यक्ति को अन्तस्तल में अनुभूत होता है। प्रवचनों में माधुर्य का सम्मिश्रण घोलने वाले सन्तप्रवर में स्वाभाविक कवित्व है। वे देव-प्रार्थना, प्रभु-अर्चना, संघ-गुणगान, गुरुभक्ति, गुरुवन्दना, पर्व-पर्युषण एवं जीवन को दिशा देने वाले आध्यात्मिक, साधनापरक एवं पारिवारिक-सामंजस्य से सम्पृक्त भजन-गीत रचने में सिद्धहस्त हैं। श्री विवेक जैन, भरतपुर ने मुनिप्रवर के भजनों का संकलन कर सबका उपकार किया है। पुस्तक का नाम 'गौतम से प्रभु फरमाते' रखने का कारण यह प्रतीत होता है कि श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी के कई भजनों के अन्तिम चरण में 'गौतम से प्रभु फरमाते', 'गौतम' से प्रभु कहते, प्रभु 'गौतम' से कहते' आदि शब्दावली का प्रयोग हुआ है। पुस्तक में उनके 138 गीत-भजन संकलित हैं, जिनका विषयवार वर्गीकरण किया गया है। जिनवाणी में भी आपश्री की संकलित रचनाएँ समय-समय पर प्रकाशित होती रही हैं। पुस्तक में मुनि श्री का यथोचित स्थान पर नाम का प्रकाशन होता, तो पुस्तक की शोभा बढ़ती। पुस्तक ''आचार्य श्री हीराचन्द्र जी एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशताब्दी पर उनके संयमी जीवन को समर्पित की गई है।

सचमुच! मैत्री तूं महान् है- आचार्य विजयराज, ***प्रकाशक***- श्री अ.भा.सा.शान्त-क्रान्ति जैन श्रावक संघ, 279-एच, 'नवकार भवन' हिरण मगरी, सेक्टर नं.3, महावीर भवन के पास, उदयपुर-313002 (राज.), दूरभाष- 0294-2461588, Email-shramansanskriti@rediffmail.com ***पृष्ठ*** 368, ***मूल्य***-70

रुपये, *सन्*-2012

सबके प्रति वैर का परिहार करने के लिए एवं आत्मीयता का आनन्द पाने के लिए मैत्री भावना एक सुन्दर उपाय है। मैत्री भावना मानव में सकारात्मक सोच को उत्पन्न करती है तथा ईर्ष्या-द्वेष के विष का खात्मा करती है। आचार्य विजयराज जी ने रायचूर (कर्नाटक) में 'मैत्री' विषय पर जो प्रवचन फरमाए, उनका आशुलेखन एवं सम्पादन विदुषी महासती श्री सम्बोधि श्री जी द्वारा किया गया। पुस्तक में 24 प्रवचनों का संग्रह है, जिसमें मैत्री से महके जीवन, आहार मैत्री, समय-धन से मित्रता, संकल्प-मित्रता, पुरुषार्थ-मैत्री, अनुशासन-मैत्री, त्याग-मैत्री, भ्राता-मैत्री, श्रद्धा से मित्रता, दुःख से दोस्ती, संघ-मित्रता, आदि विषयों पर रोचक एवं प्रेरक व्याख्यान हैं। उनके प्रवचनों में सकारात्मक दृष्टि, प्रवाह एवं विषय-सम्बद्धता है।

मेरा सूरज मैं- आचार्य विजयराज, ***प्रकाशक***- श्री अ.भा.सा. शान्त-क्रान्ति जैन श्रावक संघ (पता उपर्युक्तानुसार), ***पृष्ठ***- 104 (आर्ट पेपर), ***मूल्य***- 40 रुपये, अक्टूबर 2012

आचार्यप्रवर श्री विजयराज जी द्वारा सन् 2009 के हुबली चातुर्मास में व्यक्त विचारों का यह संकलन विदुषी महासती श्री वैभवश्री जी द्वारा प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में दर्शन-विशुद्धि, पुरुषार्थ-सिद्धि, काल-स्वभाव-कर्म-पुरुषार्थ-नियति, चिन्ता-मुक्ति, व्यवहार शुद्धि आदि विषयों पर विचार-बिन्दु संकलित हैं, जो पाठक को विषय पर प्रकाश प्रदान करते हैं, इसीलिए सम्भवतः पुस्तक का नाम 'मेरा सूरज मैं' रखा गया है।

ऐसी हुई जब गुरु कृपा (भाग- 1 एवं 2)- आचार्य श्री विजयराज जी म.सा., ***प्रकाशक***- श्री अ.भा.सा. शान्त-क्रान्ति जैन श्रावक संघ (पता उपर्युक्तानुसार), ***पृष्ठ***- 416+412 (लघुभारमय), ***मूल्य***- 100 रुपये प्रत्येक, अक्टूबर 2012

यह एक विशिष्ट शैली में रचित ग्रन्थ है, जो पाठक को प्रभूत एवं उपयोगी पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराता है। अकारादि क्रम से प्रथम भाग में 148 विषयों पर तथा द्वितीय भाग में 185 विषयों पर चिन्तन प्रस्तुत हुआ है। अकारादि क्रम में कतिपय विषय इस प्रकार हैं- अनासक्त रह, अनबन ना कर, आलस तज, इंसाफ कर, ईर्ष्या ने छोड़, ईमानदारी सूं जी, उपवास कर, उपयोगी बण, ऊँचो मत बोल, एक लक्ष्य राखं, ऐश्वर्य रो मद मत कर, ओछी बोली ना बोल, औरत सूं हेत ना कर, कायरता ने दूर भगा, गीदड़ मत बण आदि। प्रत्येक विषय का प्रारम्भ लोक भाषा की तीन पंक्तियों के गुरु-शिष्य संवाद से हुआ है, उदाहरणार्थ 'अटल रह' विषय आलेख में-

गुरु केवे चेला ने- अटल रह!
चेलो पूछे गुरु ने- किण में अटल रहूँ?
गुरु केवे- आपणी प्रतिज्ञा में।

इस प्रकार के संवाद के पश्चात् सम्बद्ध विषय पर आध्यात्मिक, पारिवारिक, सामाजिक या वैयक्तिक दृष्टि से उपयोगी चिन्तन प्रस्तुत हुआ है, जिसे पढ़कर पाठक कोई न कोई शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

पुस्तक का आशुलेखन एवं सम्पादन विदुषी महासती श्री युगप्रभाजी द्वारा किया गया है।

गीत

आओ सब मिल करें वन्दन

श्रीमती चेतना बोथरा

(तर्ज:- यह देश है वीर जवानों का)

मेरे हीरा गुरु का क्या कहना, मेरे मान गुरु का क्या कहना।
ये दोनों अगर मिल जाते हैं,सूरज और चांद नज़र आते।।हो हो हो.....।।

एक में सूरज का है प्रकाश, दूजे में चाँद का धवल हास।
सागर की सी गहराई है, और करुणा इनके आसपास।। हो हो हो.....।।

इन दोनों संतों का क्या कहना, यह रत्नसंघ का है गहना।
इनमें है ज्ञान का महासागर, डूबें तो पायें रतन गागर।। हो हो हो.....।।

ये पाँच महाव्रत पालते हैं, छः काय रक्षक कहलाते हैं।
इन दोनों में छवि हस्ती की, दोनों से जुड़ी मे भक्ति।। हो हो हो.....।।

ये दोनों धरती के मानव, पर देवों की जैसी मस्ती है।
है आत्म-रमण में सदा लिप्त, दुनियाँ चरणों में झुकती है।। हो हो हो.....।।

आओ सब मिल वन्दन करें, पचासवीं दीक्षा अवसर पर।
अंतर में उठी इस कल्पना को, गायें और अभिनन्दन करें।। हो हो हो.....।।

-नालन्दा बिल्डिंग नं.1, विंग बी', फ्लेट नं. 51, एवरशाइननगर, मलाड (प.), मुम्बई-64

कविता

सीखें गुरु हीरा से

सुश्री खुशबू पटवा

रत्न तो लाखों मिले, मगर ज्ञान रत्न न मिला।
धन तो हर वक्त मिला, चैन किसी क्षण न मिला।
खोजते-खोजते जब थक गए थे जीवन से
उसी क्षण गुरु हीरा की वाणी से, धर्म का ज्ञान मिला।।
संयम को धारा, जीवन को संवारा।
धन्य है आचार्य हीरा को, मिला हमें आपका सहारा।।
दिव्य दीपक सी दिशा देते
सांझ सवेरे समता सहते
जिनके कार्य से जुड़ी है जिनवाणी
कैसे गाएँ उनके गुणों की कहानी।
सुख का साथ कब तक
कर्मों की निर्जरा तब तक
गुरु हीरा का साथ निभालो
तुम में हो सांस जब तक।।
शुद्ध संयम के पालक गुरु हीरा को प्रणाम
वाणी से जादू करे, देते शास्त्रों के प्रमाण
क्या जीवन संवारा है आपने सबका
जिनकी वजह से श्रावकों में आता है उच्च परिणाम।।
जन-जन के आप राम हैं
हमारी श्रद्धा के आप धाम हैं
याद आते आप सुबह और शाम हैं
भगवन्त के चरणों में भक्ति भाव युक्त प्रणाम हैं।।
जिनमें है आगम का बल, श्रद्धा जिनकी है अविचल।
चारित्र की चदरिया है शुभ्र धवल
रत्नत्रय से मंडित गुरु हीरा विभूति विरल।
हीरा चमकता है अपनी आभा से
हीरा दमकता है अपनी बहुमूल्यता से
हीरा टिकता है अपनी दृढ़ता से
चमकना, दमकना, टिकना सीखें गुरु हीरा से।।

-सुपुत्री श्री राजेन्द्र कुमार पटवा, 3/101, जवाहरनगर, जयपुर-302007 (राज.)

गीत

यह कैसा दीवानापन है, मोबाइल के साथ में

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

यह कैसा दीवानापन है, मोबाइल के साथ में,
छोड़ नहीं पाते हो इसको, रहता हर दम हाथ में।
यह कैसा.....।। टेर।।
माना कुछ हद तक तो साथी, बड़े काम की चीज़ है,
पर डूबे क्यों रहते इसमें, बात बड़ी अज़ीब है।
खुद होकर ही फंस रहे हो, अनर्थ दण्ड के जाल में।
यह कैसा.....।। 1।।
उठते-बैठते, सोते-जागते, बिन मोबाइल चैन नहीं,
दिन भर रहती माथापच्ची, सुख की कोई रैन नहीं।
अब भी वक्त संभलजा बंदे, पछताओगे बाद में।
यह कैसा.....।। 2।।
जैसा तुम करते हो देखकर, बच्चे भी अब करते हैं,
कर रहे दुरुपयोग हैं इसका, नहीं बड़ों से डरते हैं।
अपना ही कसूर है भाई, दिया है इनके हाथ में।
यह कैसा.....।। 3।।
रोकथाम गर नहीं हुई तो, अंज़ाम बुरे हम पाएंगे,
देख-देख इनकी करतूतें, मन ही मन पछताएंगे।
दुष्परिणाम लो आ रहे हैं, तरह-तरह की बात में।
यह कैसा.....।। 4।।
कितने फंक्शन भरे हुए हैं, कितने ऊल-जलूल हैं,
ध्यान नहीं दे रहे हैं फिर भी, यही हमारी भूल है।
झूठ फरेब का बना है साधन, कलंक बड़ा है माथ में।
यह कैसा.....।।
नाम मात्र के जैन हैं हम तो, जीवन में जैनत्व नहीं,
कहलाते हैं वीर भक्त हम, उसका कोई अर्थ नहीं।
संस्कारों की सौरभ दे कर, सबको लो विश्वास में।
यह कैसा.....।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित

'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (32) का परिणाम

जिनवाणी के मई-2013 के अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (32) में 160 प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के फरवरी-मार्च-अप्रेल-2013 के अंकों पर आधारित थी। परिणाम लक्की ड्रॉ के आधार पर निकाला गया है। परिणाम इस प्रकार है-

प्रथम पुरस्कार- 1100/- रुपये — वंदना जैन-पाली,मारवाड़ (50)

द्वितीय पुरस्कार- 750/- रुपये — श्री अनिल जैन-कोटा (50)

तृतीय पुरस्कार- 500/- रुपये — श्री वीरेन्द्र कुम्भट-जोधपुर (50)

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये (प्रत्येक)

श्रीमती आशा अग्रवाल-जयपुर (50) — डॉ.अरिहन्त जैन-जयपुर (50)

श्रीमती कमलेश गेलड़ा-अजमेर (50) — श्री सुधीर जैन-फरीदकोट (50)

श्रीमती चंचल गोलेच्छा-जयपुर (50)

50 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:-ज्ञान कोठारी-अजमेर, रेखा कोठारी-अजमेर, मधुबाला ओस्तवाल-नासिक, सुनीता कुम्भट-ब्यावर, अमिता जैन-इन्दौर, सरोज खाबिया-मैसूर, कविता श्रीश्रीमाल-नवी मुम्बई, संगीता खाबिया-मैसूर, पुखराज जैन-मसूदा, कमलादेवी सेठिया-मसूदा, शिल्पा सुराणा-अजमेर, हेमा जैन-जयपुर, प्रमिला पोखरणा-धुलिया, नीरा भण्डारी-ब्यावर, धर्मेश पूनमिया-पाली मारवाड़, जयमाला कांकरिया-पाली, पारसचन्द जैन-गोपालगढ़, हेमराज सुराणा-जयपुर, विजयलक्ष्मी-अजमेर, अभिलाषा मेहता-अजमेर, संदीप जैन-जोधपुर, किरण कुम्भट-जोधपुर, गीता जैन-जालन्धर।

49.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:- अल्का जैन-दिल्ली, पुष्पा गोलेच्छा-ब्यावर, प्रमिला बोहरा-जैतारण, सुनीता मेहता-जोधपुर, ज्योतिप्रकाश जैन-चौरू, कलावती चौरड़िया-जलगांव, डॉ. पदमचन्द मुणोत-जयपुर, ममता लूंकड़-भोपालगढ़, दीपिका लूंकड़-भोपालगढ़, अनुराग सुराणा-अजमेर, लता आंचलिया-धुलिया, प्रियंका बाफणा-भोपालगढ़, भारती मंडलेचा-पुणे, शशिकला लुणावत-नासिक।

49 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-ऋषभ जैन-सुमेरगंजमण्डी, सुरेशचन्द जैन-खेरली, जया भण्डारी-ब्यावर, मोनिका जैन-इन्दौर, रमणलाल छाजेड़-देवपुर, उजास डाकलिया-जोधपुर, अस्मिता सुराणा-जोधपुर, नीता जैन-बैंगलोर, सरिता बोहरा-जयपुर, निशा जैन-अलवर, मधुरिका जैन-गुड़गांव, पारुल खींवसरा-जोधपुर, मधुबाला जैन-बूंदी, बबीता जैन-भरतपुर, सुधा विराणी-पूना, बीना लोढ़ा-कानपुर, पारस जैन-वल्लारी, रिंकी जैन-अलीगढ़ रामपुरा, रीमा जैन-लुधियाना, मोहनबाई लोढ़ा-अजमेर, विजयलक्ष्मी मोहनोत-जयपुर, श्रीमती पुष्पा गांधी-जोधपुर, कल्पना धाकड़-गुड़गांव, रतनचन्द मेहता-जोधपुर, दीपचन्द पारख-गंगाशहर, वर्षा सुराणा-नासिक, विद्या संघवी-बदनावर, तनुजा कोठारी-धुलिया, राजुल कोठारी-धुलिया, सरोज रुणवाल-धुलिया, सुनील जैन-मैसूर, अतिका मेहता-जोधपुर, रोमा मेहता-जोधपुर।

48. 5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-सरिता गांधी-पीपाड़ सिटी, कंचन जैन-जोधपुर, फूलकंवर भण्डारी-रायपुरिया, भरतसिंह जैन-भरतपुर, जया जैन-भरतपुर, बेबी जैन-भरतपुर, देवीलाल भानावत-कानोड़, सुशीला बैंगाणी-बीकानेर, सुनंदा लोढ़ा-धुलिया, प्रकाशचन्द गेलड़ा-चन्नपटना, भगवानराज सिंघवी-पाली, सोनु कोठारी-जयपुर, सुमन छाजेड़-जयपुर, तारा रुणवाल-जयपुर, जौहरीमल छाजेड़-जोधपुर।

48 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-कंचन लोढ़ा-नासिक, सरला छाजेड़-जलगांव, लता बरडिया-जलगांव, कंवलराज मेहता-जोधपुर, शोभा कोठारी-धुलिया, विभा जैन-जोधपुर, सविता चौरड़िया-जलगांव, पारसमल बाघमार-बाड़मेर, सायर संचेती-जयपुर, विद्या संचेती-जोधपुर, निर्मला सांड़-पूना, प्राची सिंघवी-गुड़गांव, प्रमिला

कोठारी–मेड़तासिटी, मीनाक्षी लोढ़ा–गुड़गांव, उषा सुराणा–जयपुर, विमला खींवसरा–धुलिया, पदमचन्द गांधी–जोधपुर, प्रेम जैन–अलवर, मोनिका जैन–सुल्तानपुर, बबीता संचेती–अलवर, पुष्पाबाई कांकरिया–देवपुर, विजयलक्ष्मी लोढ़ा–जयपुर, नेणचन्द बाफणा–जोधपुर, सरला रांका–जलगांव, चंदनमल पालरेचा–जोधपुर, रेणु शाह–सवाईमाधोपुर, महेन्द्र साहु–बेलगांव, बी.एल.जैन–भरतपुर, मोनिका जैन–जोधपुर।

(शेष प्राप्तांकों की सूची नहीं दी जा रही है।)

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (32) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं –

प्र.	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	प्र.	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
1.	18	अप्रेल/118	2.	6	फरवरी/88
3.	4	अप्रेल/13	4.	14	मार्च/82
5.	4	फरवरी/27	6.	72000	अप्रेल/84
7.	120	मार्च/101	8.	7	फरवरी/57
9.	3	अप्रेल/69	10.	10	मार्च/56
11.	10	फरवरी/70	12.	5000	अप्रेल/कवर पृष्ठ
13.	18	अप्रेल/74	14.	3	मार्च/55
15.	4	फरवरी/15	16.	ज्ञान पर्यव	अप्रेल/11
17.	प्रमाद	मार्च/27	18.	सत्यभाषा	फरवरी/79
19.	विनय	अप्रेल/21	20.	रात्रिभोजन/सप्त कुव्यसन त्याग (फरवरी/8)	
21.	अहम	अप्रेल/34	22.	स्वप्निका	मार्च/100
23.	जिनवाणी	फरवरी/58	24.	अनाथी मुनि	अप्रेल/75
25.	स्वाध्याय	फरवरी/67	26.	चावल	मार्च/77
27.	संयम	मार्च/89	28.	शील/ब्रह्मचर्य	अप्रेल/43
29.	धर्मतन्त्र/धर्मव्यवस्था	मार्च/55	30.	रामचन्द्र	फरवरी/20
31.	प्रश्नव्याकरण	अप्रेल/21	32.	उत्तराध्ययन सूत्र	फरवरी/27
33.	भगवती सूत्र	मार्च/31	34.	योगशास्त्र	अप्रेल/29
35.	उत्तराध्ययन सूत्र	फरवरी/11	36.	उत्तराध्ययन सूत्र	मार्च/16
37.	उपासकदशांग सूत्र	अप्रेल/50	38.	गीता	फरवरी/31
39.	उत्तराध्ययन सूत्र	मार्च/11	40.	आचारांग सूत्र	अप्रेल/49
41.	आचारांग सूत्र	मार्च/10	42.	उत्तराध्ययन सूत्र	फरवरी/5
43.	चाणक्य नीति	मार्च/7	44.	सूत्रकृतांग सूत्र	अप्रेल/40
45.	आचारांग सूत्र	फरवरी/4			

46. तं इक्कगं तुच्छसरीरगं से, चिईगयं दहिय उ पावगेणं।। फरवरी/11
47. सव्वेसु कामजाएसु, पासमाणो न लिप्पई ताई।। मार्च/11
48. अह संति सुव्वया साहू, जो तरंति अतरं वणिया व।। मार्च/11
49. चरित्त पज्जवे विसोहेत्ता, अहक्खाय चरित्तं विसोहेइ।। अप्रेल/11
50. न तस्स दुक्खं विभयंति नाइओ, न मित्तवग्गा, न सुया, न बंधवा।। फरवरी/11

–नमन सुमतिचन्द मेहता, पीपाड़ (राज.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (39)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग तीन-सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह बारहवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 अगस्त 2013 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *पूर्णिमा लोढ़ा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-3)

(पृष्ठ सं.702 से 760 तक से प्रश्न)

प्रश्नों के उत्तर 'म' अक्षर से शुरू करें:-

1. अल्लट की महारानी.....हथूंड़ी राजवंश की राजकुमारी थी।
2. जो वाद.....के नाम से प्रसिद्ध है।
3. हेत्वाभावों से तुम्हारी.....भ्रान्त हो जायेगी।
4. ..... फल्गुमित्र के स्वर्गस्थ हो जाने पर दशाश्रुतस्कन्ध का ह्रास हो जायेगा।
5. रामसेन.....प्रदेश के दिगम्बर परम्पराओं में बड़े ही लोकप्रिय थे।
6. मैं धर्माभास के.....क्रोड़ में पड़ा हुआ हूँ।
7. आज का दिन वस्तुतः मेरे लिये ..... शुभ दिन है।
8. यह मेरे .....का ही फल है।
9. तुम्हारी ..... माता के तुम नयनतारे हो।
10. ..... उसके साथ एक ओर एकान्त स्थान में गये।

11. दोनों भाइयों की श्रीमन्तों के साथ-साथ ..... में गणना की जाती थी।
12. सिद्ध के मस्तिष्क में ..... उत्पन्न हो गया।
13. उसका मन..... हो मुदित हो उठा।
14. चेलध्वज का लघुभ्राता और स्वयं .....चिह्नांकित पताका वाला था।
15. परिग्रह का परित्याग कर ..... से जीवन निर्वाह करना।
16. धनपाल ..... के सत्यपुर नामक नगर में पहुँचा।
17. आप जैसे उदारमना ..... का आशीर्वाद कोई फल ले आये।
18. बालसखाओं के .....को तत्काल सदा-सदा के लिए धो डाला।
19. आचार्य ने 'ज्वालामालिनी' नामक एक ..... की रचना की।
20. ..... पर छाया हुआ मिथ्यात्व का कोहरा तत्क्षण समाप्त हो गया।

रिक्त स्थानों की पूर्ति 'ल' अक्षर से करें:-

21. सिद्धर्षि की कीर्ति पताका आध्यात्मिक क्षितिज में ..... रहेगी।
22. अपने..... सहोदर के मुख से उपदेशों को सुनते ही बोधबीज अंकुरित हो उठा।
23. युवक सिद्ध में महान् प्रभावक के सभी .....दृष्टिगोचर हुए।
24. रचित .....वृत्ति सिद्ध के हाथ पर रखते हुए कहा।
25. अमिट ..... उनके अन्तर्मन में उद्भूत हुई।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (37) का परिणाम

जिनवाणी मई, 2013 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 179 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- विभा जैन-गुमानपुरा-कोटा (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- सरला शान्तिलाल जी कांकरिया-जलगांव (महा.)

तृतीय पुरस्कार- शकुन्तला कुशलचन्द जी खिंवसरा-अमलनेर, जलगांव(महा.)

सान्त्वना पुरस्कार (5)- सुनन्दा सुभाषचन्द लोढ़ा-धुलिया (महा.), सम्पत खेरडा-अजमेर (राज.), कुसुम लक्ष्मीलाल कटारिया-नालासोपारा (पूर्व), थाणे (महा), पारसचन्द जैन-मौहल्ला गोपालगढ़, भरतपुर(राज.), विमलाबाई मिश्रीलाल खिंवसरा-धुलिया (महा.)

सूचना:- प्रतिभागियों को सूचित किया जाता है कि वे अपने अंक जानने के लिए अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा (09829019396) अथवा महासचिव श्रीमती बीना जी मेहता (09772793625) से सम्पर्क करें।

समाचार-विविधा

पोरवाल क्षेत्र की असीम पुण्यवानी : उपकृत कर रही पूज्यप्रवर की अमृतवाणी

आगममर्मज्ञ, जिनशासन गौरव, जन-जन की आस्था के केन्द्र परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा जब से नगरपालिका क्षेत्र सवाईमाधोपुर में पधारे हैं, तब से धर्माराधना का पावन प्रसंग बना हुआ है। परम कृपालु आचार्यप्रवर ने आवासन मण्डल, केशवनगर, आदर्शनगर, गौतम कॉलोनी को पदरज से पावन किया है तथा सम्प्रति (2 जुलाई) बजरिया के स्वाध्याय भवन में विराज रहे हैं। अपने आराध्य गुरुदेव के दर्शन-वन्दन हेतु सुदूर एवं समीपस्थ क्षेत्रों से श्रद्धालुओं का आवागमन बना हुआ है।

2 जून 2013 को राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय श्री अशोक जी गहलोत, भारत सरकार के राज्य मंत्री श्री नमोनारायण जी मीणा एवं मंत्री श्री अशोक जी बैरवा ने प्रातः 10.45 बजे आवासन मण्डल, सवाईमाधोपुर में पूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि का लाभ लिया एवं धर्मचर्चा की। 6 जून को सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 5 का मण्डावर के लक्ष्य से विहार हुआ। 7 जून को आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, चौथ का बरवाड़ा से 35 बालक/बालिका शिक्षकों के मार्गदर्शन में गुरुदेव की पावन सन्निधि में आए एवं सामूहिक रूप से सामायिक-साधना का सुन्दर रूप प्रस्तुत किया। 11 जून को वीरभ्राता श्री किरण जी मेहता अलवर से पैदल चलकर अपनी मनोगत भावना को अभिव्यक्त करने हेतु पूज्य श्री की सेवा में पधारे। इसी दिन पूर्व संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, बैंगलोर संघ के अध्यक्ष श्री यशवन्त राज जी सांखला, सेवाभावी श्री धनरूपचन्द जी मेहता सेवा में पधारे। 8 से 12 जून तक शिक्षक-स्वाध्यायियों का शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 70 शिक्षकों ने सहभागिता की। 8 जून को ही हैदराबाद से छाजेड़ व दफ्तरी परिवार ने गुरुदेव के दर्शन-प्रवचन का लाभ लिया। 12 मई को व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा का विहार जयपुर की ओर हुआ।

13 जून को आवासन-मण्डल से विहार कर आचार्यप्रवर केशव नगर स्थित आनन्द पब्लिक स्कूल पधारे। यहाँ मुम्बई के श्रेष्ठी श्री पारसचन्द जी हीरावत, चेन्नई से श्री उम्मेदराज जी हुण्डीवाल, युवक परिषद् के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री विक्रम जी बाघमार ने गुरुदर्शन एवं धर्माराधन का लाभ लिया। पूज्यप्रवर यहाँ से 14 जून को विहार कर आदर्श

नगर पधारे। 16 जून को अहमदाबाद से पधारे युवक परिषद् के पदाधिकारियों ने सेवा का लाभ लिया। 20 जून को संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री पी.शिखरमल जी सुराणा, उनके सुपुत्र श्री विनोद जी सुराणा आदि उपस्थित हुए। क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्री रतनचन्द जी म.सा. का 168 वां पुण्य स्मृति दिवस 22 जून को सामूहिक सामायिक-साधना एवं सामूहिक एकाशन तप के साथ मनाया गया।

गत माह यहाँ पर आचार्य देव की सेवा में देश के विभिन्न कोनों से संघ के पदाधिकारियों का आगमन हुआ। जिनमें युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र कुमार जी डागा-जयपुर ने अपनी टीम के साथ उपस्थित होकर ग्रीष्मकालीन शिविरों के अनुभव से पूज्य गुरुदेव को अवगत कराया। मई मास के अन्त में होलनांथा से सेठिया परिवार ने पूज्य गुरुदेव की सेवा में उपस्थित होकर धन्यता का अनुभव किया। श्री महेन्द्र जी बाघमार-चेन्नई, श्री गौतम जी सुराणा-जयपुर, श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा-जयपुर, आध्यात्मिक शिक्षा समिति के सह-संयोजक श्री विवेक जी लोढ़ा-जयपुर, संघ के राष्ट्रीय मंत्री श्री रूपकुमार जी चौपड़ा-पाली, श्री सुरेश जी भंसाली-मुम्बई, वीरभ्राता श्री नरेन्द्र जी कांकरिया-चेन्नई, श्री प्रतापसिंह जी लोढ़ा-जयपुर एवं उनका परिवार, श्री दिग्विजय जी कोठारी आदि ने गुरुदेव की सेवा में पधारकर धर्माराधन का लाभ लिया।

22 जून को आदर्श नगर से विहारकर पूज्य गुरुदेव गौतम कॉलोनी, बजरिया पधारे। 23 जून को पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा एवं शासन सेवा समिति के सह-संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत ने गुरुचरणों की सेवा का लाभ लिया। 25 जून को स्वाध्याय भवन, बजरिया में 217 वां क्रियोद्धारक दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया।

उल्लेखनीय है कि 26 जून को बजरिया वासियों की भावना फलीभूत हुई और पूज्य गुरुदेव गौतम कॉलोनी से विहारकर स्वाध्याय भवन पधारे। पूज्यप्रवर 15 मई की दीक्षा के समय बजरिया की बाल मन्दिर कॉलोनी में विराजे थे, किन्तु नूतन स्वाध्याय भवन में 26 जून को प्रथम पदार्पण हुआ। श्रद्धालुओं के जयघोष से अपूर्व उत्साह एवं हर्ष का अनुभव हो रहा था।

आचार्यप्रवर 19 दिन आवासन मण्डल में, एक दिन केशवनगर में, नौ दिन आदर्श नगर में तथा तीन दिन गौतम कॉलोनी में विराजे। सम्प्रति स्वाध्याय-भवन, बजरिया विराज रहे हैं। ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की आराधना निरन्तर चल रही है। प्रवासकाल में पधारे सभी दर्शनार्थी बन्धुओं की वात्सल्य-सेवा का लाभ वहाँ-वहाँ के स्थानीय संघों ने प्रमोद एवं उल्लास भाव से लिया।

उपाध्यायप्रवर का प्रभावकारी प्रवास एवं विहार यात्रा

शान्त-दान्त-गंभीर पं. रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 का जोधपुर प्रवास अत्यन्त प्रभावक रहा। आपके सान्निध्य में अनेक श्रावक श्राविकाओं ने दर्शन-लाभ लेकर प्रवचनों के माध्यम से प्रेरणा ग्रहण की। श्रद्धेय श्री जितेन्द्र मुनि जी म.सा. का स्वास्थ्य अनुकूल होने एवं परमपूज्य आचार्यप्रवर के श्रीमुख से उपाध्यायप्रवर के वर्षावास की घोषणा कोसाना संघ के लिए होने के पश्चात् उपाध्यायप्रवर अपनी संत मण्डली के साथ 30 मई को जोधपुर के शक्तिनगर से बनाड की ओर विहार कर गए। आपश्री डांगियावास एवं पालासनी क्षेत्र में धर्म जागरण करते हुए 20 जून को पीपाड़ पधारे। यहाँ पर आपका लगभग 300 श्रावक-श्राविकाओं की जय-जयकार के साथ मंगल-प्रवेश हुआ। 22 जून को परम प्रतापी, कीर्ति-निस्पृह, रत्नसंघीय क्रियोद्धारक आचार्यप्रवर श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. का पुण्य दिवस प्रातःकालीन सामूहिक सामायिक साधना एवं सामूहिक एकाशन के साथ मनाया गया। सामूहिक सामायिक में 250 की उपस्थिति रही तथा 168 वें पुण्यदिवस पर 168 एकाशन किए गए। उपवास, तेला आदि तप का आराधन भी हुआ। बालक-बालिका दोपहर में विशेष ज्ञानाराधन कर लाभ ले रहे हैं।

रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम संवत् 2070, ईस्वी सन् 2013)

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा वि.सं. 2070 सन् 2013 हेतु साधु मर्यादानुसार घोषित चातुर्मासों का विवरण इस प्रकार है:-

(1) सवाईमाधोपुर (राज.)

- **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.**
- **महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.**
- **सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.**
- **श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.**
- **श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.**
- **श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.**
- **श्रद्धेय श्री आशीषमुनि जी म.सा. ठाणा 7**

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, शहर सवाईमाधोपुर-322021 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री राधेश्यामजी गोटेवाला, मैसर्स राधेश्याम पदमचन्द जैन गोटेवाला, पुराना खण्डार रोड़, सवाईमाधोपुर-322001 (राज.), फोनः 07462-233550,233140, 94618-63233, 94604-41570
2. श्री रामदयालजी सर्राफ, मो. 94144-04042
3. श्री बाबूलालजी जैन (समीधी वाले)-अध्यक्ष, फोनः 07462-234249 (नि.) मो. 95302-78502
4. श्री पारसचन्दजी जैन-मंत्री, फोनः 07462-233922 (का.) 234977 (नि.) 94130-23430
5. श्री सुबाहुकुमारजी जैन, पूर्व अध्यक्ष, फोनः 07462-223461(नि.) 094139-24700

आवागमन के साधन- सवाईमाधोपुर भारत के प्रमुख शहरों से रेल एवं बस से जुड़ा हुआ शहर है। महावीर भवन मुख्य रेलवे स्टेशन बजरिया से 6 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(2) कोसाना, जिला-जोधपुर (राज.)

- **卐 परम श्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.**
- **卐 मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.**
- **卐 श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनिजी म.सा.**
- **卐 श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.**
- **卐 श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ठाणा 5**

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, अहिंसा नगरी, कोसाना, जिला-जोधपुर (राज.)

कार्यालय सम्पर्क सूत्र- 07742100191, 07742100325 (मो.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री जी. गणपतराज जी बाघमार, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पो. कोसाना, वाया-पीपाड़, जिला-जोधपुर-342601 (राज.), मो. 093810-04293
2. श्री लीलमचन्द जी बाघमार, मंत्री, मो. 096607-07771
3. श्री आर. पदमचन्द जी बाघमार, कार्याध्यक्ष, मो. 094440-77990
4. श्री टी. महावीरचन्द जी नाहर, कार्याध्यक्ष, मो. 098415-93993

आवागमन के साधन- जोधपुर से पीपाड़ होते हुए कोसाना जाने के लिए बस सेवा उपलब्ध है। नजदीक का रेलवे स्टेशन जोधपुर-मेड़ता रोड़ एवं गोटन है। कोसाना जोधपुर से 80 कि.मी. मेड़ता रोड़ से 55 कि.मी., गोटन से 30 कि.मी. एवं पीपाड़ से कोसाना 15 किमी. की दूरी पर स्थित है। पीपाड़शहर में भी ठहरने की व्यवस्था है।

(3) मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राज.)

- 卐 तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री सुभाषमुनि जी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक, ओसवाली मौहल्ला, मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुरेन्द्रकुमार जी सखलेचा, संरक्षक, मो. 99295-91180
2. श्री राजेन्द्रकुमार जी डांगी, अध्यक्ष, डांगी भवन, ओसवाली मौहल्ला, पो. मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर-305801 (राज.), फोनः 01463-242086 (नि.), 094140-12286 (मो.)
3. श्री महेन्द्रकुमार जी मेहता, मंत्री, फोनः 01463-242532, मो. 092140-60558, 98282-60558
4. श्री भागचन्द जी कोचेटा, प्रवक्ता, मो. 97992-99746

आवागमन के साधन- दिल्ली-अहमदाबाद मुख्य मार्ग पर प्रमुख रेलवे स्टेशन है। अजमेर से 27 किमी. व जयपुर से 100 किमी. दूरी पर स्थित है। नियमित रेल व बस सुविधा अजमेर, जयपुर से उपलब्ध है। ठहरने आदि की व्यवस्था महावीर भवन में है।

(4) शक्तिनगर, जोधपुर (राज.)

- 卐 साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.
- 卐 तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री शशिकलाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री उषाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा. ठाणा 8

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर छट्ठी गली, पावटा 'सी' रोड़, जोधपुर-342006 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र -

1. श्री धनपतचन्द जी सेठिया- अध्यक्ष, फोन नं. 0291-2624558, 98290-22472

2. श्री सुभाषचन्द जी हुण्डीवाल-मंत्री, डी-5, रामनगर, प्रथम रोड़, भदवासिया, जोधपुर-342006 (राज.) मो. 94605-51096
3. श्री महावीरचन्द जी बोथरा, संयोजक, फोनः 0291-2547658, मो. 98285-82391
4. श्री अमरचन्द जी चौधरी 'ए.सी.', फोनः 0291-2573164, मो.: 94141-30024

आवागमन के साधन- जोधपुर रेल, सड़क एवं हवाई मार्ग से देशभर से जुड़ा हुआ है। शक्तिनगर छट्ठी गली स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन मुख्य रेलवे स्टेशन से 5 किमी. व राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से 3 किमी. की दूरी पर स्थित है।

(5) सवाईमाधोपुर (राज.)

- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा.
- व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा.
- महासती श्री पुष्पलताजी म.सा.
- महासती श्री स्नेहलताजी म.सा.
- महासती श्री मंजूलताजी म.सा.
- महासती श्री चैतन्यप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री मैत्रीप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री सुदर्शनाजी म.सा. ठाणा 10

चातुर्मास-स्थल-समता भवन, गुरुद्वारा रोड़, शहर सवाईमाधोपुर-322021 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र- क्रम संख्या 1 के अनुसार

आवागमन के साधन- क्रम संख्या 1 के अनुसार

(6) खेरलीगंज, जिला-अलवर (राज.)

- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.
- महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री रक्षिताजी म.सा.
- महासती श्री पूनमजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, शिव मैरिज होम के पास, वार्ड नं. 2, खेरली (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री रामबाबू जी जैन (दातियां वाले), अध्यक्ष, मो. 092141-52601
2. श्री महेन्द्र जी जैन (भनोखर वाले), मंत्री, वार्ड नं.8, गांधी पार्क के पास, पो.खेरली-321606, जिला-अलवर (राज.), मो. 94144-83185
3. श्री विपिन जी जैन, अध्यक्ष-युवक परिषद्, मो. 098280-19271
4. श्री सौरभजी जैन, मो. 092523-43459

आवागमन के साधन- खेरली जयपुर-आगरा रेलवे लाइन पर स्थित है। जयपुर से बस सेवा उपलब्ध है। जयपुर-आगरा हाईवे पर खेरली मोड़ उतरकर खेरली पहुँचा जा सकता है। अलवर से खेरली 90 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(7) भरतपुर (राज.)

- **विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.**
- **महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा.**
- **महासती श्री शारदाजी म.सा.**
- **महासती श्री लीलाकंवरजी म.सा.**
- **महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ठाणा 5**

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, बासन गेट, भरतपुर-321001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धर्मेन्द्र कुमार जी जैन, अध्यक्ष-बासनगेट, कोटिया निवास, पाईबाग, भरतपुर-321001 (राज), मो. 94140-23534
2. श्री सुमेरचन्द जी जैन, मो. 093145-37204
3. श्री अशोक जी जैन, कोषाध्यक्ष, मो. 094143-76868
4. श्री प्रेमचन्द जी जैन, अध्यक्ष-गोपालगढ़, मो. 094139-16043
5. श्री पारस जी जैन, गोपालगढ़, मो. 094617-18005

आवागमन के साधन- दिल्ली-मुम्बई एवं आगरा-जयपुर रेलवे लाइन पर स्थित है। राजस्थान के प्रमुख शहरों से बस सेवा उपलब्ध है।

(8) जामोला, जिला-अजमेर (राज.)

- **व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.**
- **महासती श्री कौशल्याजी म.सा.**
- **महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. ठाणा 3**

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, जामोला (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री घेवरचन्दजी बम्ब, अध्यक्ष, फोनः 01462-264114
2. श्री धनराजजी बम्ब, मंत्री, पो. जामोला-305623, तह.मसूदा, जिला-अजमेर (राज.)
3. श्री धर्मीचन्दजी बम्ब, मो. 082900-00304

आवागमन के साधन- अजमेर जिलान्तर्गत जामोला वाया मसूदा एवं बांदनवाड़ा होकर पहुँचा जा सकता है। अजमेर, ब्यावर, विजयनगर आदि से नियमित रूप से बस सेवाएँ उपलब्ध हैं। जामोला अजमेर से 50 किमी., ब्यावर से 35 किमी, मसूदा से 12 किमी, बान्दनवाड़ा से 12 किमी, विजयनगर से 35 किमी. की दूरी पर स्थित है।

(9) गुलाबपुरा, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा.
- सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा.
- महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री परागप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री ऋद्धिप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक, सदर बाजार, पो. गुलाबपुरा (राज.)

विशेष- सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा. आदि ठाणा 3 पर्युषण पर्यन्त ग्राम हुरडा विराजें, ऐसी सम्भावना है।

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री भीमसिंहजी संचेती, अध्यक्ष, फोनः 01483-223167(का.), 223005 (नि.), मो. 094141-13651
2. श्री सुमेरचन्दजी छाजेड़ 'एडवोकेट', मंत्री, राजस्थान गेस्ट हाउस, पो. गुलाबपुरा-311021, जिला-भीलवाड़ा (राज.) फोनः01483-223207(नि.), मो.094601-04297

आवागमन के साधन - भीलवाड़ा जिलान्तर्गत गुलाबपुरा अजमेर-खण्डवा रेल मार्ग पर स्थित है। गुलाबपुरा के लिए अजमेर-भीलवाड़ा मार्ग पर संचालित बसों का नियमित आवागमन है। स्थानक बस स्टेण्ड के पास में ही है।

(10) मानसरोवर, जयपुर (राज.)

- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री प्रभावतीजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री पद्मावती पोरवाल जैन समिति, 107, सिद्धार्थ मार्ग, गौरी विहार, धन्वन्तरी हॉस्पिटल के सामने, न्यू सांगानेर रोड़, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

1. श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन, अध्यक्ष, 44/203, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.), फोनः 0141-2786890 (नि.), 098293-00138 (मो.)
2. श्री सुधीरजी जैन, मंत्री, फोनः 0141-2762308 (नि.), 094136-78334 (मो.)
3. श्री अभिनन्दन जी जैन, मो. 094149-56883

आवागमन के साधन- जयपुर रेलवे स्टेशन से मानसरोवर 13 कि.मी., दुर्गापुरा स्टेशन से 6 कि.मी., गांधीनगर से 8 कि.मी., सिन्धी केम्प बस स्टेण्ड से 13 किमी. व नारायणसिंह सर्किल से 10 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

(11) पीपाड़शहर, जिला-जोधपुर (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.

卐 महासती श्री देवांगनाजी म.सा.

卐 महासती श्री सुभद्राजी म.सा.

卐 महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री वर्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत स्वाध्याय भवन, पीपाड़ शहर (राज.)

1. श्री धनेन्द्रजी चौधरी, अध्यक्ष, चौपाटा बाजार, पीपाड़शहर-342601, जिला-जोधपुर (राज.), फोनः 02930-233243, 094144-62677 (मो.)
2. श्री परेशजी मूथा, मंत्री, फोनः 02930-233055, 213500, 094146-01639 (मो.)
3. श्री सुमतिचन्दजी मेहता, फोनः 02930-233069, 94144-62729 (मो.)

आवागमन के साधन- जोधपुर जिलान्तर्गत पीपाड़शहर जोधपुर, मेड़तासिटी, अजमेर, जयपुर, बिलाड़ा, पाली, ब्यावर जैसे समीपवर्ती शहरों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। जोधपुर से पीपाड़ शहर के लिए हर आधे घंटे के अन्तराल पर रोड़वेज एवं प्राइवेट बसें उपलब्ध रहती हैं।

(12) अयनावरम-चेन्नई (तमिलनाडु)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.

卐 महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा

- 卐 महासती श्री संगीताजी म.सा
- 卐 महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा
- 卐 महासती श्री भविताश्रीजी म.सा
- 卐 नवदीक्षिता महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- Indraprasth Villa, 24, Maattu Street, Ayanavaram, Chennai-600023 (T.N.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री इन्दरचन्दजी सुराणा, अध्यक्ष, 16, Somasundaram, 6th Street, Ayanavaram, Chennai-600023, Ph. (044) 26445148 (M) 098400-17748
2. श्री महावीरचन्दजी सिसोदिया, महामंत्री, फोनः (044) 26744489 (M) 098845-99275
3. श्री भंवरलालजी राठौड़, उपाध्यक्ष, फोनः 044-26748999, मो. 094440-77591

आवास-निवास-

1. श्री सुरेशचन्दजी सुराणा, संयोजक, फोनः (044) 026442633 (M.) 098406-00711
2. श्री दिनेशचन्दजी सुराणा, अध्यक्ष-युवक संघ, मो. 094440-06070

आवागमन के साधन - चेन्नई पूरे भारतवर्ष से रेल, बस, हवाई सेवा से जुड़ा हुआ शहर है। चेन्नई रेलवे स्टेशन से अयनावरम् 12 किमी. दूरी पर स्थित है। चेन्नई से लोकल बस द्वारा अयनावरम् पहुँचा जा सकता है।

(13) आवड़ी-चेन्नई (तमिलनाडु)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा
- 卐 महासती श्री भावनाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री प्रीतिश्रीजी म.सा.
- 卐 महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- S.S.Jain Bhawan, No. 54,Thirumallai Rajpuram, Behind Avadi Railway Station, Near Jain Temple, Chennai-600054 (T.N.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री झूमरलालजी बोहरा, अध्यक्ष, फोनः (044) 265512366 (M.) 09043332581
2. श्री झूमरलालजी कवाड़, मंत्री, No. 52, Nehru Bazar, Avadi, Chennai-600054 (T.N.), Ph. (044) 26550819 (M.) 09444527809
3. श्री मदनलालजी बोहरा, संयोजक, फोनः (044) 26550087 (O) 26555516 (R)

09443690912 (M.)

4. श्री हीराचन्दजी रांका, उपाध्यक्ष, फोनः (044) 26555361 (M.) 09841211709
5. श्री गौतमचन्दजी कवाड़, फोनः (044) 26553145 (M.) 09444054522

आवागमन के साधन – चेन्नई उपनगरीय रेलवे स्टेशन से आवड़ी 25 किमी. दूरी पर स्थित है। प्रत्येक 10 मिनट में लोकल ट्रेन निकलती है। उपनगरीय रेल से लगभग 1 घंटे में पहुँचा जा सकता है।

(14) निफाड़, जिला-नासिक (महा.)

- **卐 व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.**
- **卐 महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.**
- **卐 महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा.**
- **卐 महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा.**
- **卐 महासती श्री दीपिकाश्रीजी म.सा. ठाणा 5**

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान जैन स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, भगवान महावीर मार्ग, मामलेदार चौक, पोस्ट-निफाड़-422303, जिला-नाशिक (महा.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री बाबूलालजी मोतीलालजी बाघमार, अध्यक्ष, फोनः 02550-242258 (का.), 241058 (नि.), मो. 09860671571
2. श्री सुगनचन्दजी पन्नालालजी रूणवाल, उपाध्यक्ष, मो. 09403160239
3. श्री नन्दलालजी दलीचन्दजी चोरड़िया, महामंत्री, फोनः 02550-241127, 09822171827 (मो.)
4. श्री अशोकजी बंशीलालजी कर्नावट, फोनः 02550-242697, 240497, 9767924232
5. श्री महेशजी जवरीलाल जी बाफना, फोनः 02550-241569 (का.), 098507-78257
6. सौ. रेखाजी अशोक जी बोहरा, फोनः 093707-48780 (मो.)

आवागमन के साधन- मुम्बई-भुसावल मध्य रेलवे लाइन पर निफाड़ रेलवे स्टेशन स्थित है। निफाड़ रेलवे स्टेशन से निफाड़ स्थानक 4 किमी. दूरी पर स्थित है। बस द्वारा नासिक से वाया चांदेरी 40 किमी., येवला से 45 किमी., लासलगांव से 18 किमी. तथा मुम्बई आगरा हाईवे पर स्थित पिपलगांव बसवंत से 18 किमी. दूरी पर स्थित है। निफाड़ बस स्टेण्ड से स्थानक 1 किमी. दूरी पर स्थित है।

(15) नदबई, जिला-भरतपुर (राज.)

- **卐 व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.**

- 卐 महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, जैन गली, कटरा, नदबई (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री पदमचन्दजी जैन, अध्यक्ष, मो. 098874-69215
2. श्री नरेशचन्दजी जैन, मंत्री, मो. 09460912255
3. श्री मनीष जी जैन, अध्यक्ष-युवक परिषद्, मो. 098752-223568
4. श्री सचिन जी जैन, कार्याध्यक्ष-युवक परिषद्, मो. 094142-79091
5. श्री ज्ञानचन्द जी जैन, , सिन्धी कॉलोनी, कटरा, पो. नदबई, जिला-भरतपुर-321602 (राज.), मो. 09413243541

आवागमन के साधन- नदबई जोधपुर, जयपुर, आगरा, भरतपुर रेलवे लाइन पर स्थित है। नदबई जयपुर से 150 किमी., आगरा से 85 किमी. दूरी पर स्थित है। बस मार्ग द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग 11 पर आगरा-जयपुर हाइवे पर डहरा मोड़ से 10 किमी. है। भरतपुर से नियमित बस सेवा उपलब्ध है।

(16) बीकानेर (राज.)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री अंजनाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री तितिक्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- सुराणा सामायिक-स्वाध्याय भवन, गोड़ सभा भवन के पास, रानी बाजार, बीकानेर-334001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री इन्दरमलजी सुराणा, फोनः 0151-2542168,2520754, (मो.) 09414452218
2. श्री नवीनजी डागा, "सौभाग्य" सी-7, सार्दुलगंज, बीकानेर-334001 (राज.), फोनः 0151-2205797 (का.), 2207797 (नि.), (मो.) 09829250797
3. श्री महेन्द्र जी सुराणा, मो. 094131-06724

आवागमन के साधन- देश के चारों महानगरों से तथा राजस्थान के प्रमुख शहरों से रेल या बस सेवा उपलब्ध है।

(17) मण्डावर, जिला-दौसा (राज.)

- 卐 सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री यशप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री आनंदप्रभाजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- आराधना भवन, एस.बी.बी.जे. बैंक के पीछे, मण्डावर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री अशोक जी जैन, पूर्वमंत्री, मो. 09950612020
2. श्री किशनचन्दजी जैन, मो. 09587811126
3. श्री अशोकजी जैन, मंत्री, मैसर्स छाजूराम रामस्वरूप जैन, पो. मण्डावर-321609, महुआ रोड़, जिला-दौसा (राज.), फोनः 07461-260250, मो.9314148539
4. श्री संजयजी जैन वीर भ्राता,संयोजक, मो. 9928711159

आवागमन के साधन- मण्डावर महुआ रोड़ रेलवे स्टेशन जयपुर-आगरा फोर्ट के मध्य स्थित है। दोनों ओर से लगभग 120 किमी. की दूरी है। जयपुर एवं आगरा से सीधी ट्रेन है। बस द्वारा 135 किमी दूरी पर है। हिण्डौनसिटी से 52 किमी., अलवर से 65 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

(18) पाली-मारवाड़ (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा

卐 महासती श्री निरजंनाजी म.सा.

卐 महासती श्री कान्ताजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, पुरानी धान मण्डी के पास, सुराणा मार्केट, पाली-306401 (राज.),फोन नं. 02932-250021, 206146, 094610-16028

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री ताराचन्दजी सिंघवी, मंत्री, फोनः02932-222005 (नि.)
2. श्री रूपकुमारजी चौपड़ा, अध्यक्ष, बी-60, केशरकुंज, वीर दुर्गादास नगर, पाली-306401 (राज.), फोनः 02932-220603, 9414122304

आवागमन के साधन- जयपुर, जोधपुर, अजमेर, कोटा, अहमदाबाद, सूरत आदि स्थानों से सीधी बस सेवाएँ उपलब्ध हैं। जोधपुर-अहमदाबाद रेलवे ट्रेक पर स्थित पाली रेलवे स्टेशन पर सभी गाड़ियों का ठहराव है। सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराना मार्केट रेलवे स्टेशन से 3 किमी., नये बस स्टेण्ड से 1.5 किमी. एवं पुराने बस स्टेण्ड से आधा किमी. की दूरी पर स्थित है।

(19) प्रतापनगर, सांगानेर, जयपुर (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.

- 卐 महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा.
- 卐 नवदीक्षिता महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा.
- 卐 नवदीक्षिता महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5

चातुर्मास स्थल- श्री श्वे. जैन रत्न स्वाध्याय भवन, सेक्टर-6, गुलाब विहार के पास, श्योपुर रोड़, प्रतापनगर, टोंक रोड़, सांगानेर, जयपुर (राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री महेन्द्रकुमारजी आंचलिया, चातुर्मास संयोजक, फोनः 0141-2101046, मो. 9829260873
2. श्री रमेशलालजी जैन, अध्यक्ष, फोनः 0141-2549573, 9414352201
3. श्री सुशीलकुमारजी जैन, मंत्री, 34/222, सेक्टर 3, प्रतापनगर, सांगानेर, जयपुर-302011 (राज.), फोनः 9413023374, 7792002455 (मो.)

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल मुख्य रेलवे स्टेशन से 17 किमी., दुर्गापुरा स्टेशन से 8 किमी. तथा गांधीनगर स्टेशन से 10 किमी., सिन्धी केम्प से 18 किमी. व नारायणसिंह सर्किल से 12 किमी. की दूरी पर स्थित है।

अन्य प्रमुख चातुर्मास

दिल्ली-	आचार्य (डॉ.) श्री शिवमुनि जी म.सा.
मैसूर (कर्नाटक)-	आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.
राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)-	गच्छाधिपति श्री प्रकाशमुनि जी म.सा.
चामराज पेट (बैंगलूरु)-	आचार्य श्री विजयराज जी म.सा.
गणेशबाग (बैंगलूरु)-	आचार्य श्री ज्ञानचन्द्र जी म.सा.
इचलकरंजी (महाराष्ट्र)-	आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा.
भीलवाड़ा (राज.)-	वरिष्ठ प्रवर्तक श्री रूपचन्द जी म.सा. 'रजत'
सूरत (गुजरात)-	उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी 'शास्त्री'

श्राविका मण्डल द्वारा सितम्बर में आध्यात्मिक शिविर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 20 से 22 सितम्बर, 2013 तक सवाईमाधोपुर में जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया जाएगा। शिविर में अधिक से अधिक बहिनें भाग लेकर अपने ज्ञान की अभिवृद्धि करें।

बनें आगम अध्येता

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में आगम अध्येता श्रावक-श्राविकाएँ तैयार करने हेतु श्राविका मण्डल द्वारा आगम स्वाध्याय का अनुष्ठान बने, इस हेतु 'बनें आगम अध्येता' योजना प्रारम्भ की गई है, जिसमें श्रावक-श्राविका दोनों भाग ले सकते हैं तथा स्वाध्याय हेतु सन्त-सतीवृन्द भी भाग ले सकते हैं। आगम अध्येता योजना में प्रथम क्रम में दशवैकालिक सूत्र को रखा गया है। **आवेदन पत्र का प्रारूप जिनवाणी के माह मई, 2013 के अंक में पूर्ण जानकारी सहित प्रकाशित किया गया है।** प्रतियोगिता हेतु आवेदन-पत्र पूर्ण कर भिजवाने की अन्तिम तिथि 15 जुलाई, 2013 रखी गई है। आवेदन-पत्र प्राप्त होने पर आपके पोस्टल पते या मेल पते पर 100-100 अंकों के दो मूल्यांकन प्रश्न-पत्र 25 जुलाई, 2013 तक पहुँच जायेंगे। जिनमें प्रथम मूल्यांकन प्रश्न-पत्र अध्ययन 1 से 5 तथा द्वितीय मूल्यांकन प्रश्न-पत्र अध्ययन 6 से 10 पर आधारित होगा। आपको प्रथम मूल्यांकन प्रश्न-पत्र के उत्तर 31 अगस्त, 2013 तक तथा द्वितीय मूल्याकंन प्रश्न-पत्रों के उत्तर 15 अक्टूबर, 2013 तक घर से लिखकर प्रेषित करने हैं। दशवैकालिक सूत्र के सम्पूर्ण 1 से 10 अध्ययनों की समापक परीक्षा 14 नवम्बर, 2013 को आपके वहाँ स्थानीय स्थानकों में परीक्षकों की उपस्थिति में आयोजित होगी। यह परीक्षा 80 अंक की होगी। परीक्षा में आप पुस्तक भी साथ रख सकते हैं।

'बनें आगम अध्येता' प्रतियोगिता से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी अपेक्षित हो तो आप सुज्ञ श्राविका डॉ. मंजुला बम्ब-09314292229, श्रीमती बीना मेहता महासचिव, जोधपुर-09772793625, श्रीमती तृप्ति सिंघवी-09828341834, श्रीमती चन्द्रा हीरावत-09610357011, सौ. संगीता बोहरा,चेन्नई-09444322714, सौ. विजया मल्हारा, जलगाँव-0257-2223223 से सम्पर्क कर सकते हैं। फार्म भरकर स्वीकृति प्राप्त करने वाले श्रावक-श्राविकाएँ ही परीक्षा देने के अधिकारी रहेंगे।

पत्राचार का पता: श्रीमती पूर्णिमा लोढा, अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, ए-8, महावीर नगर, जयपुर(राजस्थान) फोन नं. 09829019396

चतुर्थ वीतराग ध्यान शिविर 20 सितम्बर से

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 50 वें दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के अन्तर्गत चतुर्थ वीतराग ध्यान साधना शिविर का 20 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2013 तक मदनगंज-किशनगढ में आयोजन किया जा रहा है। शिविर में भाग लेने के इच्छुक साधक पधारने के पूर्व स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर लें। बिना स्वीकृति के आने वाले भाई-बहन शिविर में भाग नहीं ले सकेंगे। सम्पर्क सूत्र- श्रीमती शान्ता जी मोदी,

जयपुर- 093144-70972 , अन्य मोबाइल नं. 080039-37301

उल्लेखनीय है कि द्वितीय वीतराग ध्यान-साधना शिविर जलगांव में 8 से 19 जून 2013 तक ध्यान शिक्षिका नेहा जी चोरडिया के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ, जिसमें 39 शिविरार्थियों ने भाग लिया। तृतीय वीतराग ध्यान-साधना शिविर 22 जून से 3 जुलाई 2013 तक विजयनगर में तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। शिविर में 113 साधकों ने ध्यान-साधना का अभ्यास किया। शिविर में बैंगलोर, चेन्नई, जलगांव, जयपुर, किशनगढ़, सिरपुर, विजयनगर, गुलाबपुरा, बीकानेर आदि स्थानों के श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। विजयनगर के श्री वर्द्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ की सेवाएँ अनुकरणीय रहीं।

गुजरात क्षेत्र में प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा आध्यात्मिक प्रचार कार्यक्रम दिनांक 21 एवं 22 जून 2013 तक गुजरात क्षेत्र में आयोजित किया गया। उक्त प्रचार कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेशजी भण्डारी-जोधपुर, राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार प्रभारी श्री लल्लूलालजी जैन-सवाईमाधोपुर, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री राकेशजी समदड़िया-चिखली तथा स्वाध्याय संघ के कार्यालय प्रभारी श्री कमलेशजी मेहता-जोधपुर की महनीय सेवाएं प्राप्त हुईं। प्रचार कार्यक्रम गुजरात क्षेत्र के वलसाड़, चिखली, चलथान, नवसारी, बारडोली, बुहारी, व्यारा, हलोल में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में पर्युषण पर्वाराधना में स्वाध्यायी बुलाने की पुरजोर प्रेरणा की गई, जिसके फलस्वरूप 2 मांगें प्राप्त हुईं। नये स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा से लगभग 10 महानुभावों ने स्वाध्यायी सदस्यता ग्रहण की तथा पुराने स्वाध्यायियों की पर्युषण-सेवा स्वीकृति भी प्राप्त की गई। सभी स्थानों पर बालक-बालिकाओं हेतु रविवारीय संस्कार शिविरों की प्रेरणा की गई तथा चल रहे शिविरों की समीक्षा की गई। शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा की जानकारी देते हुए नये केन्द्र प्रारम्भ किए गए तथा फार्म भरवाए गए। *-कुशलचन्द जैन गोटेवाला, संयोजक*

जोधपुर एवं जयपुर में ग्रीष्मकालीन शिविर सम्पन्न

जोधपुर- रत्नसंघ का युवा संगठन श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर विगत 19 वर्षों से धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर आयोजित कर बच्चों में जैन धर्म की जानकारी के साथ ही संस्कारों की शिक्षा भी अनवरत रूप से प्रदान करता आ रहा है। इस वर्ष 26 मई से 09 जून तक घोड़ों का चौक, सिंहपोल, नेहरु पार्क, प्रतापनगर, हाउसिंग बोर्ड, गुलाब नगर, सरस्वती नगर, पावटा, शक्तिनगर तथा गोल्फ कोर्स- इन 10 केन्द्रों पर शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 1200 शिविराथियों ने भाग लिया। सभी बच्चों को 1 से 7

कक्षाओं में वर्गीकृत कर 120 अनुभवी अध्यापकों ने अध्ययन करवाया। सभी केन्द्रों पर शिशु शिविरार्थियों के अध्ययन की अलग से व्यवस्था की गई, जिनकी संख्या लगभग 350 थी। 7 जून को मूल्यांकन हेतु परीक्षा आयोजित की गई।

शिविर का समापन कार्यक्रम 9 जून को ओसवाल कम्युनिटी हॉल, सरदारपुरा में आयोजित हुआ। समापन समारोह में साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. ने महती कृपा कर महासतीवृन्द को विशेष प्रेरणा हेतु भेजा। महासतीवृन्द ने प्रवचन में सर्वप्रथम बच्चों को सीखे हुए ज्ञान का पुनः-पुनः दोहरान करने की प्रेरणा की।

प्रवचन पश्चात् आयोजित समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना तथा सम्माननीय अतिथि- वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री शांतिलाल जी चौपड़ा सहित अनेक श्रावकरत्नों ने बालकों का उत्साहवर्धन किया। युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री विनोद जी मेहता ने अतिथियों एवं समागतों का वचसा स्वागत किया। मुख्य शिविर संयोजक श्री नवरतन जी डागा ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

18 दिन चले इस शिविर में बच्चों ने क्या ज्ञानार्जन किया, इसकी झलक विभिन्न केन्द्रों के छोटे-बड़े बच्चों ने सामायिक, प्रतिक्रमण के पाठ, 25 बोलों में से कुछ बोल, भक्तामर के श्लोक, भजन एवं छः संदेशपरक नाटिकाएँ प्रस्तुत की। शिविर का सफल संयोजन सभी केन्द्रों के शिविर संयोजकों, सह-संयोजकों, अध्यापकों एवं कार्यकर्ताओं के सक्रिय सहयोग से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। *-नवरतन डागा, शिविर संयोजक*

जयपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के सत्प्रयत्नों से ग्रीष्मकालीन 21 वां धार्मिक शिक्षण शिविर उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। यह शिविर 12 मई से 09 जून तक सांगानेरी गेट स्थित सुबोध स्कूल एवं 19 मई से 09 जून तक महावीर नगर, मालवीय नगर, जवाहर नगर, श्याम नगर, नित्यानन्द नगर, झोटवाड़ा, लालकोठी, मानसरोवर एवं प्रताप नगर (सांगानेर)- इन कुल दस स्थानों पर बच्चों में संस्कार निर्माण हेतु आयोजित हुआ। 700 बालक-बालिकाओं ने शिविर में भाग लेकर अनुभवी अध्यापकों द्वारा धार्मिक, नैतिक एवं संस्कार निर्माण से सम्बन्धित शिक्षा प्राप्त की।

7 से 9 बजे के दौरान चलने वाले इस शिविर का प्रारम्भ सामूहिक प्रार्थना से होता था तथा नैतिक मूल्यों के विकास हेतु प्रतिदिन एक कथा सुनाई जाती थी। जैन ध्वज और जैन प्रतीक चिह्न की जानकारी दी गई एवं बच्चों द्वारा जैन ध्वज स्वरचित विचारों सहित चित्रित किये गए। श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार कक्षा एक से सातवीं तक अध्ययन कराया गया। शिविर में अनेक बच्चों ने सामायिक और प्रतिक्रमण

कण्ठस्थ किए। बच्चों के बौद्धिक एवं मानसिक विकास हेतु भजन एवं ''टी.वी.- बच्चों के लिए मजा या सजा'', ''आधुनिक शिक्षा से जीवन-निर्माण'' और ''महत्त्वपूर्ण क्या-पैसा या व्यवहार'' विषयों पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अर्जित ज्ञान के मूल्यांकन हेतु 9 जून को परीक्षा आयोजित की गई। 8 जून को शिशु कक्षा के बच्चों की मौखिक परीक्षा ली गई। 9 जून को व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. की प्रेरणा से 60 बालकों ने आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 51 वें दीक्षा-दिवस तक प्रतिक्रमण तथा 100 बच्चों ने इस तिथि तक सम्पूर्ण सामायिक पाठ याद करने का संकल्प लिया। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा देने हेतु 225 बच्चों ने परीक्षा फार्म भरे। शिविर के सफल संचालन हेतु क्षेत्रीय संयोजकों का पूर्ण सहयोग एवं पदाधिकारियों का परामर्श प्राप्त हुआ। आचार्यश्री की प्रेरणा से परिषद् द्वारा नये छः स्थानों पर वर्ष भर रविवारीय शिविर लगाने का भी फैसला किया गया।

14 जुलाई को सुबोध पब्लिक स्कूल, रामबाग सर्किल में शिविर का पुरस्कार वितरण एवं गुणीजन सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा।

-मनीष मुणोत, शाखा सचिव

जबलपुर में 'समयदेशना' पर संगोष्ठी सम्पन्न

दिगम्बर आचार्य विशुद्धसागर जी के सान्निध्य में 12 से 14 जून 2013 तक 'समयदेशना' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। 'समयदेशना' में आचार्य श्री द्वारा 'समयसार' पर किए गए तात्त्विक प्रवचनों का संकलन है। संगोष्ठी का संयोजन डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत ने किया तथा संगोष्ठी में लगभग 35 विद्वानों ने भाग लिया। जिनवाणी सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन ने 'जीव की एकत्वानुभूति का दौर्लभ्य' विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।

सौ. सिंधूताई को आचार्य हस्ती अहिंसा अवार्ड

महाराष्ट्र की सुविख्यात समाजसेविका, सप्तशताधिक पुरस्कारों से सम्मानित सौ. सिंधूताई सपकाल को रतनलाल सी. बाफणा फाउण्डेशन ट्रस्ट की ओर से आचार्य हस्ती अहिंसा अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें अनाथ बच्चों की सेवा और सम्बल देने के अभूतपूर्व कार्य हेतु दिया गया है।। 30 जून 2013 को आयोजित समारोह में यह अवार्ड दिया गया। अवार्ड के रूप में स्मृति चिह्न और 1 लाख रुपये की राशि भेंट की गई।

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- साध्वीप्रमुखा, शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. एवं तत्त्वचिन्तिका श्री रतनकंवर जी म.सा. के सान्निध्य में 15 से 19 जून तक पावटा क्षेत्र में महिलाओं का धार्मिक शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 250 शिविरार्थी महिलाओं ने भाग लिया। पहली कक्षा से नवमी कक्षा तक का अध्ययन योग्य एवं अनुभवी अध्यापकों द्वारा करवाया गया। महासतियाँ जी ने भी शिविरार्थियों को अध्यापन करवाया, जिससे सबको आनन्दानुभूति हुई। -*सुषमा सिंघवी, अध्यक्ष*

हिण्डौन- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में 18 मई से 2 जून तक ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित हुआ। शिविर काल में महासती मण्डल के द्वारा नूतन प्रेरणाएँ दी गई एवं व्रत-प्रत्याख्यान कराए गए। 1 जून को बालक मण्डल एवं बालिका मण्डल की स्थापना हुई। महासतीवर्या ने दोनों मण्डलों को रविवार के दिन स्थानक में सामायिक-स्वाध्याय करने की प्रेरणा प्रदान की। सभी महासतियाँ जी के एकान्तर उपवास तप चल रहा है।

भोपालगढ़- महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. के सान्निध्य में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा 17 से 22 जून तक छः दिवसीय धार्मिक शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें 40 बच्चों ने भाग लिया। महिला मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती कंचन जी मेहता का विशेष सहयोग रहा तथा श्रीमती पद्मकला जी, राजुल जी, सुमन जी ने अपनी सेवाएँ दीं।

निफाड़- आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 ग्रामानुग्राम धर्म प्रभावना करते हुए नासिक रोड़, दलनगर आदि को फरसते हुए नासिक पधारे। नासिक के द्वारका आदि उपनगरों एवं मार्गवर्ती ग्रामों को लाभान्वित करते हुए 28 मई को सुकेणा पहुँचे। यहाँ से पीपल गाँव बसवन्त होते हुए चातुर्मासार्थ निफाड़ की ओर विहार चल रहा है।

अलवर- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 जब यहाँ फाल्गुनी चातुर्मास पर पधारे तब महावीर भवन में एकाशन, उपवास, बेले, तेले, अट्ठाई एवं नौ की तपस्याएँ 108 के लगभग हुईं। इस अवसर पर महासती चेतना जी म.सा. आदि ठाणा का भी पदार्पण हुआ एवं प्रवचन साथ में हुए। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के जन्म-दिवस को अलवर के उपनगर काला कुँआ में तप-त्याग के साथ मनाया गया। इस अवसर पर 51 उपवास एवं एकाशन हुए तथा श्री प्रेमचन्द जी एवं श्रीमती सूरजदेवी ने आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया।

मुम्बई- रविवार 19 मई 2013 को मई माह में उपस्थित हुए तीन प्रसंगों- 1. पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की 22वीं पुण्य तिथि, 2. उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के संयमी जीवन के इक्यानवें वर्ष में प्रवेश, 3. आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 23 वें आचार्यपद ग्रहण दिवस के उपलक्ष्य में विर्लेपार्ले में स्थित स्वाध्याय भवन में तीन सामूहिक सामायिक की साधना की गई एवं महापुरुषों का गुणगान किया गया। सर्वप्रथम भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक गान किया गया। श्री लक्ष्मीचन्द जी बड़ोला एवं श्री आनन्दराज जी तलेसरा ने तीनों महापुरुषों के त्यागमय जीवन पर प्रकाश डाला। श्री कपूरचन्द जी जैन एवं श्रीमती पूर्णिमा जी भंसाली ने मधुर स्वरों में सुन्दर भजन प्रस्तुत किये। मुम्बई श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी हीरावत एवं मुम्बई युवक संघ प्रमुख श्री शेखर जी भण्डारी ने सम्पूर्ण वर्षभर में किये जाने वाले धार्मिक आयोजनों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन श्री बंसत जी जैन ने एवं आभार श्री गौतम जी मेहता ने प्रस्तुत किया।

इन्दौर- पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की स्मृति में आयोजित 22 वें पुण्य स्मरण समारोह में श्री कमलमुनि 'कमलेश' ने महावीर भवन में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य हस्तीमल जी म.सा. सरलता, विनम्रता की प्रतिमूर्ति थे। आचार्य श्री ने सामायिक और स्वाध्याय के द्वारा जन-जन को कल्याण का मार्ग बताया। उन्होंने कहा कि सामायिक से समत्व की साधना और स्वाध्याय से विचारों की शुद्धि होती है। महापुरुष किसी एक सम्प्रदाय के नहीं होते वरन् सम्पूर्ण मानवता के होते हैं। महापुरुषों के गुणगान करने एवं उनके बताए हुए मार्ग पर चलने से हम भी उनके जैसे बन सकते हैं। मुनिश्री ने खाद्य पदार्थ में पॉलीथिन का प्रयोग न करने की प्रेरणा दी। पंजाब शिरोमणि महासती श्री ममता जी म.सा. की सुशिष्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। महासती श्री मंगलप्रभा जी ने स्वाध्याय को श्रेष्ठतम बताते हुए 15 मिनिट स्वाध्याय करने की प्रेरणा की। श्री हस्तीमल जी झेलावत ने कहा कि आचार्य श्री ने हमें सामायिक से तनाव मुक्ति एवं स्वाध्याय से निज को जानने का मार्ग बताया है। श्री मोहनलाल पीपाड़ा ने बताया कि युवापीढ़ी में सुसंस्कार प्रदान करने हेतु आचार्यश्री की प्रेरणा से स्थापित "श्री महावीर जैन स्वाध्याय शाला" विगत 26 वर्षों से निरन्तर चल रही है, जिसमें सैकड़ों बच्चे प्रतिदिन संस्कार ग्रहण कर रहे हैं। श्री जिनेश्वर जैन, श्री अभिषेक जैन, श्री पूनमचन्द जी भण्डारी ने भी आचार्यश्री के जीवन-दर्शन पर विचार व्यक्त किए। श्री अशोक जी मण्डलिक ने कार्यक्रम का संचालन किया।

उदयपुर- आत्मार्थी प्रबल पुरुषार्थी उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का

51 वां दीक्षा दिवस वैशाख शुक्ला त्रयोदशी 23 मई को तप-त्याग पूर्वक मनाया गया। शाखा की मंत्री श्रीमती माया जी कुम्भट आदि श्राविकाओं ने "मुनिवर मान महान् है" गीत की प्रस्तुति दी। शाखा-अध्यक्ष प्रो. चाँदमल जी कर्णावट ने उपाध्याय श्री के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डाला। उपस्थित सदस्यों में से कुछ ने नवकारसी व्रत अंगीकार किया तो अन्यों ने नमस्कार मंत्र का स्मरण करके भोजनादि ग्रहण करने का नियम लिया। सभी उपस्थित सदस्य संवर व्रत में रहे।

नई दिल्ली- श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, कुतुब सांस्थानिक एरिया, नई दिल्ली द्वारा जैन दर्शन विषय में शास्त्री (B.A.), आचार्य (M.A.) तथा पी-एच्. डी. करवाई जाती है। इच्छुक छात्र वेबसाइट से फार्म भर सकते हैं। सम्पर्क सूत्रः- प्रो. वीरसागर जैन-09868888607, www.slbsrsv.co.in

इन्दौर- श्रमणसंघीय प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में 20 मई 2013 को सुश्री मंजु बहन बावलेचा की भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। दीक्षोपरान्त उनका नाम 'निलेशप्रभा जी' रखा गया।

बीकानेर- मारवाड़ी, गुजराती और पंजाबी ओसवाल समाज के योग्य वर-वधू ढूंढने के लिए बीकानेर मातृ मंगल प्रतिष्ठान द्वारा www.oswal.jainmarriage.org वेबसाइट प्रारम्भ की गई है।

अहमदाबाद- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की पावन प्रेरणा से 1 से 5 मई तक शाहीबाग, अहमदाबाद में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में ज्ञान शिविर का आयोजन किया गया। 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक आयोजित शिविर में धार्मिक शिक्षण के अलावा जीवन-उपयोगी विषयों पर शिक्षा भी दी गई। शिविर में 215 बच्चों ने भाग लिया तथा 20-21 शिक्षिकाओं ने अध्यापन किया। इस शिविर को सफल बनाने में युवावर्ग का विशेष रूप से सहयोग रहा तथा मुख्य रूप से श्री पदमचन्द जी कोठारी एवं श्री महावीर जी मेहता की सेवाएँ अति सराहनीय रहीं। इस शिविर में बच्चों ने सामायिक, प्रतिक्रमण, थोकड़े इत्यादि स्मरण किये। साथ ही समय-प्रबन्धन, जीवन-पद्धति, संस्कार, व्यक्तित्व-विकास आदि विषयों पर विद्वानों के विशेष व्याख्यान हुए। नैतिक शिक्षा भी दी गई तथा परीक्षोपरान्त बालकों को पुरस्कृत किया गया। समापन शिविर में चन्दनबाला एवं नवकार मंत्र पर नाटिका प्रस्तुत की गई। रत्नसंघ परिवारों का सामूहिक मिलन भी रखा गया। श्री पदमचन्द जी कोठारी, श्री छोगालाल जी बाघमार एवं श्रीमती निर्मला जी गाँधी को कर्णावतीरत्न के रूप में स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया।

जोधपुर- जैन समाज की सेवा में कार्यरत अनेक संस्थाओं द्वारा होटलों-रेस्टोरेण्टों में बैठक आयोजित करना, वहाँ पर भोजन रखना, रात्रि भोजन एवं जमीकन्दों का प्रयोग करना, पर्व तिथियों को नजरअंदाज करना आदि प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिल रहा है, जो धार्मिक मान्यताओं को ठेस पहुँचाने वाले हैं। इस संबंध में जन-जागृति लाने के उद्देश्य से सभी जैन संस्थाओं से विनम्र अनुरोध है-

1. सभी कार्यक्रम-आयोजन आडम्बर रहित तथा समाज के भवनों में हों, होटल, रेस्टोरेंट, गार्डन, रिसोर्ट में नहीं।
2. विभिन्न अवसरों पर आयोजित अल्पाहार, प्रीतिभोज केवल दिन में ही हों। रात्रि भोजन, जमीकंद का उपयोग पूर्ण रूप से निषिद्ध हो। पर्व तिथियों पर सचित्त का त्याग रखा जाए। जूठा न डाला जाए तथा व्यंजन सीमित मात्रा में हों।
3. बड़ी तिथियों अष्टमी व चतुर्दशी को कोई भी आयोजन न हो।
4. कार्यक्रमों में अशोभनीय वस्त्र धारण न करें। अभद्र भाषा का प्रयोग न करें। सभी वक्ताओं की भावनाएँ शांतिपूर्वक सुनें-मनन करें तथा धार्मिक नियमों-मान्यताओं के अनुसार ही निर्णय करें। स्वार्थ रहित तथा समाज हित को सर्वोपरि रखकर लिए गए निर्णय ही समाज के लिये उपयोगी होते हैं।
5. विवादित विषयों एवं जानकारी के अभाव वाले विषयों पर समाज के अनुभवी बुजुर्गों, विद्वान् मुनिराजों से सलाह अवश्य लेनी चाहिए।

-संघवी मिट्ठूलाल डागा, ओसवाल महिमा

चेन्नई- मेट्रो महावीर क्लब द्वारा वर्ष 2012-2013 में 2650 लोगों के ऑपरेशन करवाकर नेत्रों में ज्योति प्रदान की गई। महावीर क्लब द्वारा 6 जगह (गुमण्डीपुण्डी, एम.के.बी. नगर, पेरम्बुर, आर.वाई.ए. ओटेरी, चित्तूर एवं तिरुपति) मासिक कैम्प एवं दो अथवा तीन मेगा कैम्पों का आयोजन किया जाता है। इन कैम्पों का आयोजन तमिलनाडु के अलावा आन्ध्रप्रदेश राज्य के विभिन्न शहरों में भी किया जाता है।

अहमदाबाद- श्री वीर संघ, अहमदाबाद द्वारा निम्नांकित विषयों पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है- 1. हमारा राष्ट्रीय चरित्र : समस्या और समाधान, 2. दाम्पत्य जीवन में बढ़ती कटुता : कारण और समाधान, 3. बच्चों में बढ़ती संस्कारहीनता, उद्दण्डता, आक्रामकता : कारण और समाधान। किसी एक में, दो में या तीनों में आप भाग ले सकते हैं। निबन्ध एक हजार शब्दों में लिखित होना चाहिए तथा ईमेल एवं प्रिन्ट कॉपी भिजवाना आवश्यक है। कृष्णा, कृतिदेव, चाणक्य या मंगल फोण्ट में टाइप्ड कम्प्यूटर प्रति अपने फोटो सहित भिजवाएँ। तीनों विषयों के लिए पृथक्-पृथक् पुरस्कार हैं- प्रथम पुरस्कार- 2000 रुपये, द्वितीय पुरस्कार- 1000 रुपये और तृतीय पुरस्कार-

500 रुपये। प्रविष्टियाँ भेजने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2013 है। पता- श्री शान्तिकुमार कोठारी, बी-1, विजय टॉवर, कांकरिया रोड, कांकरिया पुलिस चौकी के सामने, अहमदाबाद-380022, Email-veersangh@gmail.com अथवा veersangh@rediffmail.com

जोधपुर- श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी, जोधपुर एवं श्री मोहनलाल जी जीवराज जी जीरावला, लक्ष्मीनगर, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर 20 जून, 2013 को आयोजित किया गया। शिविर में अनुभवी एवं ख्याति प्राप्त सर्जन डॉ. राम गोयल एम.एस. (कमला नगर अस्पताल) तथा सर्जन डॉ. गोपालचन्द गाँधी एम.एस. द्वारा हर्निया के 13, हाइड्रोसिल 1, पाइल्स 5, शिष्ट 2, इस प्रकार कुल 21 ऑपरेशन किये गये। ऑपरेशन के पश्चात् मरीजों को निःशुल्क दवाइयाँ उपलब्ध कराई गई। आगामी निःशुल्क शिविर 20 सितम्बर, 2013 को आयोजित किया जायेगा।

-पूरणराज अबानी, अध्यक्ष

बधाई

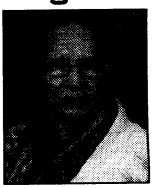

जोधपुर- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की पूर्व अध्यक्ष एवं आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की पूर्व संयोजक श्राविकारत्न श्रीमती सुशीला बोहरा को भगवान महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई द्वारा 16 वें महावीर अवार्ड से सम्मानित किया गया। मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत होकर दृष्टिहीनों, मूकबधिरों, निःशक्तजनों, अनाथ एवं पीड़ित तथा कमजोर महिलाओं को शिक्षा एवं स्वरोजगार से आत्मनिर्भर बनाने आदि उत्कृष्ट समाज-सेवा के कार्यों हेतु उन्हें दिल्ली के विज्ञान भवन में महामहिम उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी के कर कमलों से अवार्ड के रूप में 10 लाख की राशि का चैक, प्रशस्ति पत्र तथा स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

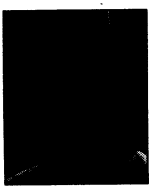

जोधपुर- श्री रौनक मेहता सुपुत्र श्रीमती स्नेहलता-रमेश जी मेहता (सुपौत्र श्रीमती कान कंवरजी-विजयमल जी मेहता) ने IIT JEE (Advance) 2013 की परीक्षा AIR 1434 के साथ प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की। आपने सी.बी.एस.ई की बारहवीं की परीक्षा में 94.6 प्रतिशत अंक अर्जित किए।

जोधपुर- पद्मावती इन्फ्रा डेवलपर्स के निदेशक श्री नरेश जी बोथरा को 21 मई 2013 को 15 वें राजीव गाँधी एनुअल ग्लोबल ऐक्सीलेन्सी अवार्ड से पुरस्कृत किया गया। यह अवार्ड उत्तराखण्ड गवर्नर व केबिनेट मंत्रीं द्वारा दिया गया।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- धर्मपरायणा तपस्विनी सुश्राविका श्रीमती शांतिदेवी जी कांकरिया धर्मपत्नी श्री

पदमचन्द जी कांकरिया (भोपालगढ़) का 8 जून, 2013 को स्वर्गगमन हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। संघ-सेवा एवं स्वधर्मि-वात्सल्य के साथ आप सदैव संत-सतियों की सेवा में आगे रहती थीं। आप महासती सौभाग्यवती जी म.सा. की सांसारिक भाभी थीं। आपकी दो छोटी बहनें भी दीक्षित हैं तथा भुआजी भी तेरापंथ में दीक्षित हैं।

चेन्नई- उदारहृदय, समाजसेवी, कर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री भंवरलाल जी चौधरी सुपुत्र श्री

भैरूलाल जी चौधरी (पीपाड़ निवासी) का 87 वर्ष की आयु में 22 जून, 2013 को देवलोकगमन हो गया। सादा जीवन उच्च विचार के धनी श्री चौधरी जी की रत्नसंघ के संत-सतियों के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में चौधरी परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराज जी चौधरी के आप अग्रज थे।

कंवलियास (भीलवाड़ा)- सरलहृदया सुश्राविका श्रीमती नाथी बाई धर्मपत्नी स्व. श्री जंवरीलाल जी का आकस्मिक निधन 4 मई, 2013 को हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक-प्रतिक्रमण के साथ त्याग-प्रत्याख्यान करती थीं। आपका जीवन सरल व त्यागमय था, आप अपने पीछे सुसंस्कारित परिवार छोड़ कर गई हैं, आपके सुपुत्र श्री कंवरलाल जी आचार्य श्री हीराचन्द जी म.सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रमुख श्रावक हैं।

जयपुर- वात्सल्यमयी सुश्राविका श्रीमती प्रेमलता जी जैन धर्मपत्नी डॉ. सम्पतराज जी जैन (पूर्व प्राचार्य सुबोध महाविद्यालय तथा स्टेट सेक्रेटरी स्काउट एवं गाइड) का 19 जून, 2013 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आप शान्त, मिलनसार, सहनशील एवं धार्मिक स्वभाववाली, उदारहृदया श्राविका थीं।

यवतमाल- सुश्रावक श्री रतनचन्द जी बुंदेला सुपुत्र स्व. श्री फूलचन्द जी बुन्देला(पीपाड़ निवासी) का स्वर्गगमन 12 मई, 2013 को 71 वर्ष की वय में हो गया। आप जैन सेवा समिति, यवतमाल के पूर्व कोषाध्यक्ष रहे हैं।

अजमेर- तपाराधिका सुश्राविका सूर्या (रूपा) धर्मपत्नी श्री राजकुमारजी दोशी का 5 मई 2013 को देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी, संघ-समर्पित एवं धार्मिक विचारों की धनी थीं। आप सदैव समाज की गतिविधियों में तन-मन-धन से सहयोग हेतु तत्पर रहती थीं। तपस्विनी श्राविका की भावना के अनुरूप मरणोपरान्त नेत्रदान किए गए।

जोधपुर- समाजसेवी सुश्रावक श्री मोतीलाल जी गुलेच्छा सुपुत्र स्व. श्री मुन्नीलाल जी

गुलेच्छा का 12 जून 2013 को 83 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आप सरल, मिलनसार एवं सामाजिक व धार्मिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। चक्षु-चिकित्सा सेवा समिति में अध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष पदों पर रहकर आपने सेवायें प्रदान कीं। आप वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ में सक्रिय कार्यकारिणी सदस्य थे।

चेन्नई- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती बादामबाई बांठिया धर्मपत्नी श्री लालचंदजी बांठिया का 13 मई, 2013 को 94 वर्ष की आयु में सागारी संथारे सहित स्वर्गवास हो गया। आप सरल स्वभावी, शांतिप्रिय, मृदुभाषी एवं वात्सल्य-मूर्ति थीं। आप नियमित सामायिक करती थीं तथा अठाई आदि की तपस्या भी आपने की।

गंगापुर सिटी- श्री योगेश जैन सुपुत्र श्री ओमप्रकाश जी जैन का 17 जून 2013 को छत से गिरने के कारण स्वर्गवास हो गया। आप महासती श्री मुक्तिप्रभा जी के सांसारिक भतीजे थे।

चेन्नई- श्री सोहनराज जी सुपुत्र श्री चुन्नीलाल जी खारीवाल (देवली) का 82 वर्ष की वय में 28 मई 2013 को परलोकगमन हो गया।

इचलकरंजी- धर्मसाधिका, सरल-हृदया, सेवामूर्ति सुश्राविका श्रीमती विद्यादेवी मेहता

धर्मपत्नी स्व. श्री धनराज जी मेहता (पीपाड़ सिटी) का 79 वर्ष की आयु में 28 मई 2013 को देवलोक गमन हो गया। आपका अधिकांश समय सामायिक आराधना में व्यतीत होता था। आपकी इच्छा अनुसार दूसरे दिन नवकार मंत्र के जाप का कार्यक्रम रखा गया। आप सेवा, दान आदि कार्यों में सदैव अग्रसर रहती थीं।

दिल्ली- वीर पिता दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी सुश्रावक श्री शिखरचन्द जी जैन (एलम वाले) का 76 वर्ष की अवस्था में 18 जून, 2013 को सागारी संथारे सहित समाधि भावों में मरण हो गया। आप ज्ञानगच्छ में दीक्षित पूज्या श्री सुषमा जी म.सा. के सांसारिक पिताजी थे। आप प्रतिदिन 5-6 सामायिक करते थे। आपके कई वर्षों से ब्रह्मचर्य पालन, रात्रि चौविहार-त्याग, जमीकन्द त्याग एवं कच्चे पानी के त्याग थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

प्राकृत का अध्ययन विद्यालयों से हो प्रारम्भ

प्राकृत भाषा जन भाषा है, इस भाषा में रचित साहित्य लोक जीवन एवं सांस्कृतिक-नैतिक मूल्यों की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। आज जितना ध्यान सरकार के द्वारा संस्कृत भाषा पर दिया जा रहा है, उसका शतांश भी प्राकृत भाषा के अध्ययन-अध्यापन पर नहीं दिया जा रहा है। यह आम बोलचाल की भाषा रही है, इसी से भारत की अनेक भाषाओं और बोलियों का विकास हुआ है। विश्व शान्ति एवं जीवन-निर्माण के सूत्र इस साहित्य में उपलब्ध हैं। अपने आत्मिक उत्थान के लिए इस भाषा को सीखना आवश्यक है, किन्तु दुर्भाग्यवश कहीं संसाधनों की कमी है तो कहीं विद्वानों की कमी। इसकी पूर्ति एवं पुनर्जीवन के लिए प्राकृत भाषा को प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है।

वर्तमान व्यवस्था में कक्षा छः से संस्कृत का अध्ययन कराया जाता है, इसी तरह प्राकृत भाषा का भी अध्यापन वैकल्पिक विषय के रूप में प्रारम्भ करने की आवश्यकता है। कोई विद्यार्थी संस्कृत के स्थान पर प्राकृत भाषा को ऐच्छिक विषय के रूप में लेना चाहे तो उसकी समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। भारत में कई ऐसे राज्य हैं, जहाँ मराठी, कन्नड़ आदि प्रान्तीय भाषाएँ पढ़ना अनिवार्य है। जनप्रतिनिधियों से हमारी यह माँग है कि वे विकल्प रूप में विद्यार्थियों के हित को ध्यान में रखकर प्राकृत भाषा का भी अध्ययन प्रारम्भ करावें। जैन समाज प्राकृत के विषय पर एक है। राजस्थान के बजट में 2000 संस्कृत शिक्षक, उर्दू के 1000 व्याख्याता तथा मदरसों में 1500 शिक्षा-सहयोगी आदि की नियुक्ति का प्रावधान है। उसी क्रम में राजस्थान सरकार से निवेदन है कि प्रान्त में प्राकृत भाषा के शिक्षक नियुक्त हों तथा कक्षा 6 से 8 तक प्राकृत भाषा अनिवार्य तथा 9 से 12 ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाने की व्यवस्था की जाए।

-जितेन्द्रकुमार डागा, अध्यक्ष अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर (राज.)

उत्तराखण्ड में दिवंगतों को श्रद्धाञ्जलि

उत्तराखण्ड की देवभूमि के केदारनाथ, बदरीनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री, जोशीमठ आदि स्थानों में दिवंगत सभी महानुभावों को हार्दिक श्रद्धाञ्जलि तथा उनके शोक विह्वल परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए आत्मशान्ति की प्रार्थना करते हैं। **-जिनवाणी परिवार**

राजस्थान में प्राकृत भाषा के शिक्षकों की नियुक्ति हो

प्राकृत साहित्य किसी धर्म विशेष से ही सम्बन्धित नहीं है, अपितु यह प्राचीन जन साहित्य है, जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं एवं मानवीय मूल्यों की चर्चा है। यह साहित्य हमारी साहित्यिक, सांस्कृतिक धरोहर है, जिसका अध्ययन विद्यार्थी के जीवन में नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक है। महात्मा गाँधी ने जिन सन्तों और आगमों की भाषा से अहिंसा को राष्ट्रीय स्तर पर व्यावहारिक रूप में अपनाया, भगवान महावीर ने जिस भाषा का आश्रय लेकर आम जनता को जनकल्याण के उपदेश दिये, सम्राट् अशोक के स्तम्भ लेख तथा सम्राट् खारवेल के हाथीगुंफा शिलालेख जिस भाषा में उत्कीर्ण है, संस्कृत नाटकों के आम पात्रों की जो भाषा रही है, जिस भाषा के अध्ययन अध्यापन में जर्मन विद्वानों में हरमन याकोबी, विन्टरनिट्ज, पिशेल, शुब्रिंग आदि के नाम उल्लेखनीय हैं, ईसा से 600 वर्ष पूर्व से जिस भाषा का साहित्य उपलब्ध है- वह भाषा है प्राकृत भाषा।

यद्यपि कुछ वर्षों पूर्व राजस्थान सरकार ने माध्यमिक स्तर पर तृतीय भाषा के विकल्पों में संस्कृत, सिन्धी, उर्दू, गुजराती आदि भाषाओं के साथ प्राकृत भाषा को स्वीकृति दे रखी है, किन्तु राजस्थान में प्राकृत अध्यापन हेतु शिक्षक नियुक्त नहीं हैं। अतः राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री से यह अनुरोध किया जाना चाहिए कि राजस्थान में प्राकृत भाषा के शिक्षकों की नियुक्ति शीघ्र की जाए।

राजस्थान में प्राकृत भाषा विषय के अध्यापन हेतु सैंकड़ों योग्य शिक्षक उपलब्ध हो सकते हैं, जो बी.एड हैं और जिन्होंने उदयपुर, लाडनूँ, जयपुर, जोधपुर, कोटा आदि के विश्वविद्यालयों से स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है।

सम्प्रति वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा के सभी क्षेत्रीय केन्द्रों से प्राकृत भाषा में सर्टिकिकेट एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम स्वीकृत है। प्रायः चौदह वर्षों से यू.जी.सी. में प्राकृत विषय लेकर NET करने का प्रावधान है, जिसमें अब तक शताधिक छात्र उत्तीर्ण हुए हैं। प्राकृत अध्यापकों की नियुक्ति से हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति की जड़ें हरी-भरी हो सकती हैं।

अतः सैकेण्डरी कक्षाओं में तृतीय भाषा के लिए तथा सीनियर सैकेण्डरी कक्षाओं में ऐच्छिक विषय के लिए (जिला स्तर की एक-एक माध्यमिक उच्च माध्यमिक विद्यालयों) प्राकृत भाषा अध्यापकों की नियुक्ति आवश्यक है। भविष्य में आवश्यकता होने पर अधिक शिक्षकों की नियुक्ति की जा सकती है।

-डॉ. सुषमा सिंघवी, मा.निदेशक, प्राकृत भारती एकादमी

माँस-निर्यात नीति का करें विरोध

प्रसिद्ध जैनाचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरि जी म.सा. के सत्प्रयत्नों से भारत सरकार की सेक्स एज्यूकेशन पॉलिसी लागू न हो सकी। उनका यह प्रयास सम्पूर्ण भारत में सराहा गया। विगत दो वर्षों से आचार्य श्री भारत सरकार की माँस-निर्यात नीति का विरोध कर रहे हैं। सरकार के प्रोत्साहन के कारण भारत आज विश्व में माँस निर्यात के क्षेत्र में सबसे आगे है। विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए करोड़ों पशुओं का कत्ल करके माँस-निर्यात किया जाता है। अतः भारत का पशु-धन समाप्त हो रहा है। दूध, दही, घी आदि के दाम बढ़ रहे हैं। भारत की कृषि एवं किसानों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। माँस-निर्यात भारतीय संविधान एवं संस्कृति के विरुद्ध है।

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरि जी ने राज्यसभा में विचार हेतु एक निवेदन पत्र प्रस्तुत किया है कि भारत सरकार की माँस-निर्यात की पुनः समीक्षा की जाए। **राज्य-सभा ने उनके निवेदन-पत्र पर विचार करने के लिए दस सांसदों की समिति बनाई है।** यह निवेदन-पत्र समिति के विचाराधीन है। **समिति के सदस्यों ने आचार्यश्री के विचारों को सुना है।** इसी क्रम में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष एवं सुराणा एण्ड सुराणा एटोर्नीज के प्रमुख श्री पी. शिखरमल सुराणा को भी आचार्यश्री की अनुशंसा पर **समिति ने आमंत्रित कर उनके तर्कों को सुना है।** अब उक्त समिति ने इस विषय में अभिरुचि रखने वाले व्यक्तियों के विचार जानने की इच्छा की है। अतः अहिंसा के रक्षक महानुभावों से निवेदन है कि वे **अपने विचार हिन्दी या अंग्रेजी भाषा में 13 जुलाई 2013 तक ईमेल या पत्र द्वारा निम्नांकित पते पर प्रेषित करें**- श्री आर.पी. तिवारी, डिप्टी डायरेक्टर, राज्य सभा सचिवालय, पार्लियामेण्ट हाउस एनेक्सि, नई दिल्ली-110001,Email-rsc2pet@sansad.nic.in, Telefax-011-23794328, Telephone No.-011-23035577

माँस-निर्यात नीति के विरोध में जितने अधिक ज्ञापन-पत्र उपर्युक्त पते पर पहुँचेंगे उतनी ही अधिक संभावना है कि भारत सरकार को माँस निर्यात नीति पर पुनर्विचार करना पड़े। अहिंसा, दया, करुणा, मानव-आदर्श व संस्कृति-रक्षा की दिशा में आप अपना कर्तव्य जरूर निभाएँ। लिखित ज्ञापन-पत्र देने के बाद अगर आप व्यक्तिगत रूप से उस समिति के समक्ष उपस्थित होकर अपने विचार प्रस्तुत करना चाहें तो उसके लिए आवेदन कर सकते हैं। अगर समिति उपयुक्त समझेगी तो आपको आमंत्रित करके आपके विचार सुन सकती है। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की जिज्ञासा हो तो निम्नांकित पते पर सम्पर्क किया जा सकता है- P.S. SURANA, International Law Center, 61-63, Dr. Radhakrishana Road, Chennai-600004 (T.N.), Email-pss@lawindia.com, Mobile-09884430000

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मंडल के सत्साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

760 श्री नवीन्द्रजी मेहता, ई-33, मानसरोवर गॉर्डन, नई दिल्ली (दिल्ली)

1000/- जिनवाणी पत्रिका की 20 वर्षीय आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15059 से 15069 तक 11 सदस्य बने।

जिनवाणी हेतु साभार प्राप्त

51000/- श्री सम्पतराजजी चौधरी, दिल्ली, श्री अशोक जी, श्री बसंत जी चौधरी, चेन्नई, श्रावकरत्न श्री भंवरलाल जी चौधरी, चेन्नई का 22 जून, 2013 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

5100/- श्री राजेन्द्रजी चोरड़िया, बैंगलूरू, मातुश्री श्रीमती सरोजाबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री दशरथलालजी, पुत्रवधू श्री कनकराजजी चोरड़िया की पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री महावीरजी बोथरा, हर्षवर्द्धनजी ललवानी, गणपतजी चौपड़ा, प्रकाशजी चौपड़ा, राजेश जी चोरडिया, सुरेन्द्र जी कुम्भट, जोधपुर, उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-मुनिराजों के विहार में विहार सेवा का आनन्द प्राप्त होने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्रीमती उगम कंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री रतनचन्द जी बोथरा, जोधपुर, सुपौत्र नरेश जी बोथरा सुपुत्र श्री महावीरचन्द जी बोथरा को 'राजीव गाँधी एन्वल ग्लोबल एक्सीलेन्सी एवार्ड' से सम्मानित होने पर।

1500/- श्रीमती सुशीलाजी, श्री प्रदीपजी, श्री विजयजी बुन्देला,यवतमाल (महा.),श्री रतनलालजी बुन्देला का 12 मई, 2013 को स्वर्गवास होने पर पुण्य-स्मृति में।

1500/- श्रीमती सुशीलाजी, श्री प्रदीपजी, श्री विजयजी बुन्देला,यवतमाल (महा.), आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशती के उपलक्ष्य में।

1111/- श्री भँवरलालजी, राकेशजी, दीपकजी कुम्भट (जामोला वाले), जयपुर, श्रीमती प्रकाशदेवीजी कुम्भट के वर्षीतप का पारणा आचार्य भगवन्त की सेवा में करने एवं जामोला में सतीवृन्द के चातुर्मास के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री अनोखचन्दजी एवं श्रीमती लीलादेवीजी जैन (पचाला वाले), सवाईमाधोपुर, चि. शीतल (कपिल) का शुभविवाह सौ.कां. मीनाक्षीजी (मीनू) सुपुत्री श्रीमती बीना देवीजी-त्रिलोकचंदजी जैन, आलनपुर के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री कमलचन्दजी बैद, बरकतनगर-जयपुर, श्रीमती सुनीताजी बैद के वर्षीतप का पारणा सुख-साता पूर्वक सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री इन्दरचन्दजी, योगेशकुमारजी गाँधी, जोधपुर, सौ.कां. शिल्पा सुपुत्री श्रीमती शशिकला जी इन्दरचन्दजी गाँधी का शुभविवाह श्री पंकजजी मुथा, पाली के संग 2 मई, 2013 को सानन्द सम्पन्न होने एवं नवदम्पती द्वारा पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के 15 मई को दर्शनलाभ प्राप्त करने पर।

1100/- श्रीमती शशिकलाजी धर्मसहायिका स्व. श्रीमूलचन्दजी जैन, भरतपुर, सुपुत्री सौ.कां. प्रीति का शुभविवाह चि. गौरवजी सुपुत्र श्री देवेन्द्रमोहनजी जैन, सवाईमाधोपुर के संग 2 जून

2013 को सुसम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री रमेशचन्द जी, कान्तिलाल जी, लखनराजी, शान्तिलाल जी, विजयराजजी, ओमप्रकाश जी आंचलिया, शोरापुर, सुश्री शीतलजी आंचलिया की दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री धनरूपचंदजी, अमितकुमारजी मेहता (पीपाड़ वाले), बैंगलूरू, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के दर्शनलाभ प्राप्त करने की खुशी में।

1100/- श्री बांठिया परिवारजन, चेन्नई, सुश्राविका श्रीमती बादामदेवीजी धर्मसहायिका श्री लालचन्दजी बांठिया का 13 मई, 2013 को सागारी संथारे सहित देवलोक गमन होने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।

1100/- श्रीमती ललिता जी गांग धर्मपत्नी श्री महेन्द्रमल जी गांग, जोधपुर, अपने पौत्र अश्वी सुपुत्र प्रियदर्शनीजी-अभिषेक जी गांग के जन्म के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती किरणदेवी जी जैन, करौली, पतिदेव स्व. श्री अमीरचन्द जी जैन की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री सुनील जी, संजय जी जैन, जयपुर, मातुश्री श्रीमती प्रेमलता जी धर्मपत्नी डॉ. सम्पतराज जी जैन (जोधपुर निवासी-पूर्व प्राचार्य, सुबोध कॉलेज, जयपुर) का स्वर्गगमन 19 जून, 2013 को होने पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- श्री महेन्द्र जी, राजेन्द्र जी, डॉ. ललित जी, डॉ. सुशील जी जैन, जयपुर, पूज्या भाभी श्रीमती प्रेमलता जी धर्मपत्नी डॉ. सम्पतराज जी जैन (जोधपुर निवासी-पूर्व प्राचार्य, सुबोध कॉलेज, जयपुर) का स्वर्गगमन 19 जून, 2013 को होने पर उनकी पावन स्मृति में।

मंडल के सत्साहित्य प्रकाशन हेतु साभार प्राप्त

67000/- श्री अतिशजी पवनलालजी जैन, होलनांथा-शिरपुर, मंडल से प्रकाशित पुस्तक अंतगडदसा सूत्र के 18वें संस्करण के हेतु अर्थसहयोग।

44111/- श्री अतिशजी पवनलालजी जैन, होलनांथा-शिरपुर, नूतन सत्साहित्य "जैन आगमों में आहार" के प्रकाशनार्थ अर्थसहयोग।

30000/- श्री बसन्तीलालजी रंगलालजी डांगी, जामनेर, श्री पीरूलालजी डांगी की पुण्य-स्मृति में मंडल से प्रकाशित नवीन संस्करण "लोकाकाश : एक वैज्ञानिक अनुशीलन" के प्रकाशन हेतु अर्थसहयोग।

21000/- श्री धर्मेन्द्र कुमारजी जैन, भरतपुर, नूतन सत्साहित्य "गौतम से प्रभु फरमाते" के मुद्रण हेतु अर्थसहयोग।

3111/- श्री सुनील कुमारजी, भागचन्दजी चोरड़िया, मांडल, पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की दीक्षा अर्द्ध शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में सप्रेम।

आगामी पर्व

आषाढ शुक्ला 8, मंगलवार	16.07.2013	अष्टमी
आषाढ शुक्ला 14, रविवार	21.07.2013	चतुर्दशी
आषाढ शुक्ला 15, सोमवार	22.07.2013	पक्खी, चातुर्मास प्रारम्भ
श्रावण कृष्णा 8, मंगलवार	30.07.2013	अष्टमी, श्री नेमी जिन जन्म
श्रावण कृष्णा 14, सोमवार	05.08.2013	चतुर्दशी
श्रावण कृष्णा अमावस्या, मंगलवार	06.08.2013	पक्खी, आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. का 87 वां पुण्य स्मृति-दिवस
श्रावण शुक्ल 8, बुधवार	14.08.2013	अष्टमी

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 67 से भी अधिक वर्षो से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 02 से 09 सितम्बर 2013** तक रहेंगे। अत: देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **30 जुलाई 2013** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.....
   .....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं.....
   .....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
   .....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स- 2636763, मो.-94604-41570 (संयोजक), 94610-13878 (सचिव), 9460081112 (का. प्रभारी) ,ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।
– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :
C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है ।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

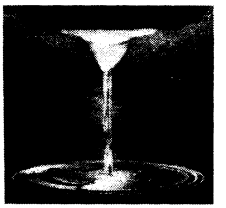

Electric Arc Furnace

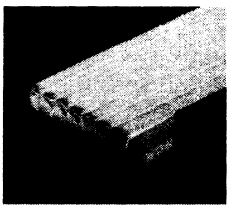

Billets

Rolling Mill

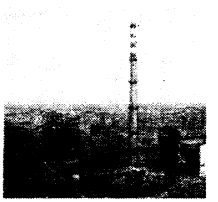

Captive Power Plant

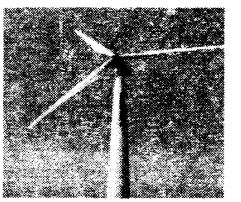

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(संरक्षक - अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

आदरणीय रत्नबंधुवर,

रत्न संघ के अष्टम् पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ, गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से गत सात वर्षों से युवारत्न छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्धि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना निरन्तर रूप से चल रही हैं। संघ द्वारा योजना का आगे विस्तार कर दिया गया है।

निवेदन है कि अपने परिवार में होने वाले खुशियों के दिवस विशेषों को मूर्त रूप देने के लिए छात्रवृत्ति येजना में रुपये 3000/-, 6000/- व 9000/- का अर्थ सहयोग करके दिवस विशेषों को चिरस्थायी बनायें एवं पुण्य कमायें।

आचार्य प्रवरपूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के शुभ अवसर पर छात्रवृत्ति योजना में 50,000/- रुपये या एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का अतिशीघ्र अर्थ सहयोग करावें।

ज्ञान का एक दीया जलाइये, सहयोग के लिए आगे आइए
दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में लाभ उठाकर आनन्द पाईये

अनन्य गुरुभक्त, जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते हैं, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है-

A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. - 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)
IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. AAATG1995J
Note : Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

अधिक जानकारी एवं सहयोग करने के लिए सम्पर्क करें-

Name	Place	Contact No.	Name	Place	Contact No.
Ashok Kavad	Chennai	9381041097	Sumatichand Mehta	Pipar	9414462729
Budhmal Bohra	Chennai	9444235065	Manoj Kankaria	Jodhpur	9414563597
Praveen Karnavat	Mumbai	9821055932	Kushalchand Jain	S. Madhopur	9460441570
Mahendra Bafna	Jalgaon	9422773411	Rajkumar Golecha	Pali	9829020742
Ravindra Jain	S.Madhopur	9413401835	Harish Kavad	Chennai	9500114455
Suresh Chordia	Chennai	9444028841	Jitendra Daga	Jaipur	9829011589
Vikram Bagmar	Chennai	9841090292	Sheryanch Mehta	Jodhpur	9799506999

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं भी अशान्ति नहीं हो सकती।

- आचार्य श्री हीरा

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

MAXHEAL

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं।
ये जीव साधक भी हो सकते है और श्रावक भी ।
- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from:

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जुलाई, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 07 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2013 ★ आषाढ़, 2070

Kalpataru
AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विनय चन्द डागा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर
से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित। सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन